रक्षामंत्री राजनाथ सिंह बोले-सेना और पुलिस का एक ही मिशन राष्ट्र की रक्षा करना
- 12

दिवाली पर 6.05 लाख करोड़ रुपये की हुई रिकॉर्ड बिक्री
- 12

रूस-यूक्रेन युद्धविराम के लिए ट्रंप के प्रस्ताव से यूरोपीय देश सहमत नहीं
- 13

पंत फिट, दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ भारत ए टीम की कप्तानी करेंगे
- 14

आज का मौसम

32.0° अधिकतम तापमान

20.0° न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.17

सूर्यास्त 05.36

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

बरेली

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा 08:17 उपरांत द्वितीया विक्रम संवत 2082

बुधवार, 22 अक्टूबर 2025, वर्ष 6, अंक 332, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

ब्रीफ न्यूज

रेलवे ने देश में स्थापित किए 80 वार रूम

नई दिल्ली। त्योहारी सीजन में ट्रेनों के सुचारू परिचालन को सुनिश्चित करने और यात्रियों की भीड़ को नियंत्रित करने के लिए देशभर में भारतीय रेलवे के 80 से अधिक वार रूम 24 घंटे काम कर रहे हैं। रेलवे बोर्ड की ओर से मंगलवार को जारी जानकारी के अनुसार मौजूदा समय में रेलवे बोर्ड से लेकर जोनल और डिविजनल स्तर तक 80 से अधिक वार रूम सक्रिय हैं। इन वार रूमों से देशभर में ट्रेनों की स्थिति, यात्रियों की संख्या और सुरक्षा गतिविधियों पर 24 घंटे नजर रखी जा रही है। रेलवे ने कहा है कि त्योहारों के सीजन में ट्रेनों और स्टेशनों पर यात्रियों की संख्या में कई गुना वृद्धि हो गई है, ऐसे में ये वार रूम यात्रियों की सुविधा के लिए वारदान साबित हो रहे हैं।

नौसेना कमांडरों का सम्मेलन आज से

नई दिल्ली। नौसेना के शीर्ष कमांडर बुधवार से तीन दिन तक यहां भविष्य की चुनौतियों से निपटने और हिन्द महासागर तथा हिन्द प्रशांत क्षेत्र के खतरों से निपटने की रणनीति पर गहन चर्चा करेंगे। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी कमांडरों को संबोधित करेंगे। नौसेना के प्रवक्ता ने बताया कि नौसेना के शीर्ष कमांडरों के तीन दिन के सम्मेलन का दूसरा संस्करण बुधवार को यहां शुरू होगा। इस सम्मेलन को काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

मुंबई में ऊंची इमारत में आग से चार की मौत

मुंबई। नवी मुंबई के वाशी इलाके में सोमवार देर रात एक 12 मंजिला आवासीय इमारत में भीषण आग लग गई जिससे चार लोगों की मौत हो गई जबकि 10 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने कहा कि यह घटना वाशी के सेक्टर 14 स्थित रहेजा रेजीडेंसी बिल्डिंग में हुई। नगर निगम अग्निशमन विभाग के अग्निशमन कर्मी घटनास्थल पर पहुंचे और आठ दमकल गाड़ियों तथा लगभग 40 अधिकारियों एवं कर्मचारियों की मदद से आग पर काबू पाया।

गिलास में पटाखा फोड़ रहे युवक की मौत

नोएडा। गौतमबुद्ध नगर जिले की छिजारसी कॉलोनी में सोमवार रात को स्टील के गिलास में बम रखकर फोड़ने से घायल हुए 20 वर्षीय युवक की अस्पताल में उपचार के दौरान मौत हो गई। नोएडा सेक्टर 63 थानाक्षेत्र की छिजारसी कॉलोनी में युवक स्टील के गिलास में बम रखकर फोड़ रहा था कि जोरदार धमाके से गिलास के चिथड़े उड़ गए और स्टील के टुकड़े उसके शरीर में कई जगह घुस गए।

ऑपरेशन सिंदूर के जरिए लिया अन्याय का बदला : प्रधानमंत्री

नागरिकों के नाम लिखे पत्र में मोदी ने कहा-मर्यादा का पालन भी किया

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को दीपावली के अवसर पर देश के नागरिकों को एक पत्र लिखा और ऑपरेशन सिंदूर की सफलताओं और नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई पर प्रकाश डाला। कहा कि ऑपरेशन सिंदूर में भारत ने धर्म और मर्यादा को कायम रखते हुए बेटियों के साथ हुए अन्याय का बदला लिया। साथ ही कहा कि जब दुनिया संकटों से घिरी हुई है तब ऐसे समय में भारत स्थिरता के प्रतीक के रूप में उभरा है।

प्रधानमंत्री ने जीएसटी दरों को कम करने के निर्णय को अपनी सरकार की ऐतिहासिक उपलब्धि बताया और कहा कि जीएसटी बचत उत्सव के दौरान नागरिक हजारों करोड़ रुपये बचा रहे हैं। उन्होंने नागरिकों से 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को बढ़ावा देने के लिए स्वदेशी अपनाने, सभी भाषाओं का सम्मान करने, स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने और योग को अपनाने का भी आग्रह किया।

मोदी ने स्वदेश निर्मित विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत पर नौसैन्य कर्मियों के साथ दिवाली मनाने के एक दिन बाद देशवासियों को लिखे एक पत्र में कहा कि ये सभी प्रयास हमें तेजी से विकसित भारत की ओर ले जाएंगे। उन्होंने कहा कि मैं आप सभी को ऊर्जा और उत्साह से भरे पावन पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। अयोध्या में राम मंदिर के भव्य निर्माण के बाद यह दूसरी दीपावली है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भगवान श्री राम हमें मर्यादा का पालन करना सिखाते हैं और अन्याय से लड़ने का साहस भी देते हैं। इसका जीता जागता उदाहरण हमने कुछ महीने पहले ऑपरेशन सिंदूर के दौरान देखा था। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत ने न केवल धर्म का पालन किया बल्कि अन्याय का बदला भी लिया। उन्होंने कहा कि यह दीपावली खास है क्योंकि पहली बार देश भर के कई जिलों में, जिनमें दूरदराज के इलाके भी शामिल हैं, दीप जलेंगे। उन्होंने कहा कि ये वे जिले हैं जहां नक्सलवाद और माओवादी आतंकवाद का जड़ से सफाया हो चुका है। हाल के दिनों में हमने कई लोगों को हिंसा का रास्ता छोड़कर, हमारे देश के संविधान में आस्था व्यक्त करते हुए विकास की मुख्यधारा में शामिल होते देखा है। यह राष्ट्र के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर देश

प्रधानमंत्री ने कहा कि इन ऐतिहासिक उपलब्धियों के बीच, देश ने हाल के दिनों में अगली पीढ़ी के सुधारों की भी शुरुआत की है। मोदी ने कहा कि नवरात्र के पहले दिन जीएसटी की कम दरें लागू की गईं। इस जीएसटी बचत उत्सव के दौरान नागरिक हजारों करोड़ रुपये बचा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अनेक संकटों से जूझ रही दुनिया में भारत स्थिरता और संवेदनशीलता का प्रतीक बनकर उभरा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हम निकट भविष्य में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर हैं। प्रधानमंत्री ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि नागरिकों की प्राथमिक जिम्मेदारी राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना है।

स्वदेशी अपनाएं, एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को दें बढ़ावा

मोदी ने नागरिकों से स्वदेशी अपनाने और गर्व से यह बताने कि यह स्वदेशी है का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि आइए हम एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना को बढ़ावा दें। सभी भाषाओं का सम्मान करें। स्वच्छता बनाए रखें। उन्होंने कहा कि आइए हम अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें। आइए हम अपने भोजन में तेल का प्रयोग 10 प्रतिशत कम करें और योग को अपनाएं। ये सभी प्रयास हमें तेज़ी से विकसित भारत की ओर ले जाएंगे। कहा कि दीपावली हमें यह भी सिखाती है कि जब एक दीप दूसरे दीप को रौशन करता है तो उसकी रोशनी कम नहीं होती, बल्कि और बढ़ती है। इसी भावना के साथ आइए इस दीपावली हम समाज और आस-पास सद्भाव, सहयोग और सकारात्मकता के दीप जलाएं।

पुलिस स्मृति दिवस पर वीरों के शौर्य को सलाम

अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा ही सबसे बड़ा राष्ट्र धर्म : योगी

- मुख्यमंत्री ने कहा, शहीदों का बलिदान राष्ट्र की अमूल्य पूंजी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

शहीद के परिजन को सम्मानित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पुलिस स्मृति दिवस पर वीरों के शौर्य को सलाम करते लोगों ने हुए कहा कि कर्तव्य के प्रति निष्ठा ही सबसे बड़ा राष्ट्र धर्म है। बोले, यह केवल श्रद्धांजलि अर्पित करने का दिन नहीं, बल्कि उन आदर्शों को याद करने का क्षण है, जिन्होंने वर्दी की मर्यादा और राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। शहीद स्मारक उनकी अमर गाथा का साक्षी है और नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत भी।

रिजर्व पुलिस लाइन सोमवार को उस समय देशभक्ति की भावना से सराबोर हो उठी, जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पुलिस स्मृति दिवस 2025 पर उत्तर प्रदेश पुलिस के शहीद जवानों को नमन किया। मुख्यमंत्री ने शहीद स्मारक पर पुष्पचक्र अर्पित कर तीन वीर सपूतों एसटीएफ निरीक्षक सुनील कुमार, मुख्य आरक्षी दुर्गेश कुमार सिंह (जौनपुर) और आरक्षी सौरभ कुमार (गौतमबुद्ध नगर) को श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री ने शहीदों के परिजनों से भेंट कर उन्हें सम्मानित किया और कहा कि राज्य सरकार शहीद परिवारों के कल्याण के लिए पूरी संवेदनशीलता के साथ हर कदम उठा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कानून-व्यवस्था और अपराध पर जीरो टॉलरेंस की नीति जारी है। आधुनिक संसाधनों, तकनीक और संवेदना के नए युग में यूपी पुलिस को लगातार सशक्त किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि पुलिस विभाग के लिए वित्तीय वर्ष 2025-26 में 4,061.87 करोड़ रुपये का बजट स्वीकृत किया गया है, जो पिछले वर्ष से 7 प्रतिशत अधिक है। 'शोक शस्त्र' और 'सलामी शस्त्र' की कार्यवाही के दौरान पूरा परिसर देशभक्ति के स्वर से गूंज उठा। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश पुलिस देश की सबसे बड़ी, सबसे अनुशासित और सबसे सक्षम फोर्स है। यह हमारे सुरक्षा, विश्वास और व्यवस्था की रीढ़ है।

नारी शक्ति की झलक और शौर्य का सम्मान

कार्यक्रम का शुभारंभ परेड कमांडर द्वारा मुख्यमंत्री को सलामी देने से हुआ। नारी शक्ति की प्रतीक के रूप में पुलिस उपाधीक्षक (अभिसूचना मुख्यालय) आभा पांडेय ने शोक पुस्तिका वाहक की भूमिका निभाई और मुख्यमंत्री को शहीदों की स्मृति पुस्तिका सौंपी। पुलिस महानिदेशक राजीव कृष्ण ने वीरगति प्राप्त जवानों के अदम्य साहस और समर्पण का विवरण प्रस्तुत किया।

नहीं रहे अंग्रेजों के जमाने के जेलर, 84 की उम्र में निधन

मुंबई, एजेंसी

- पांच दशकों से फिल्मों में सक्रिय थे मशहूर हास्य अभिनेता असरानी

फिल्म शोले में सनकी जेलर की भूमिका निभाकर दर्शकों के दिलों में खास जगह बनाने वाले और हास्य भूमिकाओं के लिए दिग्गज अभिनेता असरानी का सोमवार को यहां एक अस्पताल में निधन हो गया। वह 84 वर्ष के थे। प्रधानमंत्री मोदी सहित फिल्म जगत और अन्य क्षेत्रों से जुड़ी हस्तियों ने उनके निधन पर शोक जताया है।

पांच दशकों से अधिक समय तक कई फिल्मों में काम करने वाले गोवर्धन असरानी, जिन्हें असरानी के नाम से जाना जाता है, को शोले, नमक हराम और गुड्डी में उनके किरदारों के लिए याद किया जाता है। उनका निधन सोमवार को अपराह्न तीन बजे हुआ। चार दिन पहले उन्हें उपनगरीय जुहू स्थित भारतीय आरोग्य निधि अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

दीपावली के बाद दिल्ली पर छाई जहरीली धुंध की चादर

- गंभीर श्रेणी में पहुंचा एक्यूआई कम हो गई राजधानी में दृश्यता

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली में वायु प्रदूषण कम करने के लिए एंटी-स्मॉग गन से पानी का छिड़काव।

दिल्ली में बीती रात बहुत से लोगों ने दिवाली पर उच्चतम न्यायालय की ओर से निर्धारित समयसीमा से ज्यादा समय तक पटाखे चलाए जिसकी वजह से मंगलवार सुबह आसमान में धुंध छाई रही, दृश्यता कम हो गई और वायु गुणवत्ता रेड जोन में रही।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण ब्यूरो (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) सुबह आठ बजे 352 दर्ज किया गया, जो बेहद खराब श्रेणी में आता है। सुबह पांच बजे यह 346, सुबह छह बजे 347 और सुबह सात बजे 351 दर्ज किया गया।

उच्चतम न्यायालय ने दिवाली पर दिल्ली-एनसीआर में रात आठ बजे से 10 बजे के बीच हरित पटाखों के इस्तेमाल की अनुमति दी थी। हालांकि, कई लोगों ने अदालत के निर्देशों का उल्लंघन किया और देर रात तक जश्न जारी रहा। सीपीसीबी के प्रति घंटे के आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली का एक्यूआई रात 12 बजे 349 और एक बजे 348 था। सोमवार को राजधानी के 38 निगरानी केंद्रों में से 36 ने प्रदूषण का स्तर रेड जोन में दर्ज किया।

सुप्रीम कोर्ट निर्देशों के उल्लंघन पर 150 प्राथमिकी

दिल्ली पुलिस ने पटाखे फोड़ने के संबंध में उच्चतम न्यायालय के दिशानिर्देशों का उल्लंघन करने पर 100 से अधिक मामले दर्ज किए हैं, अवैध तरीके से पटाखों की बिक्री में करीब 50 मामले दर्ज किए गए हैं। उच्चतम न्यायालय ने पटाखे फोड़ने के लिए सुबह 6 बजे से 7 बजे तक तथा रात 8 बजे से 10 बजे तक की अनुमति दी थी।

कोलकाता और मुंबई की वायु गुणवत्ता भी खराब

दीपावली के बाद कोलकाता और मुंबई में हवा की गुणवत्ता भी खराब हुई है। कोलकाता में सोमवार रात काली पूजा के अवसर पर आतिशबाजी के बाद मंगलवार को वायु गुणवत्ता 'खराब' रही। मुंबई में समग्र वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में भारी गिरावट आई और मंगलवार को यह खराब श्रेणी में पहुंच गया।

कोर्ट की टिप्पणी

दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा-अपराध साबित करने को साक्ष्य का होना आवश्यक

शारीरिक संबंध शब्द दुष्कर्म साबित करने को पर्याप्त नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा है कि साक्ष्यों के बिना महज शारीरिक संबंध शब्द का इस्तेमाल दुष्कर्म या शील भंग के मामलों को स्थापित करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

अदालत ने यह टिप्पणी एक व्यक्ति की अपील को स्वीकार करते हुए की, जिसमें उसने बलात्कार के मामले में अपनी दोषसिद्धि और 10 वर्ष के कारावास को चुनौती दी थी। उच्च न्यायालय ने उसे आरोपों से बरी कर दिया था। न्यायमूर्ति मनोज कुमार ओहरी ने 17 अक्टूबर को पारित आदेश में कहा कि इस मामले के विशिष्ट तथ्यों और परिस्थितियों में, 'शारीरिक संबंध' शब्द का प्रयोग, बिना किसी सहायक साक्ष्य के, यह मानने के लिए पर्याप्त नहीं होगा कि अभियोजन पक्ष अपराध को उचित संदेह से परे साबित करने में सक्षम रहा है। अदालत ने कहा कि आईपीसी की धारा 376 और पॉक्सो अधिनियम की धारा 6 के तहत अपीलकर्ता की दोषसिद्धि कायम रखने योग्य नहीं है।

अदालत ने इसे दुर्भाग्यपूर्ण मामला बताते हुए कहा कि वह मामले का निर्णय उसके गुण-दोष के आधार पर करने के लिए बाध्य है। फैसले में कहा गया है कि पीड़ित बच्ची और उसके माता-पिता ने बार-बार कहा कि शारीरिक संबंध स्थापित किए गए थे, हालांकि इस बात पर कोई स्पष्टता नहीं थी कि इस अभिव्यक्ति का क्या मतलब था। अदालत ने कहा कि कथित कृत्य का कोई और विवरण नहीं दिया गया है। दुर्भाग्य से, अभियोजन पक्ष या अधीनस्थ अदालत ने पीड़ित से कोई प्रश्न नहीं पूछा, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि याचिकाकर्ता पर लगाए गए अपराध के आवश्यक तत्व सिद्ध हुए हैं या नहीं।

आईपीसी और पॉक्सो एक्ट में नहीं शारीरिक संबंध की परिभाषा

अदालत 2023 में दर्ज एक मामले की सुनवाई कर रही थी, जिसमें 16 वर्षीय पीड़िता ने आरोप लगाया था कि उसके रिश्ते के भाई ने 2014 में शादी का झूठा झांसा देकर एक साल से अधिक समय तक उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। व्यक्ति ने अपनी दोषसिद्धि को चुनौती दी और उच्च न्यायालय ने उसकी अपील को स्वीकार करते हुए कहा कि अभियोजन पक्ष का मामला केवल मौखिक साक्ष्य पर आधारित है, जो कि पीड़ित बच्ची और उसके माता-पिता की गवाही है तथा रिकॉर्ड में कोई फॉरेंसिक साक्ष्य नहीं है। अदालत ने कहा कि शारीरिक संबंध शब्द का प्रयोग या परिभाषा न तो आईपीसी के तहत दी गई है और न ही पॉक्सो अधिनियम के तहत। न्यायाधीश ने कहा कि यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि नाबालिग पीड़िता का शारीरिक संबंध शब्द से क्या तात्पर्य है और क्या इसमें शील भंग का प्रयास शामिल था।

आज बंद हो जाएंगे गंगोत्री धाम के कपाट

देहरादून। चार धामों में से एक गंगोत्री धाम के कपाट बुधवार को बंद हो जाएंगे। मंदिर प्रशासन की तरफ से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। उत्तरकाशी जिला प्रशासन के अनुसार, बुधवार (22 अक्टूबर) को गंगोत्री धाम के कपाट बंद होंगे।

कपाट बंद करने का शुभ मुहूर्त 11:36 बजे हैं। विधि-विधान से पूजा अर्चना के बाद मां गंगा की विग्रह डोली भोगमूर्ति शीतकालीन प्रवास मुखबा गांव के लिए रवाना होगी। रात को डोली मुखबा गांव से करीब दो किमी पहले मार्कण्डेय मंदिर में रात्रि विश्राम करेगी। इसके बाद 23 अक्टूबर की दोपहर विग्रह डोली मुखबा गांव पहुंचेगी जहां भोगमूर्ति को मंदिर में शीतकाल के लिए स्थापित किया जाएगा।

भारतीय वायुसेना की तीसरी रैंकिंग पर बौखलाया चीन

बीजिंग, एजेंसी

- कहा-कागज पर नहीं, वास्तविक क्षमता पर होना चाहिए आकलन

दुनिया की वायुसेनाओं की एक नई रैंकिंग में भारत को अमेरिका और रूस के बाद तीसरा स्थान दिया गया है और चीन से आगे रखा गया है। इस रैंकिंग ने नई चर्चा छेड़ दी है। चीन नई रैंकिंग को पचा नहीं पा रहा है।

एक चीनी विशेषज्ञ ने कहा कि सैन्य शक्तियों को कागज पर नहीं, बल्कि वास्तविक क्षमताओं के आधार पर रैंक किया जाना चाहिए, संभावित गलत गणनाएं किसी का भला नहीं करेंगी। यह रैंकिंग वर्ल्ड डायरेक्टरी ऑफ मॉडर्न मिलिट्री एयरक्राफ्ट (डब्ल्यूडीएमएए) द्वारा तैयार की गई है, जो 103 देशों और 129 वायु सेवाओं को कवर करती है, जिसमें सेना, नौसेना और मरीन एविएशन ब्रांच शामिल हैं।

चीनी सैन्य मामलों के विशेषज्ञ झांग जुनशी ने कहा कि इस रैंकिंग को गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए। कहा कि केवल सैन्य बलों की वास्तविक युद्धक्षेत्र क्षमताएं ही सार्थक तुलना का आधार बनाती हैं, न कि उनकी कागजी ताकत।

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 22 अक्टूबर 2025

शाहजहांपुर

न्यूज ब्रीफ

युवक को दबंगों ने बेल्टों से पीटकर किया घायल

शाहजहांपुर, अमृत विचार : मदनापुर क्षेत्र में बाइक टकराने का विरोध करने पर एक युवक को दबंगों ने बेल्टों से पीटकर घायल कर दिया। इस दौरान पिटाई का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ हुआ। मदनापुर थाना क्षेत्र के गांव नारायणपुर निवासी विजय सोमवार को मदनापुर कस्बे में आया था। शाम छह बजे मुख्य बाजार में ढुकरीकला में कुछ दबंगों ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। उसने टक्कर मारने का विरोध किया तो दबंगों ने उसकी बेल्टों से पीटना शुरु का दिया। राहगीरों ने उसे बचाया और आरोपी जान से मारने की धमकी देकर भाग गए। पीड़ित ने थाना पर तहरीर दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

युवक ने फंदा लगाकर दे दी जान

मदनापुर/शाहजहांपुर, अमृत विचार : युवक ने मकान में कुंडे से फांसी लगाकर जान दे दी, वह बीमारी से काफी परेशान था। मदनापुर थाना क्षेत्र के गांव नगला बन्नू निवासी 28 वर्षीय राजू ने मंगलवार की सुबह कमरे में पंखे के कुंडे से रस्सी का फंदा गले में डालकर आत्महत्या कर ली। परिवार वालों ने उसका शव लटका हुआ देखा तो शव को नीचे उतारा। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। परिवार वालों ने बताया कि मृतक राजू कई माह से बीमार चल रहा था और इलाज के बाद ठीक नहीं हो रहा था। वह अपनी बीमारी से काफी परेशान था। उसकी शादी नहीं हुई थी। उसकी मां भी बीमार रहती थी। मृतक दो भाइयों में छोटा था। मौत की खबर से परिवार में रोना पीटना मच गया।

शादी का झांसा देने का आरोपी गिरफ्तार

शाहजहांपुर, अमृत विचार : शहर में शादी का झांसा देकर एक युवती के साथ आरोपी ने दुष्कर्म किया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार करके चालान कर दिया। सदर बाजार थाना क्षेत्र की एक महिला ने रिपोर्ट दर्ज करायी थी कि चौक कोतवाली का मोहल्ला हुंडाल खेल का रहने वाला सुमित उसकी बेटी को शादी का झांसा देकर अपने जाल में फंसा लिया था। आरोप है कि उसकी बेटी के साथ दुष्कर्म किया। उसकी बेटी ने शादी के लिए कहा तो आरोपी ने उसकी बेटी के साथ मारपीट की। पुलिस ने सुमित के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली थी। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार करके चालान कर दिया।

पाक्सो एक्ट का आरोपी गिरफ्तार

शाहजहांपुर, अमृत विचार : सदर बाजार प्रभारी निरीक्षक ब्रजेश कुमार ने बताया कि अभियुक्त विकास निवासी श्यामतगंज गौटिया थाना सदर बाजार एक किशोरी को अगवा करके ले गया था। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही थी। पुलिस ने आरोपी विकास को गिरफ्तार कर लिया और चालान कर दिया।

लक्ष्मी गणेश का पूजन करते वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना। ● अमृत विचार

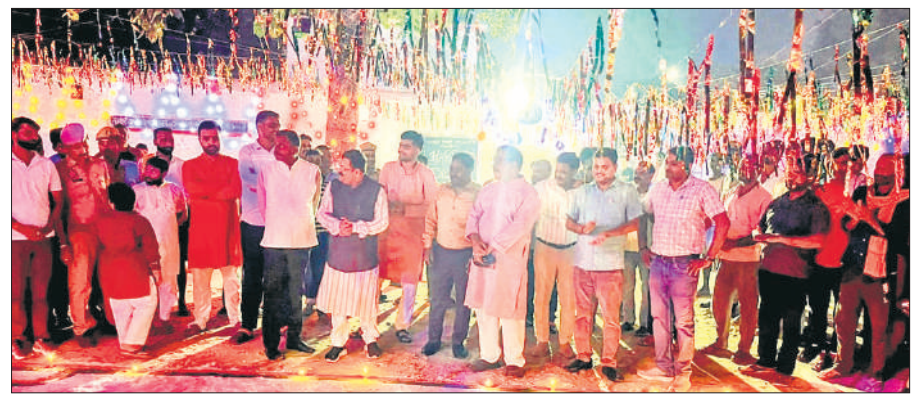

दीयों की रोशनी में जगमगाता जेल परिसर व मौजूद लोग। ● अमृत विचार

परिवार के साथ आतिशबाजी करते हैं एडीएम प्रशासन रजनीश कुमार मिश्रा।

दीयों से जगमगाया जनपद, घर-घर की गई लक्ष्मी-गणेश की पूजा

व्यापारियों ने प्रतिष्ठानों में भी किया दीपावली पर पूजन, त्यौहार पर बाजारों में उमड़ी भीड़, 300 करोड़ रुपये का कारोबार होने का अनुमान

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- बच्चों ने फुलझड़ी, अनार और चकरी चलाकर मनाया उल्लास
- सर्राफा बाजार में करीब 70 करोड़ रुपये का हुआ लेन-देन

अमृत विचार: दीपों और रंगों के पर्व दीपावली ने सोमवार को शाहजहांपुर को रोशनी की चादर में लपेट लिया। शहर के हर कोने से रौशनी और खुशियों का नजारा दिखाई दिया। घरों से लेकर प्रतिष्ठानों तक हर जगह बिजली की रंग-बिरंगी झालरों और दीयों की जगमगाहट ने माहौल को खुशनुमा बना दिया। शुभ मुहूर्त में लोगों ने श्रद्धा भाव से भगवान गणेश और माता लक्ष्मी की पूजा-अर्चना की और सुख-समृद्धि की कामना की।

पूजन के बाद आसमान आतिशबाजी की चमक से जगमगा उठा। महिलाओं ने पारंपरिक परिधानों में सोलह शृंगार कर दीपमालाएं सजाईं, वहीं बच्चों ने फुलझड़ी, अनार और फिरकी चलाकर खुशियां मनाईं। हर गली, हर छत पर दीपों की कतारें और मुस्कुराहटें शहर की रौनक में चार चांद लगाती रहीं। दीपावली पर मां लक्ष्मी की कृपा बाजारों पर भी खूब बरसी। खरीदारी के चलते दुकानों पर सुबह से ही भीड़ उमड़ी रही। व्यापारिक संगठनों के अनुसार, जिले में इस बार लगभग 300 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। सराफा बाजार में करीब 70 करोड़ रुपये के सोने-चांदी के गहनों की बिक्री हुई।

ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स और रेडीमेड वस्त्रों की दुकानों पर भी ग्राहकों की लंबी कतारें लगी रहीं। अनुमान है कि इस बार करीब दो हजार बाइकें और कारें बिकीं। मिठाई व्यापारियों ने भी बताया कि इस वर्ष बिक्री पिछले साल की तुलना में बेहतर रही। इस बार कार्तिक अमावस्या दो दिनों तक रही, जिसके कारण कई परिवारों ने शुक्रवार को भी लक्ष्मी-गणेश पूजन कर दीपावली का पर्व मनाया। देर रात तक सदर बाजार, घंटाघर और आसपास के इलाकों में रोशनी और आतिशबाजी का उत्सव जारी रहा। उधर, डीएम कंपाउंड में एडीएम प्रशासन ने परिवार सहित आतिशबाजी की। वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने कार्यक्रमों में शामिल होकर लक्ष्मी-गणेश की पूजा अर्चना की।

आतिशबाजी करते बच्चे।

दीप जलाती युवती।

दीपावली पर जगमगाता हनुमतधाम।

जिला जेल में अयोध्या की तर्ज पर भव्य दीपोत्सव

जिला कारागार शाहजहांपुर में इस बार दीपावली का पर्व बिल्कुल अलग अंदाज में मनाया गया। पहली बार जेल परिसर को अयोध्या की तर्ज पर "भव्य दीपोत्सव" में तब्दील कर दिया गया। कारागार को मिनी अयोध्या का स्वरूप देने के लिए पूरे परिसर को 10,000 दीयों और 2,000 मोमबत्तियों से सजाया गया। दीयों से 'शुभ दीपावली, ऊं, राम मंदिर, महिला सशक्तिकरण, स्वच्छ भारत और नशामुक्ति जैसी आकृतियां बनाई गईं। इस नजारे ने पूरे जेल परिसर को प्रकाश और उल्लास से भर दिया। इस खास अवसर पर सभी 1100 बंदियों को दीपावली की पारंपरिक खील-खिलोने, मिष्ठान, फल और विशेष भोजन परोसा गया। भोज में पूड़ी, हलवा, आलू, काशीफल और टमाटर की सब्जी शामिल रही। इस पहल का उद्देश्य बंदियों को त्योहार का अहसास कराना और घर की याद को कम करना रहा। बंदियों की खुशी देखते ही बन रही थी। उन्होंने अपनी-अपनी बैरकों और हॉलों को रंगोलियों, कागज़ की झालरों और बिजली की लाइटों से सजाया।

जेल प्रशासन ने साज-सज्जा प्रतियोगिता का किया आयोजन

जेल प्रशासन ने साज-सज्जा प्रतियोगिता का आयोजन भी किया, जिसके लिए 9 टीमें बनाई गईं। सभी टीमों ने अपनी रचनात्मकता से परिसर को सजाया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला सहकारी बैंक के चेयरमैन डीपीएस राठौर और एडीएम वित्त एवं राजस्व अरविंद कुमार ने साज-सज्जा का निरीक्षण किया। निर्णायक मंडल में समाजसेवी हरिशरण वाजपेई, सेवा भारती की अध्यक्षा सीमा हरिशरण वाजपेई और आमंत्रित अतिथिगण शामिल रहे। उन्होंने सभी टीमों की सजावट का स्थलीय निरीक्षण कर विजेताओं का चयन किया। जेल में चल रहे शिक्षा कार्यक्रम की जानकारी के लिए मुख्य अतिथियों ने बंदियों से सामान्य ज्ञान और गणित के प्रश्न पूछे। बंदियों ने उत्साह के साथ सही उत्तर दिए, जिस पर अतिथियों ने मौके पर ही उन्हें पुरस्कृत किया। घोषणा की गई कि 22 अक्टूबर को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में बंदियों को उपयोगी वस्तुएं भेंट की जाएंगी। आगामी 22 अक्टूबर को आयोजित कार्यक्रम में प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेता राजपाल यादव विजेता टीमों को पुरस्कार देकर सम्मानित करेंगे। कार्यक्रम के समापन पर अतिथियों ने सभी महिला व पुरुष बंदियों को खील-खिलोने, मिष्ठान, फल और बतासे वितरित किए।

समाजसेवियों का रहा योगदान

कार्यक्रम की सफलता में समाजसेवी हरिशरण वाजपेई का विशेष सहयोग रहा। उनके प्रयासों से दीये, सरसों तेल, बाती, मोमबत्तियां, मिष्ठान और बतासे की व्यवस्था की गई। वहीं जय भारत संस्था के राजीव कृष्ण अग्रवाल द्वारा एक हजार से अधिक मोमबत्तियां भेंट की गईं। कार्यक्रम में सेवा भारती की अध्यक्षा सीमा हरिशरण वाजपेई की उपस्थिति ने समारोह की शोभा बढ़ाई। जेल प्रशासन के अनुसार, शाहजहांपुर कारागार में इस तरह का भव्य दीपोत्सव पहली बार आयोजित किया गया। बंदियों के चेहरों पर मुस्कान और उल्लास झलकता रहा। त्योहार का यह आयोजन न केवल एक नई शुरुआत साबित हुआ, बल्कि इससे जेल में सकारात्मकता और सामूहिकता का वातावरण भी बना।

धान की फसल में लगाई आग

संवाददाता, जैतीपुर

- किसान ने गांव के दो लोगों पर पेट्रोल डालकर फसल जलाने का लगाया आरोप

अमृत विचार: थाना गढ़िया रंगीन क्षेत्र के गांव जरगवां में रविवार रात धान की फसल में अचानक आग लग गई। आग की चपेट में आकर करीब 20 क्विंटल धान जलकर राख हो गया। खेत मालिक ने रंजिशन फसल में आग लगाने का आरोप लगाते हुए पुलिस को तहरीर दी है।

गढ़िया रंगीन के रहने वाले रिंकू ने बताया कि उसने गांव जरगवां स्थित खेत में धान की फसल काटकर इकट्ठी की थी। रविवार शाम वह खाना खाने के लिए घर आया था। उसी दौरान, पूर्व रंजिश के चलते गांव के ही निरभान और गौतम ने पेट्रोल डालकर फसल में आग लगा दी। आग लगते ही खेत में अफरा-तफरी मच गई। बताया गया कि मौके पर पहुंचे बटाईदार ने जब आग लगाने का कारण पूछा तो आरोपियों ने गाली गलौज शुरू कर दी और झगड़े पर आमादा हो गए। इस दौरान तमंचा दिखाकर जान से मारने की धमकी दी। थाना प्रभारी हरकेश सिंह ने बताया कि पीड़ित की ओर से प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ है। मामले की जांच की जा रही है।

बाल सुधार गृह में मनाया दीपोत्सव

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली के पावन पर्व पर आदर्श दिव्यांग कल्याण संस्थान द्वारा नवादा स्थित राजकीय बाल सुधार गृह में एक भावनात्मक और प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर समिति की ओर से बच्चों को मिठाई, फल, खील, खिलौने, दीपक, मोमबत्ती, फुलझड़ी और पटाखे वितरित किए गए। जब अतिथियों ने अपने हाथों से बच्चों को मिठाई खिलाई, तो उनके चेहरों पर अनोखी चमक देखने को मिली।

कार्यक्रम में समिति के मुख्य संरक्षक हरिशरण बाजपेई, डॉ. विजय पाठक और प्रदेश सचिव नीरज वाजपेयी ने बच्चों के साथ समय बिताया, उनके हाल-चाल पूछे और दीपावली की खुशियों में उन्हें शामिल किया। हरिशरण बाजपेई ने इस अवसर पर कहा कि "हम पिछले बारह वर्षों से बाल सुधार गृह नवादा इन्देपुर में दीपावली मनाते आ रहे हैं। यहां छोटे-छोटे बच्चों के साथ यह पर्व मनाना आत्मिक सुख देता है। यह सच्चे अर्थों में दीपावली का वास्तविक स्वरूप है।" कार्यक्रम में समिति के अन्य सदस्यों ने भी भाग लिया और बच्चों को प्रेमपूर्वक उपहार दिए। जनपद के सामाजिक संगठनों ने आदर्श दिव्यांग कल्याण समिति के इस मानवीय प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन समाज में संवेदना और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करते हैं।

राजकीय बाल सुधार गृह में बच्चों संग दीपावली मनाते आदर्श दिव्यांग कल्याण समिति के संरक्षक हरिशरण वाजपेयी, डॉ. विजय पाठक व नीरज वाजपेयी। ● अमृत विचार

- आदर्श दिव्यांग कल्याण समिति के पदाधिकारियों ने बच्चों संग बांटी खुशियां

गंधक-पोटास दगाने पर तीन बच्चे झुलसे

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- बच्चों ने कहा 100 रुपये का पोटास खरीदकर लाए थे

अमृत विचार: दीपावली के दिन आतिशबाजी खेलने के दौरान तीन बच्चे गंभीर रूप से झुलस गए। यह हादसा निगोही थाना क्षेत्र के बलेली गांव में हुआ। झुलसे बच्चों को राजकीय मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया। एसपी राजेश द्विवेदी ने घटना की जांच के निर्देश दिए हैं।

जानकारी के अनुसार, बलेली गांव के निवासी ललित सक्सेना (13), सचिन सक्सेना (10) और रेहान अली (13) दीपावली पर गंधक पोटास दगाने का खेल खेल रहे थे। उन्होंने गांव के एक परचून दुकानदार से 100 रुपये का गंधक पोटास खरीदा था। बच्चे जब सिल-बट्टे पर उसे दगाने का प्रयास कर रहे थे, तभी अचानक जोरदार धमाका हो गया। धमाके से तीनों बच्चे बुरी तरह झुलस गए। ग्रामीणों ने तुरंत बच्चों को राजकीय मेडिकल कॉलेज पहुंचाया, जहां डॉक्टरों की देखरेख में उनका उपचार चल रहा है। शुरुआत में इस घटना की सूचना पुलिस को नहीं दी गई थी। मंगलवार शाम जब बच्चों के झुलसने का वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया, तो पुलिस हरकत में आई। थाना प्रभारी ने पहले मामले की जानकारी न होने की बात कही, लेकिन वीडियो सामने आने के बाद एसपी राजेश द्विवेदी ने घटना का संज्ञान लेते हुए जांच के आदेश जारी कर दिए। एसपी राजेश द्विवेदी ने बताया कि परिवार की ओर से पहले कोई तहरीर नहीं दी गई थी, लेकिन मामला संज्ञान में आने के बाद जांच कराकर कार्रवाई की जाएगी।

महिला की संदिग्ध हालात में मौत

कांट/शाहजहांपुर, अमृत विचार: रसकूपा बहादुरपुर गांव में एक महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गयी। थाना क्षेत्र के गांव रसकूपा बहादुरपुरा निवासी अखिलेश वर्मा ने बताया कि 18 अक्टूबर की शाम छह बजे विद्या प्लाईवुड फैक्ट्री से काम करके घर पर आया। उसने देखा कि 21 वर्षीय प्रंसी वर्मा घर के अंदर उल्टी कर रही थी। उसकी पत्नी ने कहा कि उसकी तबीयत खराब हो गयी। उसने सोचा कि ठीक हो जाएगी। उसके अगले दिन सुबह चार बजे उसकी पत्नी की और तबीयत खराब हो गयी। वह अपनी पत्नी को लेकर एक निजी अस्पताल में ले गया। डाक्टर ने बताया कि उसकी पत्नी ने कोई जहरीला पदार्थ का सेवन कर लिया है। 20 अक्टूबर को दवा लेकर अपनी पत्नी को घर ले आया। रात में उसकी पत्नी की मौत हो गयी। मृतका प्रंसी वर्मा निवासी बड़ा ककरा थाना सदर की शादी छह माह पूर्व अखिलेश के साथ हुई थी। मृतका के परिवार वाले बेटी की ससुराल पहुंचे। प्रभारी निरीक्षक राकेश कुमार ने बताया कि मायके वालों की तरफ से कोई तहरीर नहीं आयी है। उन्होंने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मौत का कारण स्पष्ट होगा। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मौत की खबर से परिवार में रोना पीटना मच गया।

स्मृति दिवस पर शहीद पुलिस कर्मियों को किया नमन

स्मृति दिवस पर शहीदों को नमन करता है एसपी। ● अमृत विचार

संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: पुलिस लाइन में पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया। अधिकारियों और कर्मचारियों ने फर्ज के खातिर अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीद वीरों को नमन किया।

एसपी राजेश द्विवेदी ने शहीद स्मारक पर पुष्प अर्पित किए और शहीदों के बलिदान को याद किया। दो मिनट का मौन रखकर वीरगति को प्राप्त हुए पुलिस जवानों को श्रद्धांजलि दी। इसके बाद अन्य अधिकारियों ने पुष्प अर्पित किए। एसपी ने बताया कि जनसेवा के उच्च आदर्श को अपनाकर अनेको पुलिस जन प्रतिवर्ष कर्तव्य पालन के दौरान वीरगति को प्राप्त होते रहे है। अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए कर्तव्य के लिए प्राणों की आहुति देने वाले ये पुलिस जन वास्वत में मरकर भी अमर हो जाते है। एसपी ने कहा कि शहीद पुलिस जवान हमारे प्रेरणा स्त्रोत है। इस अवसर पर एएसपी सिटी, एएसपी ग्रामीण, सीओ सिटी, प्रतिसार निरीक्षक आदि स्टाफ मौजूद रहा।

आतिशबाजी छुड़ाने पर विवाद, एक घायल

शाहजहांपुर, अमृत विचार : कांट थाना क्षेत्र के गांव टाडा पर्वतपुर निवासी गोलू ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि वह दीपावली को पूजा के बाद अपने घर के बाहर आतिशबाजी चला रहा था। इस दौरान एक चिंगारी पड़ोसी के मकान पर गिरी। इस बात को लेकर पड़ोसी ने शिकायत की। गोलू का आरोप है कि शिकायत के दौरान पड़ोसी गाली देने लगा। विरोध करने पर आरोपी उसे पीटकर घायल कर दिया। पुलिस के पहुंचने से पहले आरोपी जान से मारने की धमकी देकर भाग गए। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

न्यूज ब्रीफ

वाहन की टक्कर से बाइक सवार की मौत

फतेहगंज पूर्वी, अमृत विचार : किसी वाहन की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत हो गई। शाहजहांपुर जनपद के थाना कटरा क्षेत्र के गांव बेहटा मुरादपुर निवासी वीरेश पाल सिंह (25) मोटरसाइकिल से कटरा से अपने गांव जा रहा था। रास्ते में राजमार्ग पर बहगुल नदी के पुल के समीप किसी अज्ञात बाहन ने वीरेश पाल को टक्कर मार दी जिससे बह गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे उपचार हेतु बरेली के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया था जहां बीती सोमवार की रात उसने दम तोड़ दिया।

फ्लिपकार्ट हब से तिजोरी चोरी

जलालाबाद, अमृत विचार : दीपावली की रात चोरों ने फ्लिपकार्ट हब के गोदाम को निशाना बनाते हुए एक लाख रुपयों से भरी तिजोरी चोरी कर ली। मंगलवार सुबह जब कर्मचारियों ने ऑफिस पहुंचकर शटर टूटा देखा तो हड़कंप मच गया। तत्काल पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और साक्ष्य जुटाए। फ्लिपकार्ट हब के इंचार्ज मोहम्मद रफी ने बताया कि दीपावली के दिन रोज की तरह काम खत्म कर शाम को ऑफिस बंद कर दिया था। करीब एक लाख रुपये नकद तिजोरी में रखे गए थे। सुबह जब कर्मचारी ऑफिस खोलने पहुंचे तो ताले टूटे मिले और तिजोरी गायब थी। कंपनी की ओर से पुलिस को तहरीर दे दी गई है। हेड ऑफिस से सीसीटीवी फुटेज मंगाए गए हैं ताकि चोरों की पहचान की जा सके। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

गाली देने के विरोध पर पिता-पुत्र को पीटा

कलान, अमृत विचार : थाना कलान क्षेत्र के ग्राम पिलुआ में दरवाजे पर गाली देने का विरोध करने पर पिता-पुत्र को लाठी-डंडों से पीट दिया गया। पीड़ित ने थाने पर तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। ग्राम पिलुआ निवासी सूरजपाल ने बताया कि सोमवार की शाम करीब 6:30 बजे वह अपने दरवाजे पर बैठा था। इसी दौरान गांव के दो लोग वहां आए और बिना किसी कारण के गाली-गलौज करने लगे। जब उसने इसका विरोध किया तो दोनों ने लाठी-डंडों से हमला कर दिया। मारपीट में सूरजपाल (24) और उसके पिता रामेश्वर (56) घायल हो गए। ग्रामीणों ने बीच-बचाव कर दोनों को बचाया। घटना के बाद पीड़ित पक्ष ने थाना कलान में तहरीर देकर आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है।

रोजा में युवक का शव पेड़ पर अंगौछा से लटका मिला

मोबाइल और चप्पलें वहीं पड़ी थीं, परिजनों ने लगाया हत्या करने का आरोप, सोमवार रात पूजा के बाद घर से निकला था युवक

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: रोजा क्षेत्र में मंगलवार की सुबह एक युवक का शव पेड़ से अगौछे के सहारे लटका मिलने से सनसनी फैल गई। परिवार ने हत्या की आशंका जतायी है। मृतक का मोबाइल फोन और चप्पले पेड़ के नीचे पड़ी मिलीं। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर जांच शुरू कर दी है।

रोजा थाना क्षेत्र के मोहल्ला आईटीआई कॉलोनी निवासी 25 वर्षीय रवि गुप्ता दिल्ली में मजदूरी करता था और करीब 25 दिन पूर्व ही घर आया था। दीपावली की रात रवि ने घर पर पूजा की और रात करीब नौ बजे बिना बताए घर से निकल गया। जब रात साढ़े दस बजे तक नहीं लौटा तो परिवार वालों ने फोन मिलाया, लेकिन मोबाइल स्विच ऑफ मिला। रातभर परिजनों ने आस-पास तलाश की, पर रवि का कोई पता नहीं चला।

मंगलवार सुबह करीब छह बजे लोगों ने कालोनी के बाहर एक पेड़ से युवक का शव अगौछे से लटका देखा। सूचना पर पहुंचे पिता रामदास ने शव की शिनाख्त अपने बेटे रवि गुप्ता के रूप में की। मौके पर पहुंची रोजा थाना पुलिस ने शव को नीचे उतरवाया और जांच की। मौके से मृतक का मोबाइल और एक जोड़ी चप्पल बरामद की गईं। परिवार ने आशंका जताई कि रवि की हत्या कर शव पेड़ पर लटका दिया गया है। मृतक की पत्नी गुड्डी देवी और तीन माह की मासूम बेटी का रो-रोकर बुरा हाल है। प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार ने बताया कि परिवार की ओर से अभी कोई तहरीर नहीं दी गई है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है, रिपोर्ट से ही मौत का कारण स्पष्ट होगा। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

रोते बिलखते मृतक के परिजन। ● अमृत विचार

जंगल में संदिग्ध हालात में पेड़ पर फंदे से लटका मिला युवक का शव

● परिजनों ने बताई मानसिक मंदित होने की बात

तिलहर, अमृत विचार : क्षेत्र के गांव जोधपुर नवदिया के बाहर जंगल में सोमवार सुबह संदिग्ध परिस्थितियों में एक युवक का शव पेड़ से लटका मिला। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और फॉरेस्ट टीम मौके पर पहुंची और शव को नीचे उतारकर पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक की पहचान गांव बारहा मोहब्बतपुर निवासी प्रीतम (40) पुत्र रामस्वरूप के रूप में हुई। मृतक के भाई ओमप्रकाश ने बताया कि प्रीतम का मानसिक संतुलन ठीक नहीं था। वह 15 अक्टूबर को अपनी बहन कुसुम के घर जोधपुर नवदिया गया था, लेकिन देर शाम तक वापस नहीं लौटा। परिजनों ने रिश्तेदारों और परिचितों के यहां तलाश की, पर कोई सुराग नहीं मिला। 20 अक्टूबर की सुबह ग्रामीणों ने गांव के बाहर जंगल में नाले के पास पेड़ से लटकता शव देखा और तुरंत पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस और फॉरेस्ट टीम ने शव को नीचे उतरवाया और शिनाख्त कराई। पुलिस ने शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। पोस्टमार्टम के बाद परिजनों ने शव का अंतिम संस्कार कर दिया। घटना से परिवार में कोहराम मच गया। बहन कुसुम, मां गंगादेवी, भाई ओमप्रकाश और बसंतलाल का रो-रोकर बुरा हाल है। प्रभारी निरीक्षक राकेश कुमार ने बताया कि युवक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। तहरीर मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

ग्रामीण की संदिग्ध हालात में मौत

शाहजहांपुर, अमृत विचार : मिर्जापुर थाना क्षेत्र के गौटिया बानगांव निवासी धर्मपाल (55) ने एक व्यक्ति के साथ खेत की साझेदारी की थी। उन्होंने खेत पर एक झोपड़ी डाल रखी थी। सोमवार की सुबह धर्मपाल झोपड़ी में बेहोशी की हालत में मिले। परिवार वाले उसे मेडिकल कालेज लेकर आ रहे थे। रास्ते में धर्मपाल की मौत हो गयी। परिवार वाले उसका शव लेकर थाना पर गए। परिवार वालों ने उसने एक व्यक्ति के साथ खेत में साझेदारी थी। वह झोपड़ी में बाबा के रूप में रहते थे। आरोप है कि रविवार की रात में उसने अपने एक दोस्त के साथ शराब पी थी। दोनों में किसी बात को लेकर विवाद हो गया था। आरोप है कि दोस्त ने उसके साथ मारपीट की और बेहोशी की हालत में छोड़कर चला गया था। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि धर्मपाल झोपड़ी में मिला था और शराब आदि का आदी थी। उन्होंने बताया कि तहरीर मिलने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। पुलिस मामले की जांच कर रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मौत का कारण स्पष्ट होगा।

सड़क हादसे में बाइक सवार दो लोग घायल

खुटार, अमृत विचार: क्षेत्र के गांव महुआ मैनिया निवासी गौरव कुमार (19) सोमवार 7:50 बजे खुटार मार्केट से दीपावली पर्व पर खरीदारी करके बाइक से घर लौट रहे थे। तभी नवदिया मंकठ मोड़ के पास अज्ञात वाहन ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। इससे गौरव घायल हो गए और बाइक क्षतिग्रस्त हो गई। दुर्घटना के बाद चालक वाहन लेकर चला गया।सूचना पर पहुंचे 108 एंबुलेंस कर्मी सोमवीर गंगवार, सुशील पांडेय ने घायल को खुटार सीएचसी में भर्ती कराया। जहां डॉक्टर ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। वहीं, उसी रात गांव नवदिया मंकठ निवासी अजय (30) की बाइक में अज्ञात वाहन ने टक्कर मारकर घायल कर दिया था। चर्चा है कि दोनों बाइक आपस में टकरा गई थीं। परिजन भी अस्पताल पहुंच गए। परिजन घायल अजय को 108 एंबुलेंस कर्मी रामेंद्र दुबे, प्रेमपाल की मदद से जिला अस्पताल ले गए। बाइक सवार हेलमेट नहीं पहने थे।

जुआ खेलने से मना करने पर युवक व परिजनों को पीटा

संवाददाता, पुवायां

● झोपड़ी में आग लगाने का आरोप बिस्तर और चारपाई जलकर राख, पुलिस जांच में जुटी

अमृत विचार: क्षेत्र के गांव सदापुर में मंगलवार दोपहर उस समय तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई जब जुआ खेलने से इनकार करने पर कुछ ग्रामीणों ने एक युवक और उसके परिजनों पर हमला कर दिया। मारपीट की इस घटना में एक पक्ष के तीन लोग घायल हो गए। पीड़ित पक्ष ने आरोप लगाया है कि हमलावरों ने उनकी झोपड़ी में आग भी लगा दी, जिससे घर में रखा सामान जलकर राख हो गया।

पीड़ित महिला राजेश्वरी पत्नी श्रीकेशन ने कोतवाली में दी गई तहरीर में बताया कि उनका बेटा मनोज कुमार उर्फ भोजपाल गांव की एक परचून की दुकान पर सामान लेने गया था। इस दौरान गांव के ही राधे, पुष्पेंद्र, गौरव, सौरभ और रामलडैते ने उसे जुआ खेलने के लिए कहा। जब भोजपाल ने इंकार किया तो आरोपियों ने उसके साथ मारपीट शुरू कर दी।

शोर सुनकर जब भोजपाल के भाई दुर्गेश और अक्षय मौके पर पहुंचे और बचाव का प्रयास किया, तो उन्हें भी पीटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया गया। पीड़ित पक्ष का आरोप है कि मारपीट के बाद हमलावरों ने उनकी झोपड़ी में आग लगा दी, जिससे चारपाई और बिस्तर सहित अन्य घरेलू सामान जलकर नष्ट हो गया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और सभी घायलों को उपचार एवं चिकित्सकीय परीक्षण के लिए भेजा। कोतवाली प्रभारी ने बताया कि मामले में तहरीर प्राप्त हुई है। जांच कर आवश्यक वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। गांव में तनाव को देखते हुए स्थिति पर नजर रखी जा रही है।

टेंपो की टक्कर से ई-रिक्शा सवार व्यक्ति की मौत

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

● शाहाबाद में काम करता था बरेली निवासी इरशाद उर्फ लल्लू

अमृत विचार: हरदोई बाईपास चौराहे पर टेंपो ने ई-रिक्शा को टक्कर मार दी, जिससे ई-रिक्शा पर बैठा व्यक्ति घायल हो गया। पुलिस ने घायल को मेडिकल कालेज भेज दिया। जहां डाक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक बरेली का रहने वाला था।

मृतक इरशाद।

बरेली जिले के प्रेमनगर थाना के मोहल्ला अशरफ खां छावनी निवासी 42 वर्षीय इरशाद उर्फ लल्लू हरदोई जिले के शाहाबाद थाना क्षेत्र में एक बिस्कुट फैक्ट्री में काम करता था। वह दो माह पहले काम करने के लिए आए थे। रविवार की सुबह फैक्ट्री में दीपावली की छूट्टी को लेकर वह ई-रिक्शा से शाहाबाद से हरदोई बाईपास चौराहे पर आ रहे थे। हरदोई बाईपास चौराहे से कुछ दूरी पर टेंपो ने एक वाहन को टक्कर मारते हुए ई-रिक्शा को टक्कर मार दी, जिससे इरशाद गंभीर रूप से घायल हो गए, उनके एक पैर पर टेंपो का पहिया चढ़ गया।

पुलिस मौके पर पहुंची और घायल को मेडिकल कॉलेज भेज दिया, जहां डॉक्टर ने उनको मृत घोषित कर दिया। उनके सिर में गुम चोट लगी थी। उसके पैंट की जेब में कागजात मिले। पुलिस ने उसके परिवार वालों को जानकारी दी। परिवार वालों ने आकर शव की शिनाख्त की। मृतक के भाई सिराज ने बताया कि इरशाद की पत्नी ने पहले ही तलाक दे दिया था। उसकी कोई संतान नहीं थी। मृतक पांच भाइयों में दूसरे नंबर का था। आरसी मिशन थाना प्रभारी निरीक्षक धर्मेंद्र कुमार गुप्ता ने बताया कि तहरीर मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

विस्फोटक पदार्थ बनाते समय धमाका, युवक घायल

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: पुवायां थाना क्षेत्र के मझिगवां गांव में मंगलवार दोपहर करीब दो बजे उस समय हड़कंप मच गया जब घर में कथित रूप से विस्फोटक पदार्थ तैयार करते समय तेज धमाका हो गया। हादसे में गांव निवासी शोभित कुमार गंभीर रूप से घायल हो गया।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार शोभित घर में गंधक और पोटाश को पीस रहा था, इस दौरान रासायनिक प्रतिक्रिया से विस्फोट हो गया। धमाके की चपेट में आकर शोभित गंभीर रूप से झुलस गया। परिजनों ने तत्काल 108 एंबुलेंस को बुलाया और घायल युवक को पुवायां के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने हालत गंभीर देखते हुए उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

अस्पताल प्रशासन ने हादसे की जानकारी पुलिस को दी है। पुवायां कोतवाली प्रभारी रवि करन सिंह ने बताया कि अभी तक मामले की जानकारी नहीं मिली है, लेकिन जानकारी मिलते ही जांच कर कार्रवाई की जाएगी। ग्रामीणों में इस घटना को लेकर दहशत का माहौल है। फिलहाल यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि युवक विस्फोटक किस उद्देश्य से तैयार कर रहा था। पुलिस मामले की गंभीरता से जांच में जुटी है।

दिव्यांग महिला समेत दो के साथ सिपाहियों ने की मारपीट

संवाददाता, उचौलिया

● फरियाद लेकर थाने गईं थी दोनों महिलाएं

अमृत विचार : थाना क्षेत्र के गांव मोहनपुर ग्रंट की एक शिक्षित महिला ने थाने में एक सिपाही और महिला सिपाही पर स्वयं व अपनी दिव्यांग बहन को पीटने का आरोप लगाया है। यह घटना भी उस समय हुई जब वह मारपीट के मामले में अपने घायल भाई की फरियाद लेकर थाना पर गई थी।

थाना से तीन किमी दूर मोहनपुर ग्रंट की पौली सिंह पत्नी शाइन सिंह ने बताया कि सोमवार को पड़ोसी गांव रामपुर ग्रंट में उसके भाई दीपक पुत्र मैल्बर्ट सिंह को गांव के प्रशांत उर्फ राजा पुत्र न्यूटन और राज पुत्र सुरेश ने मारपीट कर चोटिल कर दिया था। उसे लेकर अपनी विकलांग बहन नीलू सिंह के साथ वह थाना गई। प्रभारी निरीक्षक मनीष सिंह ने उसकी बात सुनी और रिपोर्ट दर्ज करने को कहकर वह कहीं चले गए। पौली ने बताया कि उसका भाई दर्द से कराह रहा था। उसकी बहन के थाने पर फोटो खींचने से नाराज़ होकर एक महिला सिपाही और एक दूसरे सिपाही ने उससे फोन छीनने की कोशिश की। इस दौरान जब वह बीच-बचाव करने गई और पुलिस को टोका तो दोनों सिपाहियों ने उसे और उसकी विकलांग बहन को पीट दिया। उसके चोटिल भाई को चिकित्सकीय परीक्षण के लिए सीएचसी भेजा गया था। पौली का आरोप है कि वह एक स्कूल में पढ़ाती है और थाना पर इस प्रकार की अभद्रता सहन करने योग्य नहीं है। उसने अपनी पीड़ा से डीएम और एसपी को भी अवगत कराया है। प्रभारी निरीक्षक मनीष कुमार सिंह ने बताया कि मामला उच्चाधिकारियों के संज्ञान में है, जो भी दिशानिर्देश मिलेंगे, उसके अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

हादसे में 3 लोगों की मौत, सीएचसी में हंगामा

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

● लखीमपुर खीरी जिले में हुई घटना, दो मृतक रोजा और एक खीरी का था

अमृत विचार: मोहम्मदी रोड पर पर दीपावली वाले दिन अज्ञात वाहन ने बाइक को टक्कर मार दी,जिससे बाइक पर सवार तीनों लोग घायल हो गए। तीनों घायलों को भावलखेड़ा सीएचसी पर लाया गया। जहां डाक्टर ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। परिवार वालों ने सीएचसी पर हंगामा किया। मृतक रोजा थाना क्षेत्र के रहने वाले है और हादसा लखीमपुर खीरी जिले में हुआ है।

रोजा थाना क्षेत्र के गांव शाहगंज निवासी 45 वर्षीय गुड्डू, अपने चाचा 45 वर्षीय संतराम के साथ अपने साले 35 वर्षीय हरिपाल के गांव गौहनिया थाना पसगवां जिला लखीमपुर खीरी गया था। सोमवार की सुबह पांच बजे तीनों लोग बाइक से थाना पसगवां से रोजा आ रहे थे। मोहम्मदी रोड पर महमदपुर गांव के सामने अज्ञात वाहन ने बाइक को टक्कर मार दी, जिससे बाइक पर सवार तीनों लोग घायल हो गए। चालक वाहन लेकर भा गया।

महमदपुर पुलिस चौकी के सिपाही मौके पर पहुंचे और तीनों घायलों को

भावलखेड़ा सीएचसी पर हंगामा करते परिजन।

भावलखेड़ा पीएचसी पर ले गए। जहां डाक्टर ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। इधर सूचना मिलने पर तीनों के परिजनों सीएचसी पर पहुंच गए। सीएचसी पर कोई सिपाही नहीं मिला। परिवार वालों ने सीएचसी पर हंगामा शुरु कर दिया।

परिवार वालों का आरोप है कि पुलिस वाले तीनों घायलों को भर्ती कराके चले गए थे और डॉक्टर ने तीनों का सही से इलाज नहीं किया। डाक्टरों की लापरवाही के कारण मौत हो गयी है। इस दौरान सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के बाहर जाम लगा दिया।

रोजा थाना प्रभारी राजीव कुमार मौके पर पहुंचे और परिवार वालों को शांत कराया। मृतक हरिपाल की पत्नी उर्मिला ने बताया कि वह पति के साथ कश्मीमर में भट्टे पर मजदूरी करते थे। दीपावली मनाने दो दिन पूर्व घर पर आए थे। रविवार की शाम को गुड्डू और संतराम उसके घर पर आए थे। तीनों लोग अगले दिन सुबह बाइक से रोजा जा रहे थे।

मृतक गुड्डू की पत्नी नन्ही और बेटा शिवा और बेटी वर्षा का रो-रोकर बुराहाल है। मृतक गड्डू मुकरमपुर में एक प्राइवेट बैंक में नौकरी करते थे। मृतक संतराम मजदूरी करते थे और तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार ने बताया कि घटनास्थल लखीमपुर खीरी जिले का है। उन्होंने बताया कि तहरीर मिलने पर पसगवां थाना क्षेत्र में भेज दी जाएगी।

फंदा लगाकर महिला ने दी जान

संवाददाता, जैतीपुर

भिटारा गांव से महिला का शव ले जाते पुलिस कर्मी। ● अमृत विचार

● पति से अलगाव के बाद देवर के साथ रह रही थी महिला

अमृत विचार: थाना जैतीपुर क्षेत्र के गांव भिटारा में गुरुवार सुबह एक महिला ने अज्ञात कारणों से फंदा लगाकर जान दे दी। घटना से पूरे गांव में सनसनी फैल गई। सूचना पर पहुंचे मायके वालों ने हत्या का आरोप लगाते हुए मामले की जांच की मांग की है।

जानकारी के अनुसार, भिटारा गांव निवासी 35 वर्षीय मोनी पति से अलगाव के बाद अपने दो बच्चों के साथ देवर रूपराम के साथ रह रही थी। गुरुवार सुबह करीब 9 बजे मोनी ने अज्ञात कारणों से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। जब परिजनों ने उसे देखा तो घर में चीख-पुकार मच गई। घटना की सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच-पड़ताल की। इसी दौरान थाना मदनापुर के गांव नयागांव निवासी मोनी के पिता साधू मौके पर पहुंचे और बेटी की हत्या का आरोप लगाया। घटना की जानकारी पर क्षेत्राधिकारी ज्योति यादव और थाना प्रभारी गौरव त्यागी भी पहुंचे और आवश्यक पूछताछ की। महिला के दो छोटे बच्चे 10 वर्षीय बेटी रौनक और 7 वर्षीय बेटा रोनश का रो-रोकर बुरा हाल है। थाना प्रभारी गौरव त्यागी ने बताया कि महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। घटना के कारणों की जांच की जा रही है, मौत का कारण रिपोर्ट आने के बाद स्पष्ट होगा।

पुरानी रंजिश को लेकर युवक की पीटकर हत्या

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: कांट क्षेत्र में पुरानी रंजिश को लेकर गांव में युवक की पीटकर घायल कर दिया। मेडिकल कॉलेज के डॉक्टरों ने घायल को मृत घोषित कर दिया। एसपी ने घटना स्थल का निरीक्षण किया।

कांट थाना क्षेत्र के गांव सप्तयारा निवासी 25 वर्षीय ओमकार को मंगलवार की शाम 8 बजे गांव के कुछ लोगों ने घेर लिया और लाठियों से पीट कर घायल कर दिया। परिवार वाले उसे मेडिकल कॉलेज लेकर आए, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना का कारण बताया जाता है मृतक ओंमकार की गांव में पुरानी रंजिश चल रही है, गांव की एक किशोरी को अगवा करके ले गया था। पुलिस ने किशोरी को बरामद कर लिया था और ओमकार को जेल भेज दिया था, ओमकार कई माह पूर्व जेल से जमानत पर छूट कर आया था। इसी रंजिश को लेकर विपक्षियों ने उसकी लाठियों से पीटकर हत्या कर दी। एसपी राजेश द्विवेदी ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और मृतक के परिवार वालों से जानकारी की। उन्होंने बताया कि पुरानी रंजिश को लेकर ओंकार की हत्या की गई है, मौके पर लाठी डंडे बरामद हुए हैं। फॉरेंसिक टीम में जांच करके नमूने लिए है।

घटना स्थल का निरीक्षण करते एसपी।

अमृत विचार
बरेली, बुधवार, 22 अक्टूबर 2025
शाहजहांपुर

NSNH NEW SHRI NARAYANA HOSPITAL
न्यू श्री नारायणा हॉस्पिटल

डा. प्रदीप कुमार
एम.बी.बी.एस., एम.एस.
Retd. ACMO
जनरल सर्जन

डॉ. राम निवास
एम.बी.बी.एस. एम.डी.
(एनेस्थेसियोलॉजिस्ट)
जटिल एवं गम्भीर रोग विशेषज्ञ

डॉ. राजा गुप्ता
जनरल फिजिशियन
डॉक्टर्स पैनल
डा. प्रदीप कुमार — एम.बी.बी.एस., एम.एस. Retd. ACMO जनरल सर्जन
डा. ओमवती — एम.बी.बी.एस., डीजीओ स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
डा. अहमद अली अंसारी — एम.बी.बी.एस. डी.सी.एच. नवजात शिशु एवं बाल रोग विशेषज्ञ
डा. राम निवास — एम.डी. (एनेस्थेसियोलॉजिस्ट) जटिल एवं गम्भीर रोग विशेषज्ञ
डा. कुन्दन कुमार — एम.बी.बी.एस., एमसीएच न्यूरो सर्जन
डा. अमन अग्रवाल — एम.बी.बी.एस., एम.एस., एम.सी.एच. गुर्दा एवं मूत्र रोग विशेषज्ञ
डा. सुजाय मुखर्जी — एम.बी.बी.एस., एम.एस. जनरल सर्जन एवं लैप्रोस्कोपिक सर्जन
डा. निशान्त गुप्ता — एम.बी.बी.एस., एम.एस. (आर्थो) हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ
डा. प्रिया सिंह — एम.बी.बी.एस. डी.जी.ओ, डी.एन.बी. स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
डा. आशुतोष कुमार — एम.बी.बी.एस., एम.एस. हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ
डा. रहबर इदरीश — बी.डी.एस. एमआईडीए लखनऊ मुख दन्त एवं जबड़ा रोग विशेषज्ञ
डा. राजा गुप्ता — बी.ए.एम.एस. ई.एम.ओ.
उपलब्ध सुविधायें :
• सिर एवं चेहरे की समस्त चोट, बुखार, खांसी, मलेरिया, टायफाइड का इलाज • दिमाग एवं रीढ़ की हड्डी के समस्त प्रकार के आपरेशन की सुविधा • दूरबीन विधि द्वारा पेट के सभी प्रकार के आपरेशन की सुविधा • दूरबीन विधि द्वारा गुर्दा (किडनी) एवं मूत्र रोगों के सभी प्रकार के आपरेशन की सुविधा। • छोटे चीरे द्वारा हड्डी के समस्त आपरेशन एवं जोड़ प्रत्यारोपण • घुटना व कूल्हा बदलने की सुविधा उपलब्ध • नॉर्मल डिलीवरी व दर्द रहित प्रसव एवं बच्चेदानी के समस्त प्रकार के आपरेशन • बच्चों के समस्त प्रकार के रोगों को इलाज • वेन्टीलेटर, वाईपाइप युक्त ICU, NICU

डॉ. विवेक कुमार मैनेजिंग डायरेक्टर

ठाकुर हरीश रावत चेयरमैन
समस्त प्रकार के दूरबीन व चीरे वाले ऑपरेशन की सुविधा
24x7 भर्ती एवं एम्बुलेन्स की सुविधा उपलब्ध
24/7 EMERGENCY SERVICES
लाल फाटक शांतिकुंज स्कूल के पास, निकट ओवर ब्रिज, बदायूँ रोड, बरेली
हेल्पलाइन नं. : 8057953868

न्यूज ब्रीफ

दो दुकानों में लगी आग लाखों का नुकसान

शाहजहांपुर, अमृत विचार : सदर बाजार थाना क्षेत्र के मोहल्ला ताजूखेल निवासी आकिब खां की घंटाघर के निकट कनफेक्शनरी और जनरल स्टोर की दुकान है। शनिवार रात नौ बजे दुकान बंद कर घर चले गए। सोमवार सुबह पांच बजे लोगों ने दोनों दुकानों से धुआं निकलते देखा। सूचना पर दुकान मालिक आए। अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी बीएन पटेल दमकल वाहन लेकर पहुंच गए और दोनों दुकानों में लगी आग को बुझाया। शार्ट सर्किट से लगी आग से दोनों दुकानों में लाखों रुपये का सामान जल गया। इधर, मोहल्ला कटिया टोला में रविवार शाम हुड़सन चापस्टिक दी लखनवी रसाई घर में आग लग गई। दमकल वाहन ने आग पर काबू पाया। आग से हजारों रुपये का नुकसान हो गया है।

बहू ने ससुर को पीटा

सिंधौली, अमृत विचार : थाना गेट पर पैसे को लेनदेन को लेकर बहू ने ससुर की चप्पलों से मारपीट की। जिसका वीडियो वायरल हुआ है। सिंधौली क्षेत्र की एक गांव की महिला सोमवार की दोपहर बाद थाना गेट पर आयी। उसका ससुर से पैसे को लेनदेन को लेकर विवाद हो गया। उसने गुस्से में आकर ससुर की चप्पलों से पिटाई कर दी। राहगीरों ने बीच-बचाव कराया। प्रभारी निरीक्षक रवीन्द्र सिंह ने बताया कि उनके संज्ञान में नहीं है।

अवैध कॉलोनियों के जाल में फंसाकर लूट रहे जनता की पूंजी

कालोनाइजरों का धंधा चरम पर, सरकारी स्वीकृति के नाम पर चल रहा फर्जीवाड़ा

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: शहर में अवैध कालोनियों का जाल फैल चुका है। दर्जनों कालोनाइजर जनता की जीवनभर की गाढ़ी कमाई को अपनी जेब में डाल रहे हैं। सरकारी स्वीकृति का झांसा देकर बिना अनुमति के कालोनियां बसाई जा रही हैं और प्लॉट खरीदने वाले बाद में बुनियादी सुविधाओं के लिए दर-दर भटक रहे हैं।

महानगर में इस समय 100 से अधिक अवैध कालोनियां पूरी तरह बस चुकी हैं, जबकि करीब 50 नई कालोनियों में निर्माण कार्य चल रहा है। इन अवैध बस्तियों में न तो नालियों की व्यवस्था है, न पानी निकासी, न सड़कें और न ही बच्चों के खेलने के लिए पार्क। जबकि इन व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी कालोनाइजरों की है। पिछले एक वर्ष में सिटी मजिस्ट्रेट प्रवेंद्र कुमार के नेतृत्व में 46 से अधिक अवैध कालोनियों को ध्वस्त कराया जा चुका है। इसके बावजूद

सिटी मजिस्ट्रेट प्रवेंद्र कुमार।

- तमाम कालोनियां बिना अनुमति के बसाई जा रहीं, लुभावने ऑफर और झूठे दावों का ले रहे सहारा

अवैध प्लॉटिंग पर लगाम नहीं लग पाई है।

अब शहर में अनियोजित विकास रोकने और नियोजन सुनिश्चित करने का जिम्मा शाहजहांपुर विकास प्राधिकरण (एसडीए) को सौंपा गया है। इससे पहले यह कार्य विनियमित क्षेत्र के अंतर्गत आता था। अवैध कालोनियों की असलियत तब सामने आती है जब लोग मकान बनवाने के लिए मानचित्र स्वीकृति के लिए जाते हैं। उन्हें पता चलता है कि कालोनी का लेआउट पास नहीं हुआ, इसलिए नक्शा भी मंजूर नहीं हो सकता। कई रियल एस्टेट कारोबारी किसानों से मौखिक अनुबंध पर प्लॉटिंग कर रहे हैं न रजिस्ट्री होती है, न कोई कानूनी सुरक्षा। इससे न तो लेआउट स्वीकृत हो सकता है और न रेरा में पंजीकरण संभव है।

ककरा और खन्नौत नदी किनारे बुलडोजर कार्रवाई

करीब डेढ़ साल पहले भू-माफियाओं ने नदी किनारे खेती की जमीन पर अवैध प्लॉटिंग शुरू कर दी थी। कार्रवाई में तत्कालीन सिटी मजिस्ट्रेट और नगर निगम टीम ने भारी पुलिस बल के साथ एक दर्जन अवैध निर्माण ध्वस्त किए।

गर्रा और खन्नौत नदी पर लोगों को मिला नोटिस

20 फरवरी 2020 को प्रशासन ने नदियों की जमीन पर कब्जा करने वाले 250 लोगों को नोटिस जारी किए थे। शुरुआत में कार्रवाई तेज रही, लेकिन कई प्रकरण बाद में ठंडे बस्ते में चले गए।

प्रशासन कर रहा है आगाह

सिटी मजिस्ट्रेट प्रवेंद्र कुमार ने नागरिकों से अपील की है कि अवैध कालोनियों में प्लॉट न खरीदें। उन्होंने स्पष्ट कहा कि ऐसी कालोनियों में न तो मकान का नक्शा पास हो सकता है और न ही सड़क, नाली, पार्क, पेयजल व रोशनी जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि शहर में अवैध प्लॉटिंग के खिलाफ अभियान लगातार जारी है और दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी।

प्रधानपति ने चार भाइयों को दौड़ा-दौड़ा कर पीटा

खुटार, अमृत विचार: खुटार ब्लॉक के गांव मुरादपुर निविया खेड़ा निवासी सत्येंद्र कुमार मिश्रा ने बताया कि सोमवार रात वह भाई अरुण कुमार की दुकान पर खड़ा था। रात करीब ग्यारह बजे गांव के प्रधानपति श्रीश वर्मा 10 से अधिक लोगों को लेकर आये और कहा कि मुझे चुनाव नहीं लड़ने दोगे। मैं तुझे बता रहा हूं कि गुंडई की दम पर चुनाव लडूंगा और जीतेंगे भी। जबकि पीड़ित सत्येंद्र कुमार मिश्रा ने प्रधान पति के खिलाफ कोई विरोधभाष की बात कभी नहीं की। प्रधान पति ने कहा कि सूत्रों से पता चला कि तुम मेरे खिलाफ यह बातें कर रहे हो। विरोध करने पर प्रधानपति गाली-गलौज करने लगे और वह साथियों के साथ लाठी-डंडा, धारदार हथियार से हमला कर मारने पीटने लगे। प्रधान पति ने रणनीति बनाकर मारपीट करने आये थे। प्रधान पति अपने साथी विजय शंकर, सत्यम, शिवम, सुंदरम, नीरज वर्मा, पवन वर्मा, आदर्श, अरविंद, प्रदीप सहित कई लोगों के साथ एक राय होकर आये और उसे व उसके भाई नरेंद्र, अरविंद, अरुण कुमार को मारना पीटना शुरू कर दिया। जिससे चारों भाइयों के गंभीर चोटें आई हैं। पुलिस ने घायलों का मेडिकल कराया।

Lifelines OF BAREILLY MEDICAL
अमृत विचार
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें :- 8445507002
फोकस नेत्रालय
राजेन्द्र नगर, बरेली 731-098-7005

बरेली का सबसे बड़ा केवल आँखों के लिए समर्पित प्राइवेट अस्पताल ... नवीनतम AI तकनीक एवं NABH मान्यता के साथ
• 40,000 से अधिक सफल सर्जरी सम्पन्न
• बिना इंजेक्शन एनेस्थीसिया (केवल आई ड्राप्स द्वारा)
• आयुष्मान/सीजीएचएस/ईसीएचएस/सीएपीएफ सभी स्वास्थ्य बीमा मान्य
• कैशलेस ईलाज
बवासीर-भगन्दर-फिशर
पाइलोनाइडल साइनस Mob.: 8126164170

डॉ. वी.के. सिसोदिया
वरिष्ठ क्षार सूत्र विशेषज्ञ
B.Sc., B.A.M.S.
Proctologist (Ayur.), N.D.D.Y., C.C.K.S. (MUMBAI)
मिलें : प्रत्येक रविवार 12 पत्थर रोड, जलालाबाद (शाहजहाँपुर) में
बरेली एनोरक्टल क्लीनिक पता:- करगैना पुलिस चौकी के पीछे, बदायूं रोड, बरेली

डॉ. नितिन अग्रवाल
एम.डी. (गोल्ड मेडिलिस्ट), डी.एम. (कार्डियोलॉजी)
हृदय रोग विशेषज्ञ मो. 9457833777
2D ECHO + TMT
हृदय रोग के लक्षण : ■ घबराहट ■ छाती में दर्द या भारीपन ■ सांस फूलना ■ पैरों में सूजन ■ हाई ब्लडप्रेशर ■ हाई कोलेस्ट्रोल ■ डाइबिटीज (शुगर) ■ सीने या पेट में जलन या दर्द ■ हार्ट अटैक ■ हार्ट फेल
APPLE CARDIAC CARE DR. NITIN AGARWAL'S HEART CLINIC
ए-3, एकता नगर, केयर अस्पताल के सामने, स्टेडियम रोड, बरेली। सम्पर्क करें:- 9458888448
डॉ. प्रेम गंगवार
B.H.M.S. (Homeo Cafe Gwalior)
वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक
मो. 8859517808

सैक्स रोग, शीघ्रपतन, नामर्दी, त्वचा, गुर्दे, कैंसर, जोड़, नस, थायराइड व महिलाओं का बांझपन
होम्योपैथिक से जुड़ी समस्या व दवाईयों के लिये निःशुल्क सम्पर्क करें।
अत्याधुनिक जर्मन दवाईयों द्वारा कुशल डाक्टर के मार्गदर्शन में इलाज
11 वर्षों का अनुभव प्रेम जर्मन होम्योपैथिक
रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी के सामने, पीलीभीत बाईपास, एच.के. टावर, बरेली

डॉ. दर्शन मेहरा
एम.बी.बी.एस., एम.डी. (मेडिसिन)
Cardiopulmonologist, Diabetologist & Intensivist
आयुष्मान एवं TPA कैशलेस सुविधा उपलब्ध
डायबिटीज, थायराइड, डेंगू, मलेरिया, टी.बी., पेट रोग, गठिया, फेफड़ों के रोग, तेज बुखार, एलर्जी, जटिल रोगों का उचित इलाज
दर्पिन हॉस्पिटल
संजय नगर रोड, पीलीभीत बाईपास, बरेली
हैल्प लाइन – 8979252222, 9457663289

डॉ. हारिस अंसारी
एम.एस., एम.सी.एच. (यूरोलॉजी)
Consultant Urologist & Andrologist
गुर्दा, प्रोस्टेट, पेशाब की थैली की पथरी व कैंसर सर्जन
• प्रोस्टेट (गदूद का आपरेशन) (TURP) • गुर्दे की पथरी का आपरेशन (PCNL) • गुर्दे की नली (यूरेटस) की पथरी का ऑपरेशन (URSL) • पेशाब के समस्त प्रकार के रोगों का इलाज
कैशलेस, इंश्योरेंस, TPA व ESI आयुष्मान से अनुबन्धित अस्पताल
डॉ. एम. खान हॉस्पिटल
मल्टी स्पेशलिटी व क्रिटिकल केयर सेन्टर स्टेडियम रोड, निकट सेंट फ्रांसिस स्कूल, बरेली
समय दोपहर 12 से शाम 4 बजे तक हेल्पलाईन 9837549348, 98978382286

तांत्रिक की हत्या कर शव पुआल के ढेर में छुपाया

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: कटरा में एक तांत्रिक की हत्या करके शव को विद्युत केंद्र के पीछे पड़े पुआल में दबा दिया। सूचना पर कटरा पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पुआल के ढेर से निकाला। शव कई दिन पुराना बताया जाता है और शव सड़ गया था। पुलिस लाइन से फॉरेंसिक टीम ने मौके पर पहुंची और जांच की। सीओ तिलहर ज्योति यादव ने मौका मुआयना किया और लोगों से जानकारी की।

कटरा में विद्युत केंद्र के पीछे 60 वर्षीय अनिल कश्यप उर्फ अन्नू कई

- फॉरेंसिक टीम ने की जांच, तांत्रिक के घर का पता नहीं

साल से झोपड़ी डालकर रहते थे। वह तांत्रिक थे और झाड़फूक किया करते थे। उनके झोपड़ी के पड़ोस में पुआल के ढेर लगे हुए है।

मंगलवार की शाम लोगों के पुआल के पास काफी दुर्गंध आयी। लोगों ने झोपड़ी में जाकर देखा तो अन्नू तांत्रिक नहीं दिखायी दिए। लोगों ने कटरा थाना को सूचना दी। प्रभारी निरीक्षक जुगुल किशोर तांत्रिक की झोपड़ी के पास पहुंचे। उनको पुआल के अंदर से दुर्गन्ध आई। उन्होंने लोगों की मदद से

मौके पर जांच कर रही फॉरेंसिक टीम

पुआल के ढेर को हटाया तो तांत्रिक का शव मिला। पुलिस का मानना है कि शव कई दिन पुराना है और शव सड़ गया था।

सीओ तिलहर ज्योति यादव ने मौका मुआयना किया। उन्होंने आस-पास के लोगों से जानकारी की। लोगों ने बताया कि तांत्रिक अनिल कश्यप कई साल से झोपड़ी में रहता था और झोपड़ी में ही झाड़ फूंक का करता था। लोगों ने बताया कि तांत्रिक का कहां का रहने वाला था, कोई जानकारी नहीं है। तांत्रिक के शरीर में चोट के निशान थे और गले में निशान थे। आशंका है तांत्रिक की गला दबाकर हत्या की गई, इधर पुलिस लाइन से फोरेंसिक टीम पहुंची और जांच कर नमूने लिए। प्रभारी निरीक्षक जुगुल किशोर ने बताया कि तांत्रिक के बारे में पता किया जा रहा है कि कहां का रहने वाले थे। उन्होंने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मौत का कारण स्पष्ट होगा।

मेडिकल कॉलेज को 30 सीटों की और मिली मान्यता

शाहजहांपुर, अमृत विचार: राजकीय मेडिकल कालेज में एमबीबीएस के बाद एमडी करने के लिए सीटों की संख्या बढ़ा दी गयी है। नेशनल मेडिकल कालेज कमीशन ने कालेज में 30 सीटों की मान्यता दी है। इसकी प्रवेश की प्रक्रिया अगले माह से शुरू होगी। जिगनेरा स्थित राजकीय मेडिकल कालेज में एमबीबीएस, डीएनबी, एमडी के अलावा बीएससी नर्सिंग व पैरामेडिकल के आठ कक्षाओं का संचालन होता है। गत वर्ष कालेज में एमडी की 23 सीटों को लेकर प्रवेश हुए थे। प्राचार्य डा राजेश कुमार ने बताया कि नवंबर माह में प्रवेश की प्रक्रिया को शुरू किया जाएगा।

विधायक के पिता के निधन पर जताया शोक

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: जलालाबाद विधायक हरिप्रकाश वर्मा के पिता सियाराम वर्मा का बीमारी के कारण निधन हो गया। इस दुःखद समाचार से पूरे क्षेत्र में शोक की लहर फैल गई। मेयर अर्चना वर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष केसी मिश्रा, डीसीबी बैंक चेयरमैन डीपीएस राठौर समेत तमाम नेताओं ने उनके आवास पर पहुंच कर श्रद्धांजलि अर्पित की और परिवार को ढांढस बंधाया।

समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष एवं पूर्व चेयरमैन तनवीर खान विधायक हरिप्रकाश वर्मा के बाड़जई पेशावरी स्थित आवास पहुंचे और शोक संतृप्त परिवार से मिलकर संवेदना व्यक्त की। उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति और परिवार को दुःख सहने की

विधायक हरिप्रकाश वर्मा के पिता सियाराम वर्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करतीं मेयर अर्चना वर्मा व डीपीएस राठौर। ● अमृत विचार

- नेताओं ने पहुंचकर दी श्रद्धांजलि

शक्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। इस दौरान पूर्व विधायक राजेश यादव, पूर्व मंत्री अवधेश कुमार वर्मा, पूर्व विधायक रोशन लाल वर्मा, महिला सभा की राष्ट्रीय सचिव गायत्री वर्मा, सपा नगर विधानसभा अध्यक्ष अतिउल्ला सिद्दीकी, और महानगर अध्यक्ष चौधरी रामकुमार भोजवाल सहित अनेक समाजवादी नेता मौजूद रहे।

नेताओं ने कहा कि सियाराम वर्मा एक सादगीपूर्ण और प्रेरणादायी व्यक्तित्व थे, जिनके निधन से समाज में अपूरणीय क्षति हुई है।

वरुण अर्जुन कॉलेज में विश्व आयोडीन कमी दिवस मनाया

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज एवं रोहिलखंड अस्पताल में मंगलवार को विश्व आयोडीन कमी दिवस बड़े ही भव्य और सार्थक तरीके से मनाया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य आमजन, विशेषकर ग्रामीण और शहरी गरीब तबकों को आयोडीन की कमी से होने वाले स्वास्थ्य जोखिमों और उसके प्रभावी समाधान के बारे में जागरूक करना रहा। यह आयोजन कॉलेज के ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्र फील नगर और शहरी स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्र अकर्रा रसूलपुर में एक साथ संपन्न हुआ। सामुदायिक चिकित्सा विभाग के परास्नातक छात्रों और प्रशिक्षु चिकित्सकों ने विभागाध्यक्ष डॉक्टर धर्मेंद्र कुमार गुप्ता के निर्देशन में पूरे कार्यक्रम का संचालन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानवर्धक पोस्टर प्रदर्शन और संवाद से हुई। छात्रों ने ग्रामीणों को सरल भाषा में समझाया कि आयोडीन हमारे शरीर के लिए कितना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि आयोडीन थायरॉयड ग्रंथि द्वारा हार्मोन बनाने के लिए जरूरी पोषक तत्व है, जिसकी कमी से गले में सूजन यानी गण्डमाला, लगातार थकान, सुस्ती, गर्भवती महिलाओं

फील नगर में ग्रामीणों को आयोडीन की कमी के प्रति जागरूक करते वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज के छात्र और शिक्षक। ● अमृत विचार

में गर्भपात या मृत प्रसव तथा बच्चों में मानसिक व शारीरिक कमजोरी जैसी गंभीर बीमारियां उत्पन्न होती हैं। छात्रों ने महिलाओं, युवाओं और बच्चों को विशेष रूप से यह बताया कि आयोडीन की कमी से बचने का सबसे सस्ता और आसान तरीका आयोडीन युक्त नमक का उपयोग है।

कार्यक्रम में भारत सरकार की राष्ट्रीय आयोडीन कमी विकार नियंत्रण योजना की जानकारी भी दी गई। उपस्थित लोगों को बताया गया कि देश में हर घर तक आयोडीन युक्त नमक का प्रयोग सुनिश्चित करना सरकार का प्रमुख जनस्वास्थ्य लक्ष्य है। विभागाध्यक्ष डॉक्टर धर्मेंद्र कुमार गुप्ता ने कहा कि भारत में करीब तीस प्रतिशत स्कूली बच्चों में आयोडीन की कमी पाई जाती है। इसे रोकने के लिए जनजागरूकता और जांच बेहद आवश्यक है। उन्होंने बताया कि विभाग लोगों में जागरूकता के साथ-साथ थायरॉयड जांच और प्रारंभिक उपचार की दिशा में भी काम कर रहा है।

कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉक्टर कर्नल रविंद्र नाथ शुक्ला ने कहा कि बदलती जीवनशैली और जानकारी की कमी के चलते आयोडीन की कमी एक गंभीर जनस्वास्थ्य समस्या बन चुकी है। इसका असर सिर्फ शरीर पर नहीं बल्कि मस्तिष्क के विकास पर भी पड़ता है । उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य है कि समाज के हर वर्ग तक इस समस्या की जानकारी और उसका समाधान पहुंचाया जाए।

संस्थान के कुलाधिपति डॉक्टर केशव कुमार अग्रवाल, सह कुलाधिपति डॉक्टर अशोक कुमार अग्रवाल और कुलपति डॉक्टर किरन अग्रवाल ने संयुक्त रूप से कहा कि वरुण अर्जुन विश्वविद्यालय समाज केंद्रित शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के माध्यम से जनहित में निरंतर कार्य कर रहा है। संस्थान का लक्ष्य है कि यहां के विद्यार्थी न केवल कुशल चिकित्सक बनें बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक भी बनें। जागरुकता अभियान को रोचक और प्रभावी बनाने के लिए छात्रों ने आकर्षक नारे और प्रश्नोत्तरी सत्र आयोजित किए, जिनमें स्थानीय लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। लोगों ने अपने सवाल पूछे और आयोडीन की महत्ता को समझा। कार्यक्रम का समापन सभी प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस अवसर पर उपस्थित शिक्षकों ने संकल्प लिया कि भविष्य में भी ऐसे सामाजिक कार्यक्रम जारी रहेंगे, ताकि गांव और शहर दोनों के लोगों का स्वास्थ्य स्तर बेहतर हो सके और भारत को आयोडीन की कमी से मुक्त बनाया जा सके।

- ग्रामीण और शहरी समुदायों को आयोडीन की कमी से होने वाले रोगों के प्रति किया जागरूक

दीपावली पर रोशन हुए घर-आंगन, उल्लास के साथ मनाया पर्व

रोशनी और खुशियों का पर्व दीपावली जनपद में धूमधाम से मनाया, लोगों ने विधि-विधान से मां लक्ष्मी व भगवान गणेश का किया पूजन

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार: रोशनी और खुशियों का त्योहार दीपावली सोमवार को हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। लोगों मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की विधि-विधान से पूजा की। लोगों के द्वारा आशियाने को दीये और झालरों से सजाया गया था। दिवाली पर शहर की गलियां रंग-बिरंगी रोशनी में जगमगा उठीं। झिलमिलाहट ऐसी लग रहा था कि मानों आसमान के तारों को मुंह चिढ़ा रही हों।

दीपोत्सव मनाने के लिए लोगों ने कई दिन पहले से ही तैयारी शुरू कर दी थी। साफ-सफाई और रंगाई-पोताई के बाद असंख्य दीप लोगों ने अपने घरों पर जलाए। कहीं कोई कोना ऐसा नहीं दिखाई पड़ रहा था जहां अंधेरा रहा हो। मिट्टी के दीये की लौ से हर कोना प्रकाशमान हो उठा। लोगों ने विद्युत झालरों को भी भवनों पर लगाया गया था। उनकी झिलमिलाहट देख लोगों की खुशी परवान चढ़ रही थी। कुछ चौराहों को भी झालरों से सजाया गया था। हर ओर प्रकाश ही प्रकाश नजर आ रहा था। तमाम लोगों ने मिट्टी के दीये की जगह मोमबत्ती भी जलाकर प्रकाश किया। मिट्टी का मकान हो अथवा टिनशेड हर जगह प्रकाश ही प्रकाश ही नजर आ रहा था। खेत-खलिहान और घूर पर भी दीपक जलने से वहां भी प्रकाश के अलावा और कुछ नजर नहीं आ रहा था। विद्युत झालर रंग-बिरंगे प्रकाश बिखर रहीं थी। लाइटों के कतारबद्ध पुंज से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कोई प्राकृतिक व्यवस्था ऐसी हो जहां से यह निकल रहा है। शहर के साथ ग्रामीण अंचलों में भी दीपावली हर्षोल्लास से मनाई गई। घरों व प्रतिष्ठानों में मिट्टी के दीये और इलेक्ट्रॉनिक झालरों से भव्य सजावट की गई। शाम को लक्ष्मी-गणेश का पूजन कर प्रसाद बांटा गया। लोगों ने अपने घरों व व्यवसाइयों ने दुकानों और प्रतिष्ठानों में पूजन-अर्चना की। बाजारों में दिन-भर चहल-पहल रही।

दीपावली पर घर में लक्ष्मी और गणेश जी का पूजन करते दंपती। ● अमृत विचार

मोहल्ले के लोग बच्चों के साथ जलाते पटाखे। ● अमृत विचार

घरों के आगे माता पिता के साथ पटाखे जलाते बच्चे। ● अमृत विचार

दीपावली पर जलता अनार बम। ● अमृत विचार

खील बताशे संग मिठाई व लड्डू का भोग लगाया

दीपावली पर शाम लोगों ने अपने-अपने घरों में मां लक्ष्मी व भगवान गणेश की विधि विधान से पूजा की। मिट्टी के दीपक जलाए गए। खील बताशे के साथ मिठाई तथा लड्डू का भोग लगाया। फल फूल भी चढ़ाए गए। व्यवसाइयों ने खाता-बही की पूजा कर्मकांडी ब्राह्मणों से कराई। कम्प्यूटर युग होने के बाद भी लोगों ने यह पूजा की। कम्प्यूटर पर भी माला-फूल चढ़ाकर लोगों ने प्रतीकात्मक तिलक लगाया। इस दौरान महिलाओं और बच्चों में प्रसन्नता देखी जा रही थी। इसके साथ ही लोगों ने एक दूसरे को दीपावली की शुभकामना देकर प्रसाद का वितरण किया।

ब्रीफ न्यूज

बिल्सी के मंदिरों में आज वितरित होगा अन्नकूट प्रसाद

बिल्सी, अमृत विचार : दीपावली के बाद मनाए जाने वाला पर्व गोवर्धन पूजा के साथ नगर के मंदिरों में अन्नकूट के प्रसाद का वितरण करने की परंपरा लंबे समय नगर में चली आ रही है। इस दिन नगर के सभी प्रमुख मंदिरों में अन्नकूट का प्रसाद का वितरण किया जाता है। इस बार बुधवार को यहां के मंदिरों में प्रसाद का वितरण किया जाएगा।

दो पक्षों में मारपीट, चार लोग घायल, रिपोर्ट दर्ज

इस्लामनगर, अमृत विचार : इस्लामनगर क्षेत्र के गांव राजथल में पुरानी रंजिश के चलते दो पक्षों में विवाद हो गया। कहासुनी के बाद लाठी-डंडे चल गए। मारपीट में महिलाओं सहित एक ही परिवार के चार लोग घायल हो गए। सभी का मेडिकल परीक्षण कराया गया है। इस्लामनगर पुलिस ने दीपचंद्र, रिंकू, जसवीर, छोटे और प्रमोद के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है।

शराब के साथ दो युवक गिरफ्तार, भेजा जेल

बदायूं, अमृत विचार : उझानी कोतवाली की कछला चौकी पुलिस गश्त कर रही थी। पुलिस ने दो लोगों को रोककर उनकी तलाश ली। उनके पास से बोरियों में रखी देशी शराब की दो पेटियां बरामद हुईं। एक ने अपना नाम संजीव और दूसरे ने श्रीकृष्ण बताया। दोनों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

दीपावली पर पांच करोड़ रुपये के बिके पटाखे

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- जिले के लोगों ने महंगाई को दरकिनार कर धूमधाम से मनाई दीपावली
- जिला प्रशासन की ओर से 140 लोगों को जारी किए थे अस्थाई लाइसेंस

अमृत विचार: दीपावली जनपद में हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। लोगों ने महंगाई को दरकिनार कर जमकर आतिशबाजी जलाई। दीपावली के जश्न में करीब पांच करोड़ के अधिक पटाखे फूंक डाले। जिला प्रशासन द्वारा 140 से लोगों को अस्थाई लाइसेंस जारी किये गये थे। त्योहार के दिन पटाखे खरीदने वालों की भीड़ जुटी रही। शाम को मां लक्ष्मी और भगवान गणेश के पूजन के बाद पटाखे फोड़ने का जो सिलसिला शुरू हुआ। वह देर रात तक जारी रहा।

दीपावली पर्व पर पटाखा बिक्री के लिए जिला प्रशासन द्वारा करीब 140 कारोबारियों को पटाखे बेचने के लाइसेंस जारी किए गए थे। शहर में एचपी फील्ड में पटाखा बाजार लगाया गया था। जहां करीब 82 दुकानें लगाई गई। इसके अलावा घौंचा पुल के पास भी पटाखा की दुकानें लगाई गईं थी। इन स्थानों के अलावा शहर के मोहल्लों की गलियों में भी खुली दुकानों पर पटाखों की बिक्री हुई। पटाखा बाजार और दुकानों से लोगों ने जमकर आतिशबाजी की खरीदारी की थी। पटाखों को लेकर बच्चों में काफी उत्साह दिखाई दिया। दीपावली की देर रात भी लोगों ने खूब पटाखे खरीदे। रविवार को छोटी दीपावली की रात से ही लोगों ने आतिशबाजी शुरू कर दी थी। सोमवार को दीपावली पर जमकर आतिशबाजी की गई। बचे हुए पटाखे मंगलवार रात भी लोगों ने चलाए। उद्योग व्यापार मंडल के पदाधिकारी वीरेंद्र धींगड़ा ने बताया कि इस बार कारोबार अच्छा रहा। व्यापारी वर्ग खुश नजर आ रहा था। पांच करोड़ से अधिक पटाखे जिले में बिके हैं।

दीपावली बाद आकाश में फैली स्मॉग की चादर

दीपावली पर आतिशबाजी के धुएं के चलते आकाश में स्मॉग की चादर फैल गई। एक्यूआई 325 दर्ज किया गया। सोमवार की देर रात 10 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चली हवा ने प्रदूषण से काफी हद तक राहत दिलाई और एक्यूआई 172 पर पहुंच गया। कृषि विभाग के अधिकारियों अनुसार आने वाले दिनों मौसम में स्मॉग की स्थिति ओर बदतर होने की आशंका है। कृषि अधिकारी मनोज रावत ने बताया कि दीपावली की रात को हवा चलने से एक्यूआई कम रहा है। जैसे ही मौसम में सर्दी का असर बढ़ेगा, वैसे ही स्मॉग की चादर आसमान में बिछ जाएगी।

पटाखा जलाने पर महिला से मारपीट

इस्लामनगर, अमृत विचार : थाना इस्लामनगर क्षेत्र की नगर पंचायत रुदायन के वार्ड पांच में पटाखा जलाने को लेकर विवाद के बाद महिला से मारपीट का मामला सामने आया है। पीड़िता गुड्डो पत्नी अर्जुन ने पुलिस को दी तहरीर दी। जिसमें बताया कि रात करीब 10 बजे मोहल्ले के युवक छपका पुत्र शैदोव खान ने उनके नाती के हाथ में पटाखा जलाकर जला दिया। शिकायत की तो छपका ने बिना कुछ सुने महिला पर हमला कर दिया और ईंट मार दी। हमले में महिला और उनका बेटा सोनू गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

पुलिस परेड ग्राउंड में जले 35 हजार दीये

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार: पुलिस परेड ग्राउंड में दीपोत्सव मनाया गया। ग्राउंड में सजावट करने के साथ ही 35 हजार दीप जलाए गए। इस दौरान स्कूली बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। एसएसपी ने कार्यक्रम में सहयोग करने वाले कर्मचारियों और स्कूली बच्चों को पुरस्कृत किया।

दीपावली पर्व पर पुलिस लाइन परेड ग्राउंड में दीपोत्सव का आयोजन किया। पूरे परेड ग्राउंड को 35,000 दीपो से रोशन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ बृजेश कुमार सिंह पत्नी और बच्चों के साथ उपस्थित रहे। एसएसपी के साथ अपर पुलिस अधीक्षक नगर विजयेन्द्र द्विवेदी, अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण डॉ हृदयेश कठेरिया तथा क्षेत्राधिकारी नगर रजनीश कुमार उपाध्याय सहित उझानी, बिसौली, बिल्सी सहसवान के क्षेत्राधिकारी उपस्थित रहे। इनके अलावा पुलिस उपाधीक्षक प्रशिक्षु गौरव उपाध्याय व प्रतिसार निरीक्षक पुलिस लाइन सहित अन्य प्रशासनिक अधिकारीगण एवं पुलिस परिवार के सदस्यगण उपस्थित रहे । पुलिस मॉडर्न स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में सहयोग करने वाली टीम और बच्चों को एसएसएपी ने नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

पुलिस परेड ग्राउंड में दीपक जलाते बच्चे। ● अमृत विचार

पत्नी के साथ दीपक जलाते एसएसपी।

बदायूं डायरी

हर्षोल्लास के साथ मनाई दीपावली

रुदायन, अमृत विचार : नगर में दीपावली का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। दीपावली पर नगर पंचायत द्वारा नगर में बेहतर सफाई व्यवस्था की गई । हाईमास्ट, स्ट्रीट लाइटों की बेहतर व्यवस्था से नगर में रोशनी का अद्भुत नजारा देखा गया। साथ ही चौराहों, तिराहों पर रंगोली सजाई गई। साथ ही स्वागत द्वार भी बनाए गए। दीपावली पर नगर पंचायत द्वारा की गई व्यवस्था पर भाजपा नेता मुरली मनोहर गुप्ता ने नगर पंचायत चेयरमैन सीमा चौधरी की प्रशंसा की।

घरों और प्रतिष्ठानों पर हुआ लक्ष्मी व गणेश का पूजन

उसहैत, अमृत विचार : नगर में दीपावली त्योहार धूमधाम से मनाया गया। लोगों ने घर और प्रतिष्ठान रंग बिरंगी झालरों से सजाया। शाम को दीपक और झालर जलते ही घर का कोना जगमगा उठा। लोगों ने अपने प्रतिष्ठानों और घरों में भगवान गणेश और मां लक्ष्मी का पूजन किया। वहीं श्रीकालसेन बाबा मंदिर, थाना परिसर स्थित शिव मंदिर, पक्का पुल हनुमान मंदिर, अस्तल मंदिरों में भी सजावट की गई थी। नगर के साथ दीपावली का त्योहार ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोगों ने हर्षोल्लास के साथ मनाया।

बिल्सी में धूमधाम से मनाई दीपावली, जमकर की आतिशबाजी

बिल्सी, अमृत विचार : नगर में सोमवार की रात दीपों का पर्व दीपावली धूमधाम से मनाया गया। लोगों ने देर रात तक जमकर आतिशबाजी छोड़ी। मिष्ठान की दुकानों पर लोगों की भारी भीड़ रही। कई दिनों से लोगों द्वारा दीपावली की तैयारियां की जा रहीं थीं। शाम को लोगों ने सबसे पहले मंदिरों में पहुंचकर भगवान गणेश और लक्ष्मी जी की पूजा की। साथ ही मंदिरों में दीपक जलाएं। बाद में लोगों ने अपने प्रतिष्ठानों को झालरों और बिजली से चलने वाले अन्य उपकरणों से सजाया। दिन ढलते ही आतिशबाजी का नजारा शुरू हो गया। आतिशबाजी से आकाश में अजब नजारा देखने को मिल रहा था। देर रात तक यह सिलसिला जारी रहा। आतिशबाजी ने आकाश में कई तरह के रंग बिखेरे। लोगों ने एक-दूसरे को शुभकामनाएं दीं। दीपावली के मद्देनजर सभी स्थानों पर कोतवाली पुलिस की भी खास चौकसी रही। ग्रामीण क्षेत्र में लोगों ने काफी कम संख्या सोमवार की रात इस त्यौहार को मनाया।

चौकीदारों को थाने में बांटी मिठाई दीपावली पर दी शुभकामनाएं

कुंवर गांव,अमृत विचार : सोमवार को कुंवर गांव थाना प्रभारी वेदपाल सिंह ने क्षेत्र के सभी चौकीदारों को थाना परिसर में मिठाई वितरण कर दीपावली की शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा थाने का चौकीदार पुलिस की रीढ़ हड्डी की तरह होता है । वह हमेशा पुलिस को गोपनीय सूचना गांव में खुराफाती व्यक्तियों की जानकारी देता है। थाना प्रभारी वीपी सिंह ने चौकीदारों के साथ दीपावली का पर्व मनाया। थाना प्रभारी ने कहा कि सभी क्षेत्रवासी दीपावली, धनतेरस,भैया दूज सौहार्द पूर्ण मनाएं पुलिस हमेशा उनके साथ है । इस मौके पर थाने में रंगोली, और रंग बिरंगी झालर लगाकर दुल्हन की तरह सजाया गया।

दीपावली पर नगर पालिका प्रशासन ने सजाई रंगोली

बदायूं, अमृत विचार : दीपावली के पावन अवसर पर नगर पालिका चेयरमैन फात्मा रजा की पहल से पूरा शहर दीपोत्सव की रौनक में सराबोर नजर आया। शहर के हिन्दू बाहुल्य इलाकों और प्रमुख मंदिरों और चौराहों पर आकर्षक रंगोलियां सजाई गईं और दीयों व आधुनिक स्ट्रीट लाइटें लगाई गईं। नगर पालिका की ओर से हर प्रसाद मंदिर, बिरुआबाड़ी मंदिर, गौरीशंकर मंदिर, नगला मंदिर, पंजाबी मंदिर सहित लावेला चौक, इंदिरा चौक, पुलिस लाइन, संतोष सिंह तिराहा, डीएम चौराहा और ओवरब्रिज के नीचे विशेष रूप से दीपोत्सव की रंगोली बना कर सजावट की गई।

गायत्री परिवार ने ककोड़ा मेले में मनाई दीपावली

गंगा तट पर दीप प्रज्वलित करते गायत्री परिवार के लोग। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में रुहेलखंड के प्रसिद्ध मिनी कुंभ मेला ककोड़ा में गंगा तट पर दीपावली का पावन पर्व दिव्य श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ मनाया गया। दीपों की रोशनी से गंगा किनारा आलोकित हो उठा। श्रद्धालुओं ने गंगा तट पर दीप प्रज्वलित कर देश, समाज और मानवता के कल्याण की मंगल कामना की।

कार्यक्रम की शुरुआत गायत्री महामंत्र के सामूहिक जप और दीप आरती से हुई। पूरे वातावरण में भक्ति, आनंद और देशभक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिला। गंगा तट दीपमालाओं से सजा हुआ स्वर्गिक प्रतीत हो रहा था। स्काउट संस्था के पूर्व जिला ट्रेनिंग कमिश्नर संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि गौ, गंगा, गायत्री और गीता—ये भारत की सनातन संस्कृति की चार आधारशिलाएं हैं। उनकी रक्षा और सम्मान से भारत विश्व गुरु बनेगा। समेकित शिक्षा के शिक्षक सुरेश मिश्रा, समाजसेवी सत्यवीर सिंह यादव, हेमंत शर्मा, विजय, सौरभ, दिनेश बाबू, झंझान सिंह, देव कुमार आदि मौजूद रहे।

सड़कों पर नहीं दिखी भीड़, सूने रहे बाजार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : एक दिन पहले तक भीड़भाड़ वाली सड़कें मंगलवार को सुनसान दिखीं। दीपावली त्योहार के दूसरे दिन शहर में बाजार बेरंग रहा। सड़कों पर सन्नाटा और बाजारों में केवल दुकानदार ही दिखे। बसों और ट्रेनों पर कुछ यात्री नजर आए।

मंगलवार को शहर में सड़कों पर भीड़ भाड़ की जगह सन्नाटा पसरा रहा। शहर के सबसे व्यस्ततम चौराहा रोडवेज पर दिल्ली जाने वाली बसें तो दिखीं लेकिन अन्य जिलों को जाने वाली बसें नहीं दिखीं। रोडवेज पर सन्नाटा छाया रहा। बाजारों में मुख्य बाजार आज बेरंग रहा। सुभाष चौक से रजी चौक तक सड़क खाली रही। जबकि यह क्षेत्र हर समय भीड़ से पटा रहता है। शनिवार और रविवार को देर रात तक पूरा बाजार गुलजार रहा।

शहर के लालपुल क्षेत्र में मुख्य चौराहे से लेकर मथुरिया चौक तक पूरी सड़क खाली रही। मुख्य बाजार से टिकट गंज की ओर जाने वाली सड़क सुनसान रही। रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म एक पर भीड़ नहीं दिखी। बेंच खाली रहीं। कुछ यात्री बैठे नजर आए। कस्बों और गांवों से आने वाले वाहन भी कहीं नजर नहीं आए। जिससे चौक चौराहे खाली पड़े रहे। दातागंज बिसौली और उझानी को आने जाने वाले निजी वाहन बहुत कम संख्या में दिखाई दिए। उसावां और उसहैत रोड पर बसों के अलावा अन्य वाहन नहीं चले। लोगों का कहना है कि इस बार दीपावली 20 और 21 को मनाई जा रही है इसलिए कहीं भी भीड़ नहीं है।

चार जुआरी गिरफ्तार, 10 बाइकें बरामद

उसहैत, अमृत विचार : उसहैत पुलिस ने जुआ खेलते चार लोगों को पकड़ा। जिनके पास से ताश की गड्डी, 8050 रुपये और दस बाइकें बरामद की। आरोपियों के खिलाफ जुआ अधिनियम के अंतर्गत रिपोर्ट दर्ज की गई और बाइकों को सीज किया गया है।

पुलिस मंगलवार सुबह कटरा सहादतगंज क्षेत्र में बंधा के पास गश्त कर रही थी। थाना प्रभारी विक्रम सिंह, उपनिरीक्षक अरविंद कुमार, विश्वजीत, धर्मेंद्र कुमार, विकास कुमार, सिदार्थ कुमार एक बाग में पहुंचे। जहां 14 लोग जुआ खेल रहे थे। पुलिस की गाड़ी के हूटर की आवाज सुनकर जुआरियों में भगदड़ मच गई। जुआरी अपनी बाइकें छोड़कर भाग गए। पुलिस ने मौके से चार जुआरी गांव भकरौली निवासी अमित पुत्र चिरौंजी लाल, सिकंदराबाद निवासी जसवंत पुत्र मुरारी, गांव खिरिया मधुकर निवासी बबलू पुत्र राधेश्याम और खेड़ा जलालपुर निवासी सलीम पुत्र निसार खां को पकड़ लिया और बाकी जुआरी भाग गए।

झोपड़ी और दुकान में लगी आग

बदायूं, अमृत विचार : कोतवाली सहसवान क्षेत्र के गांव बाजपुर में झोपड़ी में आग लग गई। हादसे में 65 हजार रुपये नगद और एक ट्रॉली मक्का जलकर रख हो गई। गांव निवासी नरेश कश्यप अपने परिजनों के साथ सोमवार रात लगभग 9 बजे त्यौहार मना रहे थे। इसी दौरान किसी वजह से उनकी झोपड़ी में आग लग गई। आग से फर्नीचर, कपड़े और अन्य सामान जल गया। रुपये और मक्का भी आग की चपेट में आकर जल गए। ग्रामीणों ने आग पर काबू पाया। वहीं बिल्सी में भी आगजनी हुई। कस्बा निवासी नीरज देवल कपड़ों की दुकान चलाते हैं। रात लगभग 10 बजे उनकी दुकान में आग लग गई। कपड़े जलकर राख हो गए। लोगों ने आग बुझाई। तब तक लगभग दो लाख रुपये के कपड़े जल गए थे। इसके अलावा दहगवां में टेलर की दुकान में कपड़े भी जल गए।

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 22 अक्टूबर 2025

ब्रीफ न्यूज

डीसीएम की टक्कर से घायल की जान गई

बदायूं, अमृत विचार : सड़क हादसे में घायल ई-रिक्शा सवार युवक की इलाज के दौरान मौत हो गई। हादसे में एक व्यक्ति की मौके पर मौत हुई थी जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हुआ था। हादसा रविवार सुबह अलापुर क्षेत्र में हुआ था। कस्बा सखानू के वार्ड 9 निवासी मशरूर अहमद और मोहम्मद आजाद सामान बेचने के लिए अलापुर की साप्ताहिक बाजार जा रहे थे। रास्ते में गांव संजरपुर के पास सामने से आए डीसीएम ने उनके ई-रिक्शा को टक्कर मार दी थी। हादसे में मशरूर की मौके पर मौत हो गई थी जबकि मोहम्मद आजाद गंभीर रूप से घायल हो गए थे। जिन्हें जिला अस्पताल ले जाया गया। हालत गंभीर होने पर हायर सेंटर रेफर किया था लेकिन जिले से बाहर ले जाते समय रास्ते में उन्होंने दम तोड़ दिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

बाजपुर गांव में घर में लगी आग, जला सामान

बदायूं, अमृत विचार : सहसवान तहसील क्षेत्र के गांव बाजपुर निवासी एक व्यक्ति के घर अचानक आग लग गई। जिसमें सब कुछ जल कर राख गया। ग्रामीणों ने किसी तरह आग पर काबू पाया। अनुमान के मुताबिक आग से ढाई लाख का नुकसान हुआ है। पीड़ित नरेश ने बताया कि दीपावली के पर्व पर परिवार के सभी सदस्य दीपावली उत्सव बनाने में लगे हुए थे। कि अचानक घर में आग लग गई। आग लगते ही हाहाकार मच गया। ग्रामीणों की मदद से आग पर काबू पाया। जब तक आग बुझ पाती उससे पूर्व ही सब कुछ जलकर राख होगा। आगजनी से पीड़ित नरेश ने बताया कि आग में घर में रखी नगदी, कपडे आदि जलकर राख हो गए। आग लगने की सूचना तहसील प्रशासन को दी गई है।

रंगदारी मांगने के विरोध पर युवक की पिटाई

खुदागंज, अमृत विचार : गांव ईश्वरा निवासी राजपाल पुत्र मैकू लाल ने बताया कि वह अपने खेत पर सुमित की ट्राली से धान का पुआल लेकर लौट रहा था। रास्ते में गांव निवासी एक व्यक्ति ने उससे 200 रंगदारी के रूप में मांगे। जब राजपाल ने इसका विरोध किया तो आरोपी ने लाठी-डंडों से हमला कर दिया और मारपीट की। पीड़ित ने तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

निरीक्षण करने के बाद डीपीआर तैयार करेगी टीम

बरेली-फर्रुखाबाद रोड पर बनने वाले बाईपास को एनएच में किया शामिल

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- मेडिकल कॉलेज से दातागंज, उसावां रोड को जोड़ने वाला बनेगा रिंग बाईपास

अमृत विचार : मेडिकल कॉलेज से कादरचौक, उसावां और दातागंज रोड को जोड़ते हुए बरेली मार्ग तक बाईपास बनाया जाएगा। बाईपास का निर्माण एनएचएआई के द्वारा किया जाएगा। एनएचएआई की टीम 24 अक्टूबर को बाद किसी भी दिन जिले में आ सकती है। वह यहां आकर स्थलीय निरीक्षण करेगी। उसके बाद डीपीआर को तैयार किया किया जाएगा। डीपीआर तैयार करने के बाद शासन में बजट की मांग करते हुए भेज दी जाएगी। इसके निर्माण से शहर के साथ आस पास के ग्रामीण इलाकों के लोगों को काफी लाभ पहुंचेगा। साथ ही जाम की समस्या भी समाप्त हो जाएगी।

मेडिकल कॉलेज से कादरचौक, उसावां और दातागंज रोड को जोड़ते हुए बरेली मार्ग तक बाईपास का निर्माण किया जाएगा। इसके बन जाने से शहर के बाहरी क्षेत्र में रिंग का आकार ले लेगा। करीब 18.5 किलोमीटर लंबे बाईपास का निर्माण एनएचएआई (राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण) द्वारा किया जाएगा। जिसकी मंजूरी केंद्र सरकार द्वारा दी जा चुकी है। एनएचएआई की टीम शहर में 24 अक्टूबर के बाद किसी भी दिन आ सकती है। एनएचएआई की टीम बाईपास निर्माण के लिए सर्वे करेगी। इसके लिए शासन स्तर से एनएचएआई के अधिकारियों को सर्वे कर विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के निर्देश दिए गए हैं। सर्वे के बाद एनएचएआई के अधिकारी डीपीआर तैयार कर शासन में बजट की मांग करते हुए भेजेंगे। बजट मिलने के बाद निर्माण का कार्य शुरू हो जाएगा।

शहर में जाम की समस्या से मिलेगी निजात

शहर के बाहरी क्षेत्र में बाईपास तो बना है। लेकिन यह बाईपास बरेली से मेडिकल कॉलेज तक ही बना है। फर्रुखाबाद- उसावां, दातागंज की ओर जाने वाले वाहन शहर के भीतर से होकर गुजरते हैं। जिसकी वजह से शहर में दिन भर जाम की स्थिति बनी रहती है। जाम से लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। बाईपास बनने से बड़े वाहनों का शहर में प्रवेश रुक जाएगा, जिससे शहर के भीतर यातायात सुगम होगा।

> एक दो दिन में एनएचएआई की टीम आने वाली है। संस्था के अधिकारी यहां पहुंचकरसर्वे करेंगे। उसके बाद डीपीआर तैयार की जाएगी। जिसे शासन में भेजा जाएगा। एनएचएआई अधिकारियों को डीपीआर जल्द से जल्द तैयार कर प्रस्तुत करने को कहा है, ताकि आगे की कार्रवाई शुरू की जा सके।
>
> – डॉ. वैभव शर्मा, एडीएम वित्त एवं राजस्व

नशे में खाया विषाक्त पदार्थ अस्पताल में मौत

बदायूं, अमृत विचार : थाना अलापुर क्षेत्र के कस्बा निवासी युवक ने शराब के नशे में विषाख्त पदार्थ खा लिया। कुछ ही देर में हालत बिगड़ने पर युवक को अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां इलाज के दौरान युवक ने दम तोड़ दिया। परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया। कस्बा अलापुर के वार्ड छह के इमलिया नगला के लोगों के अनुसार हरिद्वारी (24) पुत्र विजयी शराब पीकर घर आए थे। उन्होंने विषाख्त पदार्थ खा लिया। हालत बिगड़ने पर परिजनों ने निजी अस्पताल में भर्ती कराया। हालत गंभीर होने पर राजकीय मेडिकल कॉलेज में भर्ती किया गया था। जहां उनकी मौत हो गई। परिजनों में कोहराम मच गया। परिजनों ने बताया कि पहले उन्हें पता नहीं था कि हरिद्वारी ने विषाख्त पदार्थ खाया है। हालत खराब होने पर चिकित्सक के पास ले गए तो इस बारे में पता चला। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया। परिजनों की ओर से तहरीर नहीं दी गई है।

संदिग्ध परिस्थितियों में चार साल की बच्ची की मौत

बच्ची का शव मिलने पर मौके पर लगी ग्रामीणों की भीड़। ● अमृत विचार

संवाददाता, मुजरिया

- मुजरिया थाना क्षेत्र के गांव बगुला नगला का मामला
- पेड़ के नीचे पड़ी मिली बच्ची अस्पताल में किया मृत घोषित

अमृत विचार : मुजरिया थाना क्षेत्र के गांव बगुला नगला निवासी चार साल की बच्ची रविवार देर शाम गांव के बीच नीम के पेड़ के नीचे पड़ी मिली। परिजन बच्ची को अस्पताल ले गए। जहां चिकित्सक ने बच्ची की मौत घोषित कर दी। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

गांव बगुला नगला निवासी पिंटू लोधी की चार साल की बेटी दीक्षा रविवार देर शाम घर के सामने खेल रही थी। धनतेरस का त्यौहार की वजह से परिजन घर के काम में व्यस्त थे। कुछ देर के बाद बच्ची कहीं नजर नहीं आए तो परिजनों ने बच्ची की तलाश शुरू की। पास में पेड़ के नीचे बच्ची पड़ी मिली। परिजन उसे अस्पताल ले गए। जहां चिकित्सक के मौत घोषित करने पर परिजनों में कोहराम मच गया। बताया जा रहा है कि तीन दिन पहले पिंटू की झोपड़ी में आग लग गई थी। जिसके नुकसान की वजह से परिवार परेशान थे। पुलिस ने पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया।

महिला की मौत विषाक्त पदार्थ देकर हत्या का आरोप

विजय नगला, अमृत विचार : मूसाझाग थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी महिला की मौत हो गई। महिला के भाई ने उसके ससुरालीजनों पर विषाख्त पदार्थ देकर हत्या करने का आरोप लगाया। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

थाना हजरतपुर क्षेत्र के गांव जमलपुर निवासी पप्पू की बेटी पूजा की शादी लगभग छह साल पहले मूसाझाग क्षेत्र के गांव सराय पिपरिया निवासी सूरज के साथ हुई थी। पूजा ने तीन दिन पहले दातागंज के निजी अस्पताल में बच्ची को जन्म दिया था। जिसके बाद परिजन पूजा को घर ले आए थे। सोमवार को उसकी तबियत खराब हो गई। कुछ देर के बाद उसकी मौत हो गई। सूचना मिलने पर पूजा के भाई सुनील मौके पर पहुंचे। डायल 112 पुलिस को सूचना दी। बहन को विषाख्त पदार्थ देकर मारने का आरोप लगाया। पुलिस ने मंगलवार को शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया। थाना प्रभारी मान बहादुर सिंह ने बताया कि महिला की मौत हुई थी। पोस्टमार्टम कराया है। आगे की जांच की जा रही है।

महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक मनाया

संवाददाता, बिल्सी

अमृत विचार : कछला-शाहाबाद हाईवे पर दिधौनी स्थित पदमांचल जैन मंदिर पर मंगलवार को जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक जैन समाज के लोग ने श्रद्धाभाव व उत्साह पूर्वक मनाया। यहां सर्वप्रथम भगवान जिनेंद्र का मंगल जलाभिषेक कर भक्तों ने निर्वाण लड्डू समर्पित किया। 24 तीर्थंकरों के अर्घ्य चढ़ाकर भगवान महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक मनाया।

श्री दिगम्बर जैन महासमिति के मंडलाध्यक्ष प्रशांत जैन ने बताया की भगवान महावीर स्वामी का संदेश जियो और जीने दो का रहा है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को अपने अंदर दया व करूणा भाव रखना चाहिए। साथ ही तीर्थंकर महावीर के आदर्शों पर चलना होगा तभी जैन कुल में जन्म सार्थक होगा। उन्होंने कहा कि तीर्थंकर महावीर का केवली काल 30 वर्ष का था। उनके संघ में 14000 साधु, 36000 साध्वी, 100000 श्रावक और 300000 श्राविकाओं थी। भगवान महावीर ने ईसा पूर्व 527, 72 वर्ष की आयु में बिहार के पावापुरी (राजगीर) में कार्तिक कृष्ण अमावस्या को निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त किया। उनके साथ अन्य कोई मुनि मोक्ष को प्राप्त नहीं हुए। पावापुरी में एक जल मंदिर स्थित है जिसके बारे में कहा जाता है कि यह वह स्थान है जहाँ से महावीर स्वामी को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी। इस मौके पर ज्योति जैन, शालिनी जैन, मोना जैन, स्वीटी जैन, बबिता जैन, राखी जैन, मान्या जैन, मानसी जैन, अभिषेक जैन, काशवी जैन, प्रिंस जैन, प्रियांश जैन, मौजूद रहे। इधर मोहल्ला दो जैन मंदिर में भी समस्त सकल दिगंबर जैन समाज द्वारा भगवान महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक मनाया।

पदमांचल जैन मंदिर पर मोक्ष कल्याणक मनाते लोग। ● अमृत विचार

मेला ककोड़ा में बढ़ रही रौनक, पहुंचने लगे दुकानदार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : मेला ककोड़ा में अब धीरे धीरे रौनक बढ़ने लगी है। दुकानों का सामान पहुंच रहा है। दुकानदार अपने तंबू लगा कर दिन रात काम कर रहे हैं। मेला स्थल पर जेसीबी और ट्रैक्टर से गंगा किनारे को ठीक किया जा रहा है। जेसीबी से गंगा का रेत निकाल कर स्नान घाट बनाए जा रहे हैं। दीपावली के त्यौहार पर भी ठेकेदारों ने काम जारी रखा। जिला पंचायत द्वारा आयोजित मेला ककोड़ा स्थल पर अब दिन प्रतिदिन रौनक बढ़ती जा रही है। एक ओर झूला सर्कस का सामान मेले में पहुंच रहा है तो मेला में दूसरे जिलों के दुकानदार भी पहुंच रहे हैं। मेला प्रशासन द्वारा पिछले तीन दिन से ट्रैक्टर और जेसीबी से गंगा किनारे मैदान को समतल किया जा रहा है। फसलें कट जाने के बाद खाली हुए खेतों पर दिन रात काम जारी है।

मेला ककोड़ा स्थल पर झूले का पड़ा सामान। ● अमृत विचार

जिला पंचायत प्रशासन की सख्ती को देखते हुए दीपावली त्यौहार पर काम कराया गया। ठेकेदार राशिद ने बताया कि सोमवार को सुबह से शाम तक जेसीबी से गंगा से मिट्टी निकाली गयी। जिससे वहां पर स्नान घाट तैयार किए जा सकें। करीब पचास स्नान घाट की जगह समतल कर दी गयी है। वहां तक सड़क भी डाली जा रही है।

मंगलवार को कासगंज जिले की दर्जनभर से अधिक दुकानों का सामान मेला स्थल पर पहुंचा है। यह दुकाने दो दिन बाद तैयार हो जाएंगी। साथ ही अब फर्रुखाबाद, मैनपुरी और एटा के कपड़ा दुकानदार मेले में पहुंच रहे हैं। मेला स्थल पर जिला पंचायत के कर्मचारी अपने सामने ठेकेदारों से सूची के अनुसार काम करा रहे हैं। मेले में दुकानों को आरक्षित जगह पर काम पूरा कर लिया गया है। उस मैदान को समतल बना कर दुकान लगाने की अनुमति दी जा चुकी है। कादरचौक से मेला स्थल तक आने वाली सड़क की मरम्मत पूरी हो चुकी है जिसके बाद अब सड़क को चौड़ा किया जा रहा है। ककोड़ा स्थल पर अस्थायी कोतवाली 24 अक्टूबर से खोल दी जाएगी। इसके लिए तैयारी पूरी कर ली गयी है।

- चार जोन में बांटा मेला स्थल सफाई को पहुंचे कर्मचारी
- जिला पंचायत ने लगाई जेसीबी बनाए जा रहे स्नान घाट

> मेला स्थल पर तेजी से कार्य किया जा रहा है। दुकानदार पहुंचने लगे हैं। 24 अक्टूबर से मेले में कोतवाली बना दी जाएगी। दुकानदारों की सुरक्षा को पुलिस की ड्यूटी रहेगी। प्रशासन को मेले की तैयारियों की जानकारी दी जा रही है। वह स्वयं मेला स्थल का निरीक्षण कर रहे हैं। – **दिनेश प्रताप सिंह,** अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत

बवासीर भगन्दर
ऑपरेशन से बचें
दर्द रहित उपचार
डॉ. एस.के. गुप्ता
(गुप्त रोग चिकित्सक)
बवासीर भगन्दर रोग विशेषज्ञ
ऑपरेशन से बचें # दर्द रहित उपचार
सैक्स
रोगियों का यूनानी आयुर्वेदिक इलाज
बवासीर को अनदेखा करना घातक हो सकता है
● मस्से होना ● सूजन होना
● जलन होना ● उठाने-बैठने में तकलीफ होना
● खूनी बवासीर होना
धात, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमजोरी, शीघ्र पतन होना, जोश में कमी, रूकावट, बवासीर, भगन्दर, ल्यूकोरिया, महावारी का न होना, शुक्राणुओं की कमी, निःसन्तान रोगी (नशा छुड़वाये), सोराइसिस, नलों का बंद होना, कैंसर, शुगर, इन्द्री का लंबापन, मोटापन, 50 साल से ऊपर वाले मर्दों का सैक्स पावर खत्म होना, गुर्दे का क्रीटानीन, प्रोस्टेट, अल्सर, योनि का ढीलापन, पेशाब बार-बार आना, पेशाब में खून आना।
नशा छुड़ाए? नशे से कुछ ही दिनों में छुटकारा पायें।
नोटः- हर जगह से निराश रोगी एक बार अवश्य मिलें।
सुबह 10:30 से 2:30 तक, शाम 6:30 से 8:30 तक
रविवार 10:30 से 2:30 तक
डॉ. सी.पी. गुप्ता
क्लीनिक
स्थापित 1960
माध्यमिक शिक्षा परिषद बोर्ड आफिस के सामने, चौपुला से कुतुबखाना रोड, बरेली।
मो. 9259082174

सरकार ने किया चीनी मिलों के क्रय केंद्रों का आवंटन

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- बिसौली चीनी मिल के काटे गए नौ गन्ना क्रय केंद्र
- समय पर भुगतान न करने पर की गई कार्रवाई

अमृत विचार : गन्ना आयुक्त द्वारा गन्ना पेराई सत्र 2025-26 के लिए गन्ना क्रय केंद्र आवंटित कर दिए गए हैं। गन्ना किसानों का समय पर भुगतान न करने पर बिसौली की यदु शुगर मिल के इस बार 9 क्रय केंद्र काटे गए हैं। जिले में कुल 80 गन्ना क्रय केंद्र बनाए गए हैं। शेखूपुर चीनी मिल के दो क्रय केंद्र हैं। जबकि अन्य चीनी मिलों के कुछ क्रय केंद्र बढ़ाए गए हैं।

चीनी मिलों का नया पेराई सत्र अगले माह से शुरू होने वाला है इसलिए शासन स्तर से गन्ना क्रय केंद्रों का अब आबंटन कर दिया गया है। पिछले साल गन्ना किसानों का भुगतान समय पर न करने वाली यदु शुगर मिल के इस बार नौ क्रय केंद्र काटे गए हैं। जिसमें क्रय केंद्र आमगांव प्रथम, द्वितीय, तृतीय, गुलड़िया प्रथम, द्वितीय, व तृतीय क्रय केंद्र काटे गए हैं। जो अब हरदोई की रूपापुर चीनी मिल को आबंटित किए गए हैं। इसके साथ ही दातागंज प्रथम समरेर अहोरामई प्रथम चीनी मिल फरीदपुर को आवंटित किए गए हैं।चीनी मिल शेखूपुर मिल गेट ओर क्रय केंद्र कठौली सहित कुल दो क्रय केंद्र दिए गए हैं।

जिला गन्ना अधिकारी अशफी लाल ने बताया कि चीनी मिल बिसौली को कुल 43 क्रय केद्र दिए गए हैं। दूसरे जिलों की चीनी मिल करीमगंज को 8, कासगंज की न्यौली को 10, रजपुरा की चीनी मिल को 6, फरीदपुर की चीनी मिल को दातागंज द्वितीय एट रोहरी के अतिरिक्त इस वर्ष दातागंज प्रथम, समरेर, व अहोरामई प्रथम सहित कुल 4 क्रय केंद्र दिए गए हैं। मझावली चीनी मिल को एक क्रय केंद्र, पिनौनी चीनी मिल हरदोई रूपापुर को क्रय केंद्र आमगांव प्रथम, द्वितीय, तृतीय, गुलड़िया प्रथम, द्वितीय व गुलड़िया तृतीय सहित कुल 6 क्रय केंद्र आवंटित किए गए हैं। जिला गन्ना अधिकारी ने बताया कि उक्त सभी चीनी मिलों को क्रय केंद्र आवंटित कर साफ कहा गया है कि चीनी मिलों को गन्ना किसानों का भुगतान समय से करना होगा।

यदि समय पर नहीं किया गया तो खिलाफ भी कार्यवाही की जा सकती है। बताया कि बिसौली की यदु शुगर मिल पर अभी तक गन्ना किसानों का करोड़ों का बकाया है। जिससे उसके नौ क्रय केंद्र काट कर दूसरे चीनी मिलों को आवंटित कर दिए गए।

शुगर मिल।

बिसौली की 11 और शेखूपुर की 21 से चलेगी चीनी मिल

बिसौली की यदु शुगर मिल 11 से और शेखूपुर की सहकारी चीनी मिल 21 नवम्बर से चालू हो हो जाएगी। उक्त दोनो चीनी मिलों की मरम्मत लगभग पूरी हो चुकी है। चीनी मिलों के आरंभ पर गन्ना किसानों को आमंत्रित किया गया है। इससे पहले दिन अधिक से अधिक किसान गन्ना लेकर चीनी मिलों पर पहुंचें।

सड़क किनारे मिला शव हत्या करने का आरोप

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- परिजनों के अनुसार घर से बुलाकर ले गए थे दो लोग
- मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच कर जताई सड़क हादसे की आशंका

अमृत विचार : एक ट्रक चालक का शव सड़क किनारे पड़ा मिला। सिर पर किसी हथियार से वार का निशान था। राहगीरों की सूचना पर पुलिस पहुंची। पुलिस हादसा मान रही है। मौके पर पहुंचे परिजनों ने दो लोगों पर हत्या करने का आरोप लगाया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर जांच शुरू की है।

बिनावर थाना क्षेत्र के गांव नौशना निवासी शिव सिंह (30) पुत्र पूरन लाल ट्रक चालक थे। वह आढ़त पर सामान पहुंचाते थे। उनका शव थाना अलापुर क्षेत्र में कस्बा जगत के पास सड़क किनारे मिला। परिजनों का आरोप है कि कस्बा जगत निवासी दो लोग शिव सिंह को बुलाकर ट्यूबवैल पर ले गए थे। जहां शराब पिलाई और फिर हत्या कर दी।

तहरीर मिलने पर दर्ज होगी रिपोर्ट

शव को सड़क किनारे फेंक दिया। परिजनों के अनुसार शिव सिंह को बुलाकर ले जाने वाले दोनों लोगों ने ही सड़क हादसे में मौत की सूचना दी थी। जिसके बाद वह दोनों लोग लापता हो गए। थानाध्यक्ष ने बताया कि युवक की मौत हुई थी। तहरीर के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

त्योहार | भैया दूज पर्व को लेकर रोडवेज निगम ने कसी कमर

बहनों को न हो परेशानी, बसों के बढ़ाए जाएंगे फेरे

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- बदायूं-दिल्ली के बीच तीन रूट पर बसों का होगा संचालन

अमृत विचार : भैया दूज 23 अक्टूबर को मनाया जाएगा। त्योहार पर यात्रियों की सुविधा के लिए परिवहन निगम की बसों के अतिरिक्त फेरे बढ़ाए जाएंगे। लेकिन अतिरिक्त बसें न होने के कारण इस बात की ज्यादा संभावना है कि बसों में यात्रियों की मारामारी मचेगी।

भैया दूज को लेकर परिवहन निगम के बदायूं डिपो ने खास इंतजाम किए हैं। बदायूं-दिल्ली के बीच तीन रूट पर बसों का संचालन किया जाएगा। दिल्ली के लिए चौबीस घंटे बस सेवा की बात कही गई है। बदायूं से बिल्सी, संभल और सहसवान होते हुए दिल्ली के लिए बसों को भेजा जाएगा। इसके साथ ही बदायूं-बरेली, बदायूं-फर्रुखाबाद, बदायूं-चंदौसी, बदायूं-दातागंज रूटों पर भी अतिरिक्त बसों के साथ बसों के फेरे बढ़ाए जाएंगे। एआरएम ने बताया कि डिपो की 106 बसों के अलावा सभी 44 अनुबंधित बस का संचालन कराया जा रहा है। निर्देश दिए गए हैं कि सभी बसों को बस स्टेशन से होकर ही गुजारा जाए। चालकों और परिचालकों के अवकाश रद्द कर दिए गए हैं। चालकों और परिचालकों के लिए प्रोत्साहन योजना भी लागू की गई है। यात्रियों की सभी सुविधाओं के लिए बस स्टेशन पर कंट्रोल रूम बनाया गया है। यात्री पूछताछ के लिए भी अलग से कक्ष बनाया गया है। भैया दूज पर बहनों के लिए किसी तरह की समस्या का सामना नहीं करना होगा। शहर से कई प्रमुख मार्गों पर रोडवेज निगम की बसों का संचालन होता है। रोडवेज बसें विभिन्न चौराहों से होकर गुजरती हैं। पुलिस लाइन चौराहा, कचहरी तिराहा, लालपुल तिराहा, इंदिरा चौक, दातागंज तिराह, नवादा चौराहा मुख्य रूप से शामिल है। इनमें से चंद चौराहे तो ऐसे हैं, जहां ट्रैफिक पुलिस कर्मी ड्यूटी बजाने की बजाए उगाही के चक्कर में ही रहते हैं। यही कारण है कि मुख्य मार्गों पर यातायात का सही नियंत्रण न होने के कारण हमेशा जाम लगा रहता है।

भैया दूज पर्व पर यात्रियों को होती है परेशानी

भैया दूज पर यात्रियों की संख्या में हर वर्ष 85 से 90 प्रतिशत तक का इजाफा हो जाता है। बसों की कमी के चलते यात्री स्टैंड पर न केवल परेशान रहते हैं, बल्कि कई बार तो बस में चढ़ने को लेकर दुर्घटनाएं तक हो जाती हैं। रोडवेज निगम अधिकारी पूर्व से ही बसों के संचालन की तैयारियों में जुट गए थे। भैया दूज पर अतिरिक्त बसें संचालित करने को लेकर एआरएम का कहना है कि अतिरिक्त बसें न होने के कारण प्रमुख मार्गों पर यात्रियों की संख्या के अनुसार बसें उपलब्ध कराई जाएंगी।

जिला अस्पताल में नहीं दिखे मरीज, वार्ड रहे खाली

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : दीपावली के चलते जिला अस्पताल के अनेक वार्ड खाली हैं। मंगलवार को भी कुछ ही मरीज अस्पताल पहुंचे। अस्पताल 11 बजे बंद कर दिया। कुछ मरीज दवा नहीं मिलने से अपने घरों को लौट गए।

जिला अस्पताल में शनिवार को भर्ती मरीज देर शाम तक छुट्टी करा कर अपने घरों को चले गए। बुखार और अन्य बीमारियों से जूझ रहे मरीजों के जाने के बाद अनेक वार्ड खाली हो गये जिसके बाद वार्डो में ताला लटका दिया गया। अस्पताल में मेडिकल वार्ड सबसे बड़ा बार्ड है। इसमें हर समय दर्जनों मरीज भर्ती रहते हैं यह बुखार पीड़ितों का वार्ड है। शनिवार को करीब डेढ़ दर्जन मरीज भर्ती थे जो देर रात तक छुट्टी करा कर अपने घर चले गए। वार्ड खाली हो गया जिसके बाद इसमें ताला डाल दिया गया। उधर महिला वार्ड भी खाली हो गया जिससे उसमें भी आज ताला लटका मिला। कुछ मरीज हड्डी वार्ड में भर्ती मिले। मरीजों का कहना था कि वह कई दिन से यहां पर भर्ती हैं। मंगलवार को जिला अस्पताल कुछ देर को खुला।

बाहर से आने वाले मरीजों को देरी के चलते दवा भी नहीं मिल सकी। जबकि स्थानीय मरीज जल्दी पहुंच गए उन्हे दवा मिल गयी। अस्पताल में आज भी सन्नाटा पसरा रहा। दीपावली के चलते एनआरसी वार्ड भी खाली रहा। जिला महिला अस्पताल में दीपावली के दिन तीन महिलाओं को प्रसव हुआ। जबकि अन्य प्रसूताओं को घर भेज दिया गया।

ब्रीफ न्यूज

दीपावली की रात किशोर ने फंदा लगाकर दी जान

संभल/सौंधन,अमृत विचार : दीपावली की रात एक 18 वर्षीय किशोर ने फंदा लगाकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। परिजनों ने बिना पुलिस कार्रवाई के शव का अंतिम संस्कार कर दिया। कैला देवी थाना क्षेत्र के नारंगपुर निवासी किरनपाल (18) शराब पीने का आदी था। सोमवार की रात उसने शराब पी और नशे की हालत में गांव के पास स्थित जंगल में पहुंच गया। वहीं लिप्टिस के पेड़ पर अपनी शर्ट से फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। सुबह खेतों की ओर गए ग्रामीणों ने जब पेड़ पर युवक को फंदे से लटकता देखा तो तत्काल परिजनों को सूचना दी। मौके पर पहुंचे परिजन किरनपाल को उस हाल में देखकर बिलख पड़े। दीपावली जैसे हर्षोल्लास के पर्व पर युवक की मौत से पूरे परिवार में मातम छा गया।

प्रकाश पर्व पर लोगों ने घरों को सजाया

कलान, अमृत विचार : थाना कलान क्षेत्र में प्रकाश पर्व दीपावली का त्यौहार परंपरागत उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। लोगों ने श्रद्धा भाव से लक्ष्मी, गणेश और कुबेर की पूजा-अर्चना कर समृद्धि की कामना की। संध्या होते ही क्षेत्र के घरों, गलियों और मंदिरों में दीपक, मोमबत्तियों और बिजली की रंग-बिरंगी लाइटों से जगमगाहट फैल गई। परिवारों ने पूजा के बाद मिठाइयों का वितरण कर एक-दूसरे को शुभकामनाएं दीं। बच्चों ने पटाखे चलाकर खुशी का इजहार किया। रातभर आसमान में आतिशबाजी की चमक और पटाखों की आवाज गूंजती रही। देर रात तक चलती आवाजों के कारण कई लोगों की नींद में खलल पड़ा और सुबह लोग थकान के साथ अंगड़ाइयां लेते दिखे।

दुकान में बुलाकर बच्ची से छेड़छाड़, दी तहरीर

पुवायां, अमृत विचार : नगर के एक युवक ने शिकायत कर बताया कि उनके मोहल्ले में ही गैर समुदाय का एक युवक किराने की दुकान चलाता है। सोमवार की शाम उसकी पांच वर्षीय पुत्री उसकी दुकान पर चिप्स का पैकेट लेने गई थी। इसी दौरान दुकानदार ने उसे चॉकलेट देने के बहाने दुकान के अंदर बुला लिया और उसके कपड़ों में हाथ डालकर उसके अंगों को छुआ, साथ ही उसके कपड़े फाड़ दिए। बच्ची ने घर पहुंचकर परिजनों को जानकारी दी। इसके बाद पिता ने थाने पहुंचकर तहरीर दी।

बिनावर और ओरछी क्षेत्र में लाखों की चोरी

ओरछी चौराहे के पास किन्नर समेत दो घर और बिनावर में सपा नेता के घर को चोरों ने बनाया निशाना

संवाददाता, ओरछी/विजय नगला

अमृत विचार : त्योहार के अवसर पर जिले में चोरों का आतंक रहा। फैजगंज बेहटा क्षेत्र में किन्नर समेत दो मकान और बिनावर क्षेत्र में सपा नेता के घर को निशाना बनाया। एसपी देहात डॉ. ह्रदेश कठेरिया ने मौका मुआयना किया। फारेंसिक टीम ने नमूना संकलित किए। दो घटनाओं में पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करके जांच शुरू कर दी है।

फैजगंज बेहटा थाना क्षेत्र में ओरछी चौराहे से आसफपुर मार्ग पर टीना किन्नर का मकान है। वह रोज अपने साथियों के साथ क्षेत्र में बधाई मांगती हैं। टीना के अनुसार सोमवार शाम वह अपने साथियों के साथ कस्बा में गई थीं। देर रात अपने साथी मोनिका, अमरजीत, बिलाल, भाई विजय और भाभी अंकिता के साथ घर आईं। थकावट होने की वजह से सभी सो गए थे। आधी रात चोरों नकब लगाकर घर में घुस आए। लाखों रुपये की नगदी और जेवर चोर कर लिए। वहीं चोरों ने टीना के बराबर के राय सिंह के बंद घर से बर्तन चोरी

चोरी के बाद किन्नर के घर में फैला सामान। ● अमृत विचार

किन्नर के घर चोरी के बाद मुआयना करते सीओ बिसौली सुनील कुमार। ● अमृत विचार

● एसपी देहात ने किया मौका मुआयना , थाना पुलिस ने दर्ज की एफआईआर

कर लिए। मंगलवार सुबह टीना जागीं तो चोरी की जानकारी हुई तो पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची। एसपी देहात और सीओ बिसौली सुनील कुमार ने मौका मुआयना किया। फारेंसिक टीम ने साक्ष्य संकलित किए। थानाध्यक्ष रामेंद्र सिंह ने बताया कि तहरीर प्राप्त होने के बाद रिपोर्ट दर्ज की गई है। जल्द ही घटना का खुलासा किया जाएगा।

वहीं चोरों ने बिनावर थाना क्षेत्र के गांव बगली नगर निवासी सपा नेता के घर से नगदी समेत 50 लाख रुपये के जेवर की चोरी की। सपा नेता मोद प्रकाश पाल पुत्र चिंतामणि ने तहरीर देकर बताया कि शनिवार को वह घर पर परिवार के साथ सो रहे थे। चोरों ने कमरे की खिड़की तोड़ी और भीतर घुस आए। चोर बक्से में रखे पांच लाख रुपये नगद, सोने का एक बड़ा और एक छोटा हार, एक जोड़ी कुंडल, सोने की चेन व चूड़ी, पेंडल व तीन अंगूठी, सुई-धागा, चांदी की पायल, चांदी के सिक्के आदि चोरी करके लौट रहे थे। आहट होने पर उनकी पत्नी सुनीता पाल जाग गईं। कमरे स कुछ लोग निकलते दिखे तो उन्होंने शोर मचाया।

चोरों की तलाश में जुटी पुलिस

परिजन जाग गए लेकिन तब तक चोर फरार हो चुके थे। शोर सुनकर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। चोरों की तलाश में जंगल में गए लेकिन चोरों का पता नहीं चला। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करके मौका मुआयना किया। बिनावर पुलिस पुरानी घटनाओं का खुलासा नहीं कर सकी है। चोर शराब की दुकान, गल्ला व्यापारी के यहां चोरी की थी। लेकिन खुलासा नहीं हुआ। थाना प्रभारी राजेंद्र सिंह ने बताया कि जल्द ही खुलासा किया जाएगा।

चोरी मामले में अलग-अलग बातें आईं सामने

ओरछी, अमृत विचार : टीना किन्नर के घर से चोरी के मामले में अलग-अलग बातें सामने आई हैं। किन्नर ने चोरी की तहरीर देकर रिपोर्ट दर्ज कराई है। वहीं उनके भाई विजय ने बताया कि आधा दर्जन से ज्यादा नकाबपोश बदमाश आए थे। घर में मौजूद लोगों को तमंचा दिखाकर गोली मारने की धमकी देकर लूटपाट करते रहे। विजय के हाथ से अंगूठी और पास में सो रहीं उनकी पत्नी के पैर से पाजेब निकाल ली। बहन टीना के साथ बदतमीजी करते हुए मारपीट की। बदमाश नगदी, जेवर के अलावा कमरे में लगी डीबीआर चोरी की। मोबाइल छीनकर आगे जाकर कच्चे मार्ग पर फेंक दिया।

बाइकों की भिड़त में एक युवक की मौत, दूसरा घायल

कार्यालय संवाददाता,संभल/सिरसी

अमृत विचार: हजरत नगर गढ़ी थाना क्षेत्र के सिरसी-बिलारी मार्ग पर ग्राम हंडालपुर के पास सोमवार देर रात दो बाइकों की आमने-सामने टक्कर में एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि दूसरा व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई।

संजय पुत्र आनंदपाल निवासी ग्राम जमालपुर थाना बिलारी, मुरादाबाद अपनी पत्नी की दवाई लेकर सिरसी से घर लौट रहे थे। इसी दौरालोकेश पुत्र छत्रपाल निवासी सराय सिकंदर थाना बनियाठेर अपनी बाइक तेज रफ्तार से लेकर आ रहा था। हंडालपुर के पास दोनों की बाइकों में आमने-सामने टक्कर हो गई। हादसे में दोनों सवार गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना मिलते ही हजरत नगर गढ़ी थाना पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों घायलों को अस्पताल भेजा। जहां इलाज के दौरान संजय की मौत हो गई, जबकि लोकेश की हालत नाजुक बताई जा रही है। परिजनों ने बताया कि तीन दिन पहले ही संजय की पत्नी ने बेटी को जन्म दिया था। पत्नी के डिस्चार्ज होने के बाद वह उसकी दवाई लेकर महमूदपुर से सिरसी होते हुए बिलारी लौट रहे थे। उधर, लोकेश अपने घर में होने वाले जागरण कार्यक्रम के कार्ड बांटने जा रहा था। संजय की मौत की खबर से परिवार में कोहराम मच गया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है।

बाइकों की टक्कर में तीन घायल, एक गंभीर : सौंधन,अमृत विचार : कैला देवी थाना क्षेत्र के सौंधन की मिलक गांव निवासी रितेश दिवाली पूजा के लिए बाइक से सामान लेने आ रहा था। सौंधन की तरफ से जा रहे लधनपुर गांव निवासी बाइक सवार राजकुमार व दीपक की बाइकों में आमने-सामने भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्ती की दोनों बाइकों के परखच्चे उड़ गए। तीनों बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गए सूचना के बाद पहुंची सौंधन चौकी पुलिस ने निजी वाहन से तीनों घायलों को संभल जिला अस्पताल में भर्ती कराया जिनमें से मिलक निवासी रितेश की हालत नाजुक बनी हुई है। जिसे स्वजनों द्वारा दिल्ली के अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

करंट से युवक और महिला की मौत

कार्यालय संवाददाता,संभल

अमृत विचार: दीपावली के दिन जहां हर घर में खुशियां मनाई जा रही थीं, वहीं दो परिवारों में मातम छा गया। थाना कुढ़ फतेहगढ़ क्षेत्र के गांव रीठ में टीवी का स्वीच लगाते समय करंट से किशोर की मौत हो गई। वहीं कैला देवी थाना क्षेत्र के गौंहत गांव में फ्रिज में करंट की चपेट में आने से एक महिला की मौत हो गई।

गांव रीठ निवासी जीतू (18 वर्ष) पुत्र नेत्रपाल अपने घर पर टीवी का स्विच लगा रहा था। इसी दौरान उसे जोरदार करंट लग गया। करंट लगते ही जीतू जमीन पर गिर पड़ा। शोर सुनकर परिजन मौके पर पहुंचे और रोने-बिलखने लगे। पड़ोस के लोग भी एकत्र हो गए। किसी तरह तारों को तोड़कर जीतू को करंट से अलग

मृतका सर्वेश।

मृतक जीतू।

किया गया, लेकिन तब तक वह बेहोश हो चुका था। परिजन उसे लेकर तुरंत चंदौसी के एक निजी चिकित्सक के पास पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। परिजनों के अनुसार, जीतू के पिता नेत्रपाल की दो वर्ष पहले छोटी दीपावली के दिन ही मृत्यु हो गई थी। अब बेटे की मौत से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। परिवार में दो भाई और दो बहनें हैं। बड़ी बहन की शादी हो चुकी है, जबकि छोटा भाई विकलांग है और एक छोटी बहन है। जीतू की अभी शादी नहीं हुई थी। मां का रो-रोकर बुरा हाल है।

वही गौंहत गांव निवासी सर्वेश (47 वर्ष) पत्नी डंबर सिंह सोमवार को दीपावली की सुबह घर की लिपाई कर रही थी। अन्य परिजन किसी काम से बाहर गए हुए थे। इसी दौरान घर में रखे फ्रिज में करंट उतर आया। सर्वेश फ्रिज के संपर्क में आ गईं और करंट की चपेट में आने से वहीं गिर पड़ीं।

कुछ देर बाद महिला का बेटा संजीव घर पहुंचा तो उसने मां को बेहोश हालत में जमीन पर पड़े देखा। पास में ही फ्रिज था, जिसमें करंट उतर रहा था। परिजन आनन-फानन में महिला को लेकर संभल के अस्पताल जा रहे थे, लेकिन रास्ते में ही सर्वेश ने दम तोड़ दिया।

शहीद स्थल पर स्मृति दिवस मनाकर शहीदों को किया याद

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : पुलिस परेड ग्राउंड स्थित शहीद स्थल पर पुलिस शहीद स्मृति दिवस मनाया गया। कर्तव्य पथ पर चलकर देश के लिए प्राण न्यौछावर करके बलिदान देने वाले शहीदों को याद किया गया। एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह समेत अधिकारियों ने शहीदों को श्रद्धांजलि दी। दो मिनट का मौन धारण किया गया।

शहीद स्मारक स्थल पर पुलिसकर्मियों के सम्मान में सलामी देते हुए पुष्पचंद्र अर्पित करके श्रद्धांजलि दी। एसएसपी ने कहा कि 21 अक्टूबर का दिन हमें उन वीर सपूतों के सर्वोच्च बलिदान की याद दिलाता है जिन्होने देश की सेवा मे अपना सर्वस्य न्यौछावर कर दिया। उनका अदम्य साहस और अतुल्यनीय त्याग हन सभी पुलिस

शहीदों की याद में मौन धारण करते पुलिसकर्मी। ● अमृत विचार

● अधिकारियों ने पुलिस परेड ग्राउंड स्थित स्मानक स्थल पर दी श्रद्धांजलि

कर्मियों के लिये प्रेणाश्रोत है। इसी तारीख को साल 1959 में लद्दाख में सीआरपीएफ की पेट्रोलिंग पार्टी के तीन ऑफिसर्स को भारत-तिब्बत बॉर्डर पर चीनी सैनिकों ने अपनी हिरासत में ले लिया था। अगले दिन जब उनकी तलाश में सीआरपीएफ की टीमें गई तो उन पर पहले से घात लगाकर बैठे चीनी सैनिकों ने फायरिंग कर दी। अचानक हुए हमले में सीआरपीएफ के जवान शहीद हो गए और कई जवान घायल हो गए। उसी दिन से वीर जवानों की शहादत को याद करते हुए हर साल देश भर में पुलिस स्मृति दिवस मनाया जाता है। एसपी ग्रामीण डॉ. ह्रदेश कठेरिया, एसपी सिटी विजयेंद्र द्विवेदी, सीओ लाइन व उझानी डॉ. देवेंद्र कुमार सीओ सिटी रजनीश उपाध्याय, सीओ यातायात अशोक कुमार, सीओ सहसवान कर्मवीर सिंह, सीओ बिल्सी संजीव कुमार, सीओ दातागंज केके तिवारी, प्रशिक्षु सीओ गौरव उपाध्याय, प्रतिसार निरीक्षक इंद्रजीत सिंह आदि उपस्थित रहे।

पुलिस स्मृति दिवस में शहीदों को श्रद्धांजलि देते एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह।

सड़क हादसे में युवक गंभीर घायल

संभल,अमृत विचार : हयातनगर निवासी युवक मुजम्मिल दानिश सोमवार की रात लगभग 9 बजे संभल से स्कूटी पर सवार होकर घर हयातनगर जाने के लिए निकले थे। इसके बाद ही वह संभल बहजोई मुख्य मार्ग पर नवाब गार्डन के पास सड़क किनारे घायल हालत में पड़े मिले। उन्हें संभल के निजी अस्पताल ले जाया गया जहां से गंभीर हालत में मुरादाबाद रेफर कर दिया गया। मुजम्मिल के सर में गंभीर चोट आई है। यह साफ नहीं हो पाया कि किसी वाहन की टक्कर से मुजम्मिल को चोट आई या फिर किसी दूसरी वजह से।

सुपर स्पेशलिटी विभाग

वरूण अर्जुन मेडिकल कॉलेज एवं रोहिलखण्ड अस्पताल

N.H.-24, बंथरा, शाहजहाँपुर द्वारा संचालित

शाहजहाँपुर में एक मात्र संस्थान जहाँ एक ही छत के नीचे सारे समाधान

अस्पताल में उपलब्ध सुपर स्पेशलिटी विभाग

यूरो सर्जरी विभाग

न्यूरो सर्जरी विभाग

पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग

प्लास्टिक सर्जरी विभाग

रेडियो-ओन्कोलॉजी विभाग

OPD का समय-प्रातः 9:00 बजे से अपरान्ह 3:00 बजे तक

परामर्श शुल्क पर 80% की छूट ~~₹1000~~ ₹200

24 घंटे उपलब्ध सुविधायें I.C.U., M.R.I., CT-Scan की सुविधा उपलब्ध

दूरबीन विधि द्वारा ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध

- आयुष्मान भारत योजना के अन्तर्गत कार्ड धारकों के लिए भर्ती होने पर नि:शुल्क इलाज की सुविधा।
- पं. दीन दयाल उपाध्याय राज्य कर्मचारी कैशलेस चिकित्सा योजना के अन्तर्गत मुफ्त इलाज की सुविधा।
- ई.सी.एच.एस. कार्डधारकों के लिये कैशलेस इलाज की सुविधा।

परिवार स्वास्थ्य कार्ड की सुविधा मात्र 200 रूपये में 1 वर्ष के लिये उपलब्ध है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :- 7521001988, 7521001989

खेत में खून से लथपथ मिला बुजुर्ग का शव

संवाददाता, उघैती/नूरपुर पिनौनी

अमृत विचार : दीपावली की रात घर से निकले बुजुर्ग का खून से लथपथ शव खेत में पड़ा मिला। कान और नाक से खून निकल रहा था। शरीर पर चोट के निशान थे। बुजुर्ग की हत्या का अंदेशा लगाया जा रहा है। सूचना पर पुलिस पहुंची। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। परिजनों की ओर से तहरीर नहीं दी गई है। सीओ ने मौका मुआयना किया। मौत के बाद से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

सोमवार को दीपावली का त्यौहार मनाया जा रहा था। उघैती थाना क्षेत्र के गांव कोठा में आतिशबाजी चल रही थी। गांव निवासी राम प्रकाश (65) दीपावली की रात लगभग 10 बजे तक घर पर परिजनों के साथ रहे।

खेत में शव मिलने की सूचना पर जानकारी करते सीओ बिल्सी संजीव कुमार। ● अमृत विचार

● सोमवार को घर से निकले थे बुजुर्ग, अगले दिन पास के खेत में मिला शव

● कान और नाक से निकल रहा था खून फारेंसिक टीम ने जुटाए साक्ष्य

परिजनों से कहा कि वह गांव में मिलने जा रहे हैं। वहीं यह भी कहा जा रहा है कि वह जुआ खेलने के लिए गए थे। जिसके बाद वह वापस नहीं लौटे। परिजनों ने तलाश किया लेकिन उनका कहीं पता नहीं चला तो परिजन घर आकर सो गए। मंगलवार सुबह लगभग छह बजे राम प्रकाश का खून से लथपथ शव गांव के पास डालचंद यादव के खेत में पड़ा मिला। खेत पर गए ग्रामीणों ने शव देखा। उनके कान और मुंह से खून निकल रहा था। ग्रामीणों ने उनके परिजनों को सूचना दी। रोते बिलखते परिजन मौके पर पहुंचे और ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। प्रभारी निरीक्षक अवधेश कुमार पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और पूछताछ की। कुछ समय के बाद सीओ बिल्सी संजीव कुमार पहुंचे। फारेंसिक टीम ने साक्ष्य संकलित किए। पुलिस ने शव का पोस्टर्माटम कराया।

सीओ ने बताया कि एक व्यक्ति का शव पड़ा मिला था। पोस्टमार्टम कराया गया है। परिजनों की ओर से तहरीर प्राप्त होने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। जल्द ही खुलासा किया जाएगा।

झोपड़ी में संदिग्ध हालात में मिला युवक का शव

संभल/सिरसी,अमृत विचार: हजरत नगर गढ़ी थाना क्षेत्र के ग्राम बैटला का रहने वाला नन्हे पुत्र मुरारी सोमवार सुबह गांव के बाहर तालाब के पास हरवीर की पन्नी की झोपड़ी में जाकर लेट गया। कुछ देर बाद हरवीर अपने घर चला गया। बताया गया कि शाम को हरवीर झोपड़ी पर पहुंचा। उसे नन्हे का शव मिला मिला। हरवीर ने तुरंत नन्हे के परिजनों को सूचना दी। कुछ ही देर में परिजन मौके पर पहुंच गए। हजरत नगर गढ़ी थाना प्रभारी अनुज कुमार तोमर पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।मृतक के बड़े भाई जोत सिंह ने बताया कि नन्हें अविवाहित था और हलवाई का काम करता था।

तीन श्रद्धालुओं की हादसे में मौत

संभल, अमृत विचार : संभल की गुन्नौर तहसील के थाना रजपुरा क्षेत्र के अनूपशहर गंगा पुल के निकट सोमवार शाम करीब छह बजे बुलंदशहर के सिकंदराबाद कस्बा क्षेत्र के गढ़ मोहल्ला पक्का बाग निवासी सूखा (62 वर्ष), राजू और अलीगढ़ के हरदुआगंज निवासी देवेंद्र ई-रिक्शा से गंगा स्नान कर लौट रहे थे। तभी अनूपशहर-गंवा हाईवे पर तेज रफ्तार ट्रक ने ई-रिक्शा को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में सूखा और देवेंद्र की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि राजू गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रजपुरा से प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर अलीगढ़ रेफर किया गया, जहां मंगलवार सुबह उसकी भी मौत हो गई। थानाध्यक्ष ने बताया कि हादसे में दो श्रद्धालुओं की मौके पर मौत हो गई थी, जबकि घायल राजू ने इलाज के दौरान अलीगढ़ में दम तोड़ दिया। शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

त्योहार

उदया तिथि में आज मनाया जाएगा त्योहार, घरों में कर ली गईं सभी तैयारियां

गोवर्धन पूजा को लेकर लोगों में बनी रही भ्रम की स्थिति

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● 23 अक्टूबर को मनाया जाएगा भैया दूज पूर्व

अमृत विचार : दीपावली से ठीक एक दिन बाद कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन गोवर्धन पूजा या अन्नकूट का पर्व मनाया जाता है, लेकिन इस बार गोवर्धन पूजा को लेकर लोगों में भ्रम की स्थिति बनी रही। कारण गोवर्धन पूजा का मुहूर्त मंगलवार की शाम से समय बन रहा था। लोगों द्वारा विद्वानों से रायशुमारी की गई। इसके बाद स्पष्ट हुआ कि त्योहार 22 अक्टूबर उदया तिथि में मनाया जाएगा। इसके बाद से घरों में तैयारी शुरू कर दी गईं। तिथि का अनुमान होने के कारण कुछ स्थानों पर मंगलवार की शाम को पर्व मनाया गया।

पंडित पवन कुमार मिश्रा ने बताया कि इस बार कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि की शुरुआत 21 अक्टूबर को शाम 5 बजकर 54 मिनट से आरंभ हो रही है। यह 22 अक्टूबर की रात 8 बजकर 16 मिनट तक रहेगी। हिन्दू धर्म में कुछ पर्व और व्रत ऐसे होते हैं जो उदया तिथि में मनाए जाते हैं। उदया तिथि के आधार पर गोवर्धन पूजा का पर्व 22 अक्टूबर दिन बुधवार को मनाया जाएगा। बताया कि इस साल गोवर्धन पूजा पर दोपहर 03 बजकर 13 मिनट से शाम 05 बजकर 49 मिनट तक शुभ मुहूर्त बन रहा है। इस तिथि पर स्वाति नक्षत्र और प्रीति का संयोग रहेगा। खास बात यह है कि इस दिन ग्रहों के राजा सूर्य तुला राशि में रहेंगे, जहां चंद्रमा भी गोचर करेंगे। ऐसे में पूजा के लिए यह समय कल्याणकारी रहने वाला है। गोवर्धन पर घर के आंगन में गोबर से गोवर्धन बनाकर पूजा की जाती है। गोवर्धन पूजा को प्रकृति की पूजा भी कहा जाता है, इसकी शुरुआत स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने की थी।

गोवर्धन पूजा की विधि

पंडित पवन कुमार मिश्रा ने बताया सुबह स्नान के बाद पूजन के शुभ मुहूर्त में घर के आंगन या मंदिर में गोबर से गोवर्धन पर्वत का स्वरूप बनाएं। इसके बाद रोली, चावल, खीर, बताशे, जल, दूध, पान, केसर, फूल और दीपक जलाकर गोवर्धन भगवान की पूजा करें। इसके बाद अपने परिवार सहित श्रीकृष्ण स्वरुप गोवर्धन की सात प्रदक्षिणा करें। मान्यता है कि इस दिन विधि विधान से सच्चे दिल से गोवर्धन भगवान की पूजा करने से एवं गायों को गुड़ व चावल खिलाने से भगवान श्री कृष्ण की कृपा बनी रहती है। इस दिन गाय की पूजा करने से सभी पाप उतर जाते हैं और मोक्ष प्राप्त होता है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार द्वापर युग में इंद्र ने कुपित होकर जब मूसलाधार बारिश की तो श्री कृष्ण ने गोकुलवासियों व गायों की रक्षार्थ और इंद्र का घमंड तोड़ने के लिए गोवर्धन पर्वत, छोटी अंगुली पर उठा लिया था। उनके सुदर्शन चक्र के प्रभाव से ब्रजवासियों पर जल की एक बूंद भी नहीं पड़ी, सभी गोप-गोपिकाएं उसकी छाया में सुरक्षित रहे। तब ब्रह्मा जी ने इन्द्र को बताया कि पृथ्वी पर श्रीकृष्ण ने जन्म ले लिया है,उनसे बैर लेना उचित नहीं है।

तब श्रीकृष्ण अवतार की बात जानकर इन्द्रदेव अपने इस कार्य पर बहुत लज्जित हुए और भगवान श्रीकृष्ण से क्षमा-याचना की। इन्द्र के अभिमान को चूर करने के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने सभी गोकुल वासियों सहित कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन 56 प्रकार के व्यंजनों का भोग बनाकर गोवर्धन पर्वत की पूजा की थी।

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 22 अक्टूबर 2025

न्यूज ब्रीफ

सर्राफा दुकान की दीवार काटकर उड़ाए लाखों के जेवरात

नवाबगंज, गोंडा, अमृत विचार : थाना क्षेत्र के किशुनदासपुर गांव में चोरों ने सोमवार की रात एक सर्राफा दुकान को निशाना बनाते हुए लाखों के सोने-चांदी के जेवरात पार कर दिए। किशुनदासपुर गांव निवासी ओमप्रकाश सोनी पुत्र राम अचल सोनी ने मंगलवार को थाने पर दी गई तहरीर में बताया कि उनकी सोने-चांदी के जेवर और बर्तन की दुकान किशुनदासपुर चौराहे पर स्थित है। सोमवार की रात करीब 11 बजे वह दुकान बंद कर घर चले गए थे। मंगलवार सुबह जब वे करीब 8 बजे दुकान पर पहुंचे तो देखा कि पीछे की दीवार काटकर चोरों ने दुकान में घुसकर करीब चालीस लाख रुपये के सोने-चांदी के जेवरात और चांदी के बर्तन चोरी कर लिए हैं।

संदिग्ध परिस्थितियों में युवक की मौत, फंदे से लटका मिला शव

सुलतानपुर, अमृत विचार : देहात कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत झलियावा, अभियाकला निवासी सूरज कुमार (25) पुत्र राजेंद्र प्रसाद उर्फ कुट्टे की दीपावली की रात संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। युवक का शव कमरे में पंखे के सहारे फांसी के फंदे से लटका पाया गया। घटना से परिवार में मातम पसर गया और दीपावली की खुशियां मातम में बदल गईं। मिली जानकारी के अनुसार, रविवार को सूरज अपनी पत्नी इंदु और दोनों बेटों अर्पित (3 वर्ष) व हर्षित (डेढ़ वर्ष) के साथ बिकवाजीतपुर का मेला देखने गया था। शाम को परिवार के सभी सदस्य हंसी-खुशी घर लौटे, लेकिन रात में किसी बात को लेकर परिवार में कहा-सुनी हो गई। कुछ देर बाद सूरज का शव कमरे में फंदे से लटका मिला।

पशु चराने गए बुजुर्ग की पीट-पीटकर हत्या

सुलतानपुर, अमृत विचार : थाना क्षेत्र के खानपुर पिलाई गांव में मंगलवार को पशु चराने गए एक बुजुर्ग की संदिग्ध परिस्थितियों में पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। घटना के बाद परिजनों ने शव को अखण्डनगर चौराहे पर रखकर जाम लगा दिया, जिससे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। जानकारी के अनुसार गांव निवासी 70 वर्षीय उमाशंकर दूबे मंगलवार दोपहर पशुओं को चराने गए थे। इसी दौरान उन्हें अज्ञात कारणों से कुछ लोगों ने लाठी-डंडों से पीटकर लहूलुहान कर दिया। घायल अवस्था में परिजन उन्हें शाम करीब 5 बजे सीएचसी अखण्डनगर लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टर विवेक वर्मा ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

दीपावली पर प्रदेश में बिजली की खपत का बना नया रिकॉर्ड

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- 149 मिलियन यूनिट की कोई बिजली आपूर्ति

अमृत विचार : दीपावली के अवसर पर उत्तर प्रदेश ने बिजली खपत का अब तक का सर्वाधिक रिकॉर्ड बना दिया। राज्य में रविवार की रात कुल 149 मिलियन यूनिट (1.49 करोड़ यूनिट) बिजली की आपूर्ति की गई, जो ऊर्जा खपत के नए शिखर को दर्शाती है। यह पहली बार है जब प्रदेश में एक ही दिन इतनी अधिक बिजली की खपत दर्ज की गई।

ऊर्जा विभाग के अधिकारियों के अनुसार, त्योहारों के दौरान बढ़ी रोशनी, सजावट, औद्योगिक इकाइयों और घरेलू उपयोग में हुई बढ़ोतरी के चलते यह रिकॉर्ड बना। शहरी क्षेत्रों से लेकर ग्रामीण इलाकों तक दीपावली की जगमगाहट ने बिजली की मांग को चरम पर पहुँचा दिया। इस दौरान राज्य में बिजली आपूर्ति की अधिकतम मांग 31,230 मेगावॉट तक पहुंची, जिसे ऊर्जा निगमों ने बिना किसी बड़े व्यवधान के पूरा किया।

ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर प्रदेश के सभी जिलों में निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए विशेष मॉनिटरिंग की गई। सभी वितरण केंद्रों और नियंत्रण कक्षों को अलर्ट पर रखा गया था। तकनीकी टीमों ने फील्ड में तैनात रहकर किसी भी फॉल्ट को तुरंत दुरुस्त किया। विभागीय आंकड़ों के मुताबिक, लखनऊ, कानपुर, वाराणसी, गोरखपुर और नोएडा जैसे बड़े शहरों में बिजली खपत में सर्वाधिक उछाल दर्ज किया गया। वहीं ग्रामीण अंचलों में भी रिकॉर्ड स्तर पर उपभोग बढ़ा, जो बताता है कि प्रदेश के हर कोने में दीपावली की रौनक पूरी तरह फैली रही।

बिजली निगम के अफसरों ने बताया कि पिछले वर्ष दीपावली पर लगभग 141 मिलियन यूनिट की खपत हुई थी। इस बार यह आंकड़ा आठ मिलियन यूनिट अधिक रहा। निरंतर बिजली आपूर्ति के लिए अग्रिम तैयारी, पर्याप्त उत्पादन और बैकअप व्यवस्था को सफलता का प्रमुख कारण माना गया। सरकार का कहना है कि यह उपलब्धि ऊर्जा आत्मनिर्भरता और मजबूत वितरण तंत्र की दिशा में यूपी की बड़ी सफलता है। दीपावली की रोशनी में जगमगाया उत्तर प्रदेश अब ऊर्जा आपूर्ति के क्षेत्र में भी नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर दिख रहा है।

उत्सव

प्रयागराज में मंगलवार 21 अक्टूबर को काली पूजा उत्सव के दौरान देवी काली के रूप में सजी एक कलाकार एक धार्मिक जुलूस में भाग लेती हुई। ● एजेंसी

आपदा में हर अन्नदाता के साथ खड़ी है सरकार : योगी

मुख्यमंत्री ने पंजाब के बाढ़ प्रभावित किसानों के लिए 1000 क्विंटल गेहूं बीज सहायता वाहनों को किया रवाना

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

मंगलवार को अपने आवास से पंजाब में बाढ़ विभिषिका से प्रभावित कृषकों को बीज सहायता वाहन प्रस्थान कार्यक्रम को संबोधित करते व वाहनों को झंडी दिखाकर रवाना करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। ● अमृत विचार

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को अपने सरकारी आवास से पंजाब के बाढ़ प्रभावित किसानों के लिए 1000 क्विंटल गेहूं बीज सहायता वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि दीपावली का वास्तविक आनंद तभी है, जब हम किसी जरूरतमंद या आपदा पीड़ित की सहायता के लिए खड़े हों। इसी भावना के साथ उत्तर प्रदेश सरकार आज पंजाब के अन्नदाता किसानों के साथ खड़ी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार हर संकट की घड़ी में नागरिकों के साथ है, चाहे वह राहत सामग्री हो, आर्थिक सहयोग या पुनर्वास का प्रयास। मुख्यमंत्री ने बताया कि अतिवृष्टि से प्रभावित पंजाब के किसानों की मदद के लिए भेजा गया यह गेहूं बीज बीबी-327 प्रजाति का है, जिसे 'करण शिवानी' के नाम से जाना जाता है। यह रोग-प्रतिरोधी, पोषणयुक्त और बायो-फोर्टीफाइड बीज है, जो केवल 155 दिनों में तैयार होकर प्रति हेक्टेयर 80 क्विंटल तक की उपज देने में सक्षम है। योगी ने कहा कि यह बीज पंजाब के किसानों के लिए नई उम्मीद लेकर जाएगा और उत्तर प्रदेश बीज एवं विकास निगम की दक्षता का भी प्रमाण बनेगा। उन्होंने बताया कि निगम आज 148 करोड़ रुपये के लाभांश पर कार्यरत है और मात्र एक वर्ष में 37 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया है।

सीएम योगी ने कहा कि पंजाब देश का ऐसा राज्य है, जिसने स्वतंत्र भारत में कृषि आत्मनिर्भरता की दिशा में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। परंतु इस बार आई बाढ़ ने किसानों के बीज भंडार तक को नष्ट कर दिया, जिससे आगामी फसलों पर संकट मंडरा रहा है। ऐसे समय में उत्तर प्रदेश सरकार राहत और सहयोग की भावना से उनके साथ खड़ी है। उन्होंने याद दिलाया कि पूर्व में भी पंजाब, हिमाचल और उत्तराखंड में बाढ़ के समय यूपी सरकार ने राहत सामग्री और वित्तीय सहयोग भेजा था।

मुख्यमंत्री ने बताया कि बहुत शीघ्र ही लखनऊ में पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी की स्मृति में "सीड पार्क" की स्थापना की जाएगी, जिसकी सभी औपचारिकताएं पूरी हो चुकी हैं। इसके अलावा राज्य के पांच अन्य स्थानों पर भी नए सीड पार्क स्थापित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण बीज समय पर मिलने से किसानों की लागत घटती है और उत्पादन में 30 से 50 प्रतिशत तक की वृद्धि होती है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश देश की कुल कृषि योग्य भूमि का मात्र 11 प्रतिशत हिस्सा रखता है, लेकिन खाद्यान्न उत्पादन में उसका योगदान 21 प्रतिशत है, यह प्रदेश के मेहनती किसानों और नीतिगत दक्षता का प्रमाण है।

इस अवसर पर योगी ने सिख परंपरा के षष्टम गुरु, श्री गुरु हरगोविंद जी महाराज की जयंती का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके जीवन से सेवा, त्याग और सहयोग की प्रेरणा मिलती है। दीपावली और गुरु जयंती की इस बेला में पंजाब के सभी अन्नदाता किसानों के प्रति उन्होंने शुभकामनाएं व्यक्त कीं और कहा कि यह पर्व नई ऊर्जा, संवेदना और एकता का संदेश लेकर आए।

कार्यक्रम में कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, राज्य मंत्री बलदेव सिंह औलख, पूर्व मंत्री महेंद्र सिंह, बीज निगम उपाध्यक्ष राजेश्वर सिंह, कृषि उत्पादन आयुक्त दीपक कुमार और प्रमुख सचिव संजय प्रसाद समेत अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

योगी सरकार की संवेदनशील पहल

पंजाब में बाढ़ से फसलें और बीज भंडार नष्ट होने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने त्वरित निर्णय लेकर 1000 क्विंटल उच्च गुणवत्ता वाले गेहूं बीज निशुल्क भेजने का आदेश दिया। यह निर्णय पंजाब के कृषि मंत्री द्वारा हाल ही में दिल्ली में बताए गए हालात के बाद लिया गया। यह न केवल किसानों के प्रति सरकार की संवेदनशीलता और दूरदृष्टि का उदाहरण है, बल्कि राज्यों के बीच सहयोग और मानवीय एकजुटता की मिसाल भी पेश करता है।

किराना दुकान में आग डेढ़ वर्षीय बच्चे की मौत, पिता गंभीर

बलरामपुर, अमृत विचार: दीपावली की शाम स्टेशन रोड स्थित एक किराना दुकान में दीपक से लगी आग ने खुशियों को मातम में बदल दिया। हादसे में दुकान पर बैठे पिता-पुत्र झुलस गए। इलाज के दौरान डेढ़ वर्षीय बालक सुभान की मौत हो गई, जबकि उसके पिता जाकिर (30) का उपचार बहराइच में चल रहा है। आग से लगभग चार लाख रुपये का सामान जलकर राख हो गया।

जानकारी के अनुसार, पचपेड़वा नगर के स्टेशन मोड़ चौराहे पर रमजान की किराना दुकान में मंगलवार शाम करीब सात बजे दीपक से आग लग गई। दुकान के मालिक रमजान ने बताया कि वह किसी काम से बाहर गए थे। दीपावली के अवसर पर मकान मालिक शिवकुमार ने करीब साढ़े छह बजे दीपक जलाया था। उसी दीपक से आग लगने की आशंका जताई जा रही है। आग लगने के दौरान दुकान पर रमजान का बेटा जाकिर और उसका डेढ़ वर्षीय पुत्र सुभान मौजूद थे। सामान बचाने की कोशिश में दोनों झुलस गए।

अदम्य साहस और बलिदान के प्रतीक बने तीन वीर पुलिसकर्मी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : 1 सितंबर 2024 से 31 अगस्त 2025 के बीच कर्तव्य पालन के दौरान उत्तर प्रदेश पुलिस के तीन वीर सपूत निरीक्षक सुनील कुमार, मुख्य आरक्षी दुर्गेश कुमार सिंह और आरक्षी सौरभ कुमार ने अपने प्राणों की आहुति देकर पुलिस बल का मस्तक ऊंचा किया।

25 मई 2025 को वांछित अभियुक्त की गिरफ्तारी के दौरान भीड़ और फायरिंग के बीच साहसपूर्वक डटे रहे। सिर में गोली लगने के बावजूद अंतिम सांस तक कर्तव्य निभाते हुए शहीद हुए। **आरक्षी सौरभ कुमार (गौतमबुद्धनगर)**

20 जनवरी 2025 को एक लाख के इनामी अपराधी की तलाश में ऑपरेशन के दौरान गोलियों की बौछार झेलते हुए वीरता से मोर्चा संभाला। गंभीर रूप से घायल होने के बाद भी साथियों का नेतृत्व किया और 22 जनवरी को वीरगति प्राप्त की। **निरीक्षक सुनील कुमार (एसटीएफ)**

17 मई 2025 को गो-तस्करों के विरुद्ध कार्रवाई के दौरान पिकअप वाहन से कुचले जाने पर शहीद हुए। दुर्गेश ने सर्वोच्च बलिदान देकर जौनपुर पुलिस का गौरव बढ़ाया। **मुख्य आरक्षी दुर्गेश कुमार सिंह (जौनपुर)**

भाजपा नेता ने युवक से सड़क पर रगड़वाई नाक

मेरठ, एजेंसी

- मेरठ का मामला, वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल
- पुलिस ने भाजपा नेता को गिरफ्तार किया

जिले में दो युवकों से अभद्रता करने और एक युवक से सड़क पर नाक रगड़वाने का वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित होने के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एक नेता को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि घटना 19 अक्टूबर की रात मेडिकल थानाक्षेत्र के तेजगढ़ी इलाके में हुई थी।

सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो में भाजपा किसान मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष विकुल चपराणा अपने साथियों के साथ मिलकर दो युवकों को धमकाते और उनकी कार के शीशे तोड़ते दिखाई दे रहे हैं। वीडियो में एक युवक हाथ जोड़कर माफी मांगता और सड़क पर सिर झुकाकर नाक रगड़ता दिखाई दे रहा है जबकि एक अन्य युवक उसे गालियां दे रहा है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, यह घटना ऊर्जा मंत्री डॉ. सोमेंद्र तोमर के दफ्तर के नीचे पार्किंग विवाद के दौरान हुई।

घटना के समय पुलिसकर्मी भी मौके पर मौजूद थे लेकिन उन्होंने आरोपियों को रोकने का प्रयास नहीं किया। पुलिस अधीक्षक (नगर) आयुष विक्रम सिंह ने बताया कि वीडियो वायरल होने के बाद मामले पर संज्ञान लिया गया और जांच में सामने आया कि दोनों पक्षों में पार्किंग को लेकर विवाद हुआ था। उन्होंने बताया कि मामला दर्ज कर मुख्य आरोपी विकुल चपराणा को गिरफ्तार कर लिया गया। मेडिकल थाना प्रभारी शीलेष कुमार के अनुसार, शिकायत पीड़ित युवक सत्यम रस्तोगी के भाई आदित्य रस्तोगी ने दर्ज कराई थी और घटना में शामिल अन्य लोगों की पहचान की जा रही है।इस घटना के बाद विपक्षी दलों ने भाजपा पर निशाना साधा। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया पर कहा, "भाजपाई सत्ता के अहंकार में चूर होकर किसी को भी अपमानित करने से नहीं चूकते हैं।

सड़क पर नाक रगड़ता युवक।

भाजपाई न भूलें, एक न एक दिन हर दंभ का अंत होता है। कांग्रेस ने ट्वीट कर कहा कि यह भाजपा का असली चेहरा है, जहां नेता खुद को राजा और जनता को तुच्छ समझते हैं। ऊर्जा मंत्री तोमर ने स्थानीय मीडिया से कहा कि उनका इस विवाद से कोई संबंध नहीं है। भाजपा जिलाध्यक्ष शिवकुमार राणा ने बताया कि वीडियो हमारे संज्ञान में आया है, पार्टी इस तरह के व्यवहार को स्वीकार नहीं करती। मामले की जानकारी प्रदेश और क्षेत्रीय नेतृत्व को भेज दी गई है

कर्मचारियों को दिया कम बोनस तो टोल से मुफ्त में निकाले वाहन

आगरा,एजेंसी

इस बार दिवाली पर कर्मचारियों को कम बोनस मिला तो कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी। इसका नतीजा यह हुआ कि आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर फतेहाबाद टोल बूथ से हजारों वाहन बिना टोल टैक्स दिए निकल गए। असंतुष्ट कर्मचारियों ने टोल के सभी गेट खोल दिए थे। कंपनियों की हड़ताल की वजह से टोल कंपनी को लाखों रुपये का नुकसान हुआ। विरोध प्रदर्शन के कारण सामान्य टोल संचालन और यातायात व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हो गई। सूचना पर पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची।

पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शांति व्यवस्था कायम की और अधिकारियों और कर्मचारी की आपस में वार्ता कराई। टोल अधिकारियों ने कर्मचारियों को आश्वासन दिया गया तब कहीं जाकर दो घंटे बाद फतेहाबाद टोल टैक्स पर कर्मचारियों ने काम शुरू किया। टोल के सीनियर अधिकारियों ने कर्मचारियों की 10 प्रतिशत वेतन बढ़ाने का आश्वासन दिया। फतेहाबाद टोल प्लाजा की जिम्मेदारी श्री साइन एंड दातार कंपनी के पास है। कंपनी ने मार्च 2025 से टोल प्लाजा का ठेका लिया है। टोल पर 21 कर्मचारी कार्यरत हैं जिन्हें दीपावली पर सिर्फ 1100 का बोनस दिया गया था।

खाली पड़ा टोल प्लाटा।

शिकोहाबाद में पेट्रोल पंप स्वामी लापता पुलिस जांच में जुटी

फिरोजाबाद, एजेंसी: फिरोजाबाद के शिकोहाबाद नगर में मंगलवार को मॉर्निंग वॉक पर निकले पेट्रोल पंप संचालक के लापता होने से सनसनी फैल गई। पुलिस ने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कर लापता पेट्रोल पंप मालिक की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस ने बताया कि शिकोहाबाद निवासी जीवेन्द्र सिंह (62) मॉर्निंग वॉक के लिये निकले थे लेकिन देर रात तक वापस घर नहीं लौटे।

परिजनों ने पुलिस में जीवेन्द्र सिंह की लापता होने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। लापता जीवैन्द्र सिंह का एक पेट्रोल पंप है तथा बेकरी का भी व्यवसाय है। इस संबंध में अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण अनुज कुमार चौधरी ने बताया कि शिकोहाबाद के व्यवसायी जीवेन्द्र सिंह घर से सुबह मॉर्निंग वॉक के लिए निकले थे।

प्रदूषण, धूल की चादर में लिपटा ताजमहल

आगरा, एजेंसी

धुंध की आगोश में ताजमहल।

दीपावली के अगले दिन मंगलवार सुबह प्रदूषण और धूल की वजह से ताजमहल परिसर में दृश्यता स्तर कम हो गया। यमुना किनारे बने ताज व्यू पॉइंट से ताजमहल धुंधला दिखाई दे रहा था जबकि सुबह के वक्त ताजमहल धवल और चमकता हुआ दिखाई देता है। स्थानीय निवासी सुबह सुबह टहलने निकले तो ताजमहल आम दिनों की तरह दिखाई नहीं दे रहा था बल्कि धूल में लिपटा हुआ दिखाई दे रहा था। जो पर्यटक सुबह के वक्त ताजमहल की खूबसूरती देखने के लिए आते हैं वो भी निराश थे।

देश-दुनिया से बड़ी तादात में यमुना के किनारे ताज व्यू प्वाइंट से पर्यटक ताजमहल देखने पहुंचते हैं। दरअसल सूरज की पहली किरण ताजमहल पर पड़ती है तो ताजमहल और भी ज्यादा खूबसूरत लगता है। सूरज की लालिमा किरणों से सफेद संगमरमर के साथ साथ ताजमहल पर लाल छवि का नजारा देखने को मिलता है। सुबह ऐसा नजारा सूर्योदय होने के बाद थोड़े से वक्त के लिए होता है। यमुना किनारे बने ताज व्यू प्वाइंट से सुबह के वक्त ताजमहल का देखना बेहद रोमांचकारी होती है। पर्यटक इसी उम्मीद से बड़ी तादात में पहुंचते हैं कि यमुना का किनारे बैठा जाएगा और ताजमहल को निहारा जाएगा। ताज व्यू प्वाइंट से पर्यटक निराश हो कर लौट गए। रात भर चले पटाखों की वजह से सुबह के वक्त प्रदूषण की मार देखने मिली। आगरा में वायु प्रदूषण का स्तर (एक्यूआई) 144 दर्ज किया गया जो जिसको खराब स्थिति माना जाता है। अभी कुछ और दिन इसी तरह का वातावरण रहने की आशंका जाहिर की जा रही है।

साइबर अपराध को अंजाम देने वाले सात सदस्य गिरफ्तार

भदोही, एजेंसी : पुलिस ने चीन और हांगकांग के साइबर अपराधियों से डेटा साझा कर भारत के कई राज्यों में साइबर अपराधों को अंजाम देने वाले एक गिरोह के सात सदस्यों को मंगलवार को गिरफ्तार किया। पुलिस ने यह जानकारी दी। अपर पुलिस अधीक्षक शुभम अग्रवाल ने बताया कि गिरफ्तार किये गए इन आरोपियों के खिलाफ 100 से ज्यादा शिकायतें दर्ज हैं और ये गिरोह 700 बैंक खाते संचालित कर रहे थे।

उन्होंने बताया कि साइबर अपराध के शिकार हुए ये व्यक्ति तमिलनाडु, तेलंगाना, केरल, कर्नाटक, गुजरात, राजस्थान और बिहार के हैं। अधिकारी ने बताया कि गिरफ्तार लोगों के पास से बरामद किये गये 10 मोबाइलों में साइबर अपराध से संबंधित एपीके फाइल आदि मिले हैं।

सिपाही की मौत मामले में अधिकारी की तहरीर पर रिपोर्ट

संवाददाता, सुलतानपुर

- हादसे के बाद संवेदनहीनता को लेकर मचा था बवाल

अमृत विचार: देहात कोतवाली क्षेत्र के अयोध्या-प्रयागराज मार्ग पर बीते शुक्रवार की रात हुए सड़क हादसे में सेल टैक्स उड़नदस्ता में तैनात सिपाही हरेंद्र प्रताप यादव की मौत के मामले में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। राज्य कर अधिकारी सोनम राय की तहरीर पर पुलिस ने दुर्घटना करने वाले मैजिक वाहन चालक के खिलाफ मामला पंजीकृत किया है।

जानकारी के अनुसार, शुक्रवार देर रात राज्य कर अधिकारी सुलतानपुर सोनम राय सचल दल के साथ सरकारी वाहन से खुशहालपुर उतुरी गांव के पास चेकिंग कर रही थीं। इसी दौरान उनकी टीम के साथ ड्यूटी कर रहे सिपाही हरेंद्र प्रताप यादव (46) पुत्र मनोज यादव, निवासी वीरपुर मिश्र, थाना खुखुन्दू, जिला देवरिया, को एक तेज रफ्तार मैजिक वाहन ने टक्कर मार दी। प्रतापगंज चौकी इंचार्ज प्रमोद कुमार घटना की सूचना मिलते ही वे मौके पर पहुंचे और सहयोगी पुलिस कर्मियों की मदद से घायल सिपाही को जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद शनिवार को परिजनों ने जिला मुख्यालय पहुंचकर राज्य कर अधिकारी सोनम राय पर लापरवाही और संवेदनहीनता के आरोप लगाए थे। उनका कहना था कि हादसे के समय अधिकारी घायल सिपाही को अस्पताल पहुंचाने के बजाय मौके से फरार हो गईं, जिससे उनकी मौत हो गई।

अनियंत्रित वाहन के पेड़ से टकराने पर दो लोगों की मौत

कुशीनगर, एजेंसी: जिले में सोमवार देर रात तेज रफ्तार एक अनियंत्रित जीप के पेड़ से टकराने की दुर्घटना में वाहन में सवार दो लोगों की मौत हो गई और दो अन्य लोग घायल हो गये।

पुलिस ने बताया कि तुर्कपट्टी थानाक्षेत्र के सपही बुजुर्ग गांव के रहने वाले झगरु शर्मा, उमेश शर्मा, कृष्णा शर्मा और राहुल गौंड सोमवार देर शाम एक अन्य व्यक्ति को गोरखपुर के एक अस्पताल में भर्ती कराने के लिए निकले थे। पुलिस के मुताबिक, व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती कराने के बाद चारों लोग जीप से घर लौट रहे थे कि तभी करीब साढ़े तीन बजे थरुआडीह के पास उनका वाहन अनियंत्रित होकर एक पेड़ से जा टकराया। पुलिस ने बताया कि इस दुर्घटना में उमेश शर्मा (55) व झगरू शर्मा (45) की मौके पर ही मौत हो गई।

न्यूज ब्रीफ

युवती के अपहरण में नामजद को भेजा जेल

भोजपुर, अमृत विचार : उप निरीक्षक अंकुर चौधरी ने गांव अक्का भीकनपुर निवासी शानेआलम को हिरासत में लेकर पूछताछ करने के बाद जेल भेज दिया। युवक के खिलाफ एक ग्रामीण ने पांच दिन पहले बेटी को बहला फुसलाकर भगा ले जाने के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया था।

दंपती समेत चार पर मारपीट की रिपोर्ट

भोजपुर, अमृत विचार : पुलिस ने गांव चकबेगमपुर निवासी कमल सैनी की तहरीर पर गांव के ही सुरजपाल उसकी पत्नी बीना एवं नौबत सिंह और उसके बेटे प्रवेंद्र सिंह के खिलाफ मां और भाई के साथ मारपीट करने एवं जान से मारने की धमकी देने के आरोप में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हादसों में चार घायल

ठाकुरद्वारा, अमृत विचार : मंगलवार को उत्तराखंड के थाना गदरपुर के भोगपुर राम निवासी मंगत सिंह पुत्र राम सिंह किसी काम से ठाकुरद्वारा आए थे वापस लौटते समय ठाकुरद्वारा काशीपुर मार्ग पर वाहन की चपेट में आकर घायल हो गए। वहीं थाना डिलारी के गांव बहादुर नगर निवासी अंकुश पुत्र ओमप्रकाश की बाइक असंतुलित होकर सड़क पर गिर गयी जिसमें अंकुश घायल हो गया। वार्ड 14 निवासी मोहम्मद फारूक सन्यासी वाला गांव से वापस बाइक से लौट रहा था इसी दौरान फैजुल्लागंज स्थित मंदिर के निकट सड़क पार कर रहे भानु सिंह की बाइक से टक्कर हो गई जिसमें दोनों लोग घायल हो गए। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

तीन गिरफ्तार, चोरी की बाइक बरामद

ठाकुरद्वारा, अमृत विचार : प्रभारी निरीक्षक संजय पांचाल के नेतृत्व में पुलिस टीम ने देर रात फैजुल्लागंज तिराहे पर चेकिंग के दौरान तीन अभियुक्तों को चोरी की बाइक सहित पकड़ा। निशानदेही पर मुण्डोवाली कॉलोनी के पास खंडहर से दो और बाइकें बरामद कीं। अभियुक्तों की पहचान संजू पुत्र महेश सिंह निवासी असलेमपुर, अतुल कुमार पुत्र गंभीर सिंह निवासी फर्रखपुर और अमित कुमार पुत्र उदल सिंह निवासी लौंगी खुर्द के रूप में हुई है। तीनों का चालान कर दिया। आरोपियों को कोर्ट में पेश किया गया।

4.18 किलो मार्फिन के साथ तस्कर गिरफ्तार

पंजाब और नागालैंड समेत कई राज्यों से मादक पदार्थों को लाते थे आरोपी, डीसीएम में बना रखा था गुप्त केबिन

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : बारादरी थाना पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले अंतर्राज्यीय गिरोह का पर्दाफाश करते हुए शाहजहांपुर के मीरानपुर कटरा थाना क्षेत्र के बंगसान निवासी सिराज अहमद को चार किलो 186 ग्राम मार्फिन के साथ गिरफ्तार किया है। गिरोह का सरगना देवचरा, भमोरा निवासी सुरेन्द्र शर्मा फरार हो गया। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम लगातार दबिश दे रही है। आरोपी डीसीएम में गुप्त केबिन बनाकर कई राज्यों से मादक पदार्थों को लाकर उसकी सप्लाई करते थे। बरामद की गई मार्फिन की कीमत अंतर्राष्ट्रीय बाजार में करीब चार करोड़ 15 लाख रुपये बताई जा रही है।

बारादरी थाना प्रभारी धनंजय पांडे ने बताया कि पुलिस मंगलवार सुबह गश्त कर रही थी। इसी बीच जानकारी मिली कि डोहरा रोड स्थित छात्रावास के पास एक डीसीएम गाड़ी में भारी मात्रा में तस्कर मादक पदार्थ छिपाकर ला रहे हैं। जिन्हें सप्लाई करेंगे। सूचना पर पहुंची पुलिस टीम ने डीसीएम को रोककर चालक सिराज अहमद को नीचे उतरा और गाड़ी की तलाशी लेनी शुरू की। पुलिस ने गाड़ी के नीचे बने एक गुप्त बॉक्स को खोला तो उसमें मार्फिन रखी हुई थी। पुलिस ने जैसे ही मार्फिन बरामद की तो सरगना सुरेन्द्र शर्मा दीवार फांदकर पुलिस को चकमा देते हुए मौके से फरार हो गया। फरार सरगना की तलाश में पुलिस की टीमें उसके संभावित ठिकानों पर लगातार दबिश दे रही हैं। दावा है कि उसे जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

गिरफ्तार तस्कर के विषय में जानकारी देते हुए एसपी सिटी मानुष पारीक।

- फरार सरगना की गिरफ्तारी के लिए पुलिस दे रही दबिश

चालक आठवीं पास, हर चक्कर का लेता था एक लाख

पुलिस पूछताछ में गिरफ्तार तस्कर सिराज ने बताया कि उसने आठवीं तक की पढ़ाई की है। पूर्व में वह बड़े ट्रकों पर ड्राइविंग का काम करता था। सुरेन्द्र शर्मा भी एक ट्रक चलाता था। दोनों की इसी दौरान मुलाकात हुई। धीरे-धीरे दोस्ती बढ़ी तो सुरेन्द्र शर्मा ने कहा कि दूसरे की किराए पर गाड़ी क्यों चलाते हो खुद की ले ले। इस पर सिराज ने रुपये न होने का हवाला दिया। उसके बाद पांच लाख रुपये जमा कराकर उसे एक डीसीएम लोन पर दिलवा दी। उसी डीसीएम से सुरेन्द्र शर्मा महीने में एक या दो बार उसे लेकर पंजाब या नागालैंड जाता था। वहीं से बैग में मार्फिन या स्मैक लेकर खाली गाड़ी से ही वापस आता था। सुरेन्द्र शर्मा ने डीसीएम में नीचे एक कैबिन बनवाया था, उसी में माल रखकर लाता था। जिसके बदले में हर एक चक्कर का उसे एक लाख रुपये देता था। बाकी समय में वह मंडी में गाड़ी चला कर अपना खर्चा निकालता था।

एसपी सिटी मानुष पारीक ने बताया कि अंतर्राज्यीय गिरोह के तस्कर को 4.15 करोड़ रुपये की मार्फिन के साथ गिरफ्तार किया गया है। गिरोह का सरगना मौके से फरार हो गया। जिसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम लगातार दबिश दे रही है।

बाहर जाते समय बरेली में मोबाइल बंद कराकर जाता था खाली हाथ

सिराज ने बताया कि बरेली में माल उतारने के बाद वह अपने घर चला जाता था, जबकि सुरेन्द्र शर्मा उस माल को किसे देता था, कहां सप्लाई करता था। उसे उसके बारे में जानकारी नहीं है। बरेली से बाहर ले जाते समय उसका मोबाइल फोन बंद करवा कर यहीं रखवा देता था, जब लौट कर आता था तो मोबाइल वापस देता था। सुरेन्द्र शर्मा पहले अपनी गाड़ी से यह काम करता था, लेकिन चार साल पहले उसे कैंट थाना क्षेत्र में पकड़ लिया गया था। उसके बाद से उसने अपनी गाड़ी से यह काम करना बंद कर दिया था। इस बार वह विलयधाम, रामपुर, मुरादाबाद, गाजियाबाद, डासना, पानीपत, करनाल होते हुए फगवाडा गया था। वहां से माल लेकर देर रात बरेली पहुंचा था।

धर्मांतरण कराने में पादरी समेत 3 गिरफ्तार, भेजा जेल

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- आर्थिक रूप से कमजोर परिवार को रुपयों का लालच देकर बनाते थे निशाना
- मकान में रविवार को बीमारों को विशेष प्रार्थना कराने के साथ करते थे ब्रेनवास

अमृत विचार : बारादरी थाना क्षेत्र की सुपर सिटी कॉलोनी के मकान में धर्मांतरण का खेल चल रहा था। वहां पर गरीब परिवार की महिलाओं और बच्चों को आर्थिक सहायता का लालच देकर उनका धर्मांतरण कराने की तैयारी थी। हालाकि, आरोपी अपने मकसद में कामयाब होते कि पुलिस ने रविवार को पादरी समेत तीन को गिरफ्तार कर लिया। तीनों आरोपियों को कोर्ट में पेश किया गया। जहां से सभी को जेल भेज दिया गया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान सुपर सिटी निवासी पादरी सुमित मैसी, अमित मैसी उर्फ अक्षय और सनराइज निवासी सत्यपाल के रूप में हुई।

बारादरी थाना प्रभारी धनंजय पांडे ने बताया कि सुभाषनगर निवासी ऋषभ ठाकुर ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी। आरोप था कि उनके दोस्त निर्दोष राठौर ने उन्हें जानकारी दी कि इसाई मिशनरी से जुड़े कुछ लोग सुपर सिटी में किराये का मकान लेकर रह रहे हैं। साथ ही वहां पर भोले-भाले व गरीब महिलाओं और वच्चों को प्रलोभन देकर उनका धर्म परिवर्तन करा रहे हैं। रविवार को विशेष प्रार्थना के नाम पर कई महिलाएं व बच्चों को इसाई धर्म के ग्रन्थों के बारे में बताया जा रहा है।

बीमारों को ठीक करने का भी आश्वासन देकर बुलाया गया था। इसके साथ ही सभी को रुपये बांटने का भी प्रलोभन दिया जा रहा है। इस पर वह दोस्तों के साथ मकान पर पहुंचे तो वहां पर पादरी ने बताया कि दीक्षा देकर इसाई बनाया जा रहा है। इसके बाद उन्होंने पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और तीनों आरोपियों को मौके से गिरफ्तार कर लिया। तीनों आरोपियों को कोर्ट में पेश करने के बाद उन्हें जेल भेज दिया गया।

मारपीट में दो घायल पांच के खिलाफ रिपोर्ट

संवाददाता, स्वार

- घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया

अमृत विचारः कहासुनी को लेकर कुछ युवकों ने ट्रक ड्राइवरों पर जानलेवा हमला कर दिया। इस हमले में तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया है।

नगर के मोहल्ला रसूलपुर निवासी शाहरुख खां ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि ट्रक चालक भाई अरमान, अयान व चचेरा भाई मुराद 16 अक्टूबर की रात नरपतनगर से ट्रक से वापस लौट रहे थे।

जैसे ही वे बुधवार की बाजार स्थित बैंक के सामने पहुंचे।वहां पहले से घात लगाए बैठे अतीक व युसूफ,शाबान शान, जीशान और रऊफ निवासी रसूलपुर ने धारदार हथियार, सरिया और लाठी-डंडों से हमला कर दिया। आरोपियों ने दो-तीन दिन पहले हुई कहासुनी के चलते हमला किया।

जान से मारने की नीयत से ताबड़तोड़ वार किए जिससे वह लोग गंभीर रूप से घायल हो गये।

घटना में अरमान और मुराद के सिर और शरीर पर गंभीर चोटें आईं। आरोपियों ने ट्रक में भी तोड़फोड़ भी की। घायलों को जिला अस्पताल ले जाया गया।पुलिस ने पांच आरोपियों के खिलाफ संबंधित धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है।

अमृत विचार कार्यालयों में हुआ दीपावली पूजन

बरेली कार्यालय

- बरेली, लखनऊ, हल्द्वानी, अयोध्या कानपुर और मुरादाबाद कार्यालय में विधि विधान से हुआ पूजन

अमृत विचार : दीपावली पर्व पर पीलीभीत बाईपास रोड स्थित अमृत विचार के प्रधान कार्यालय में सोमवार अपराह्न 3 बजे गणेश-लक्ष्मी की पूजा हुई। पंडित किशोर जोशी ने विधि-विधान से पूजन संपन्न कराया। इसके बाद प्रसाद का वितरण हुआ। इस अवसर पर बरेली इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डा. केशव अग्रवाल, कुलपति डॉ. लता अग्रवाल, प्रति कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार अग्रवाल, प्रति कुलपति डॉ. किरण अग्रवाल, डा. अर्जुन अग्रवाल, डा. चीना गर्ग, डा. वरुण अग्रवाल, डा. प्रज्ञा मिश्रा, अमृत विचार के सीओओ पार्थो कुनार, आईटी हेड हरिओम गुप्ता, अतुल श्रीवास्तव, सुबोध शर्मा, अजीत श्रीवास्तव आदि शामिल हुए। पूजा समापन के बाद सभी ने एक-दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएं दीं और सुख-समृद्धि की कामना की। लखनऊ कार्यालय में भी दीपावली पर विधि-विधान से पूजन किया गया।

इस मौके पर समूह संपादक राजेश श्रीनेत, सीएमओ (हेड आफ आपरेशन, ई) एपी सिंह, कार्यकारी संपादक अनिल त्रिगुणायत व समूह प्रसार प्रबंधक विनोद सिंह सहित तमाम कर्मचारी मौजूद रहे। अमृत विचार हल्द्वानी के रामपुर रोड स्थित कार्यालय में सोमवार को दीपावली का पूजन हुआ। मुख्य प्रबंधक अजय सक्सेना ने विधि विधान से विघ्नहर्ता गणेश और लक्ष्मी जी की पूजा अर्चना की। इस दौरान विनोद राजपूत, अंकुर शर्मा, सर्वेश तिवारी, नरेंद्र देव सिंह, मनोज कुमार मौजूद रहे।

अमृत विचार कार्यालय, बरेली में पूजन के दौरान मौजूद बरेली इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डा. केशव अग्रवाल, कुलपति डॉ. लता अग्रवाल, प्रति कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार अग्रवाल, प्रति कुलपति डॉ. किरण अग्रवाल, डा. अर्जुन अग्रवाल, डा. चीना गर्ग, डा. वरुण अग्रवाल, डा. प्रज्ञा मिश्रा, सीओओ पार्थो कुनार, आईटी हेड हरिओम गुप्ता, अतुल श्रीवास्तव, सुबोध शर्मा व अजीत श्रीवास्तव आदि। ● अमृत विचार

कानपुर कार्यालय परिसर में विघ्नहर्ता भगवान गणेश और लक्ष्मी जी का पूजन किया गया। आतिशबाजी के साथ ही मिठाइयां बांटी गईं। इस अवसर पर कार्यकारी संपादक दिग्विजय सिंह, विज्ञापन प्रबंधक राजेश श्रीवास्तव व निशांत पाठक व टीम के अन्य सदस्य मौजूद रहे। मुरादाबाद अमृत विचार कार्यालय पर दिवाली का पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। सोमवार को मुरादाबाद कार्यालय परिसर में रंगोली बनाई गई।

प्रबंधक राहुल शर्मा, सिटी इंचार्ज विनोद श्रीवास्तव, एच आर मिसवा खान ने साथी रिपोर्टर के साथ लक्ष्मी-गणेश की विधिवत पूजा अर्चना की। इसके बाद कार्यालय प्रबंधक द्वारा सभी साथियों में मिठाई का वितरण किया गया। इस अवसर पर रिपोर्ट शुभम शर्मा, धर्मेंद्र सिंह, फोटोग्राफर राजेश राजा और विज्ञापन विभाग से प्रिया सिंह मौजूद रहीं। अयोध्या कार्यालय में भी पूजन कर दीपावली का पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। इस मौके पर अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

बाइक एजेंसी में चोरी सीसीटीवी भी ले गए चोर

कार्यालय संवाददाता, सीबीगंज

- दीवार पर लगी तार काटकर अंदर दाखिल हुए चोर, जांच में जुटी पुलिस

अमृत विचारः सीबीगंज में बाइक एजेंसी की दीवार पर लगे कांटे वाले तार काटकर घुसे अज्ञात चोरों ने पहले सीसीटीवी कैमरे तोड़े और फिर ऑफिस की ग्रिल काटकर दराज में रखे करीब चार लाख रुपये, 20 चांदी के सिक्के और अन्य सामान लेकर फरार हो गए। सूचना पर सीबीगंज पुलिस के साथ ही फोरेंसिक टीम और डॉग स्क्वॉट मौके पर पहुंची।

गांधीपुरम निवासी मनीष खंडेलवाल की सीबीगंज क्षेत्र में महेशपुरा रामपुर रोड स्थित पर खंडेलवाल ऑटोमोबाइल (हीरो बाइक) एजेंसी है। उन्होंने बताया कि सोमवार रात को वह एजेंसी को बंद करके गए थे। डयूटी पर गार्ड तैनात था। रात में किसी समय चोर एजेंसी के पीछे की दीवार के तार काटकर अंदर घुस गए फिर सीसीटीवी कैमरे तोड़े। उसके बाद ऑफिस की खिड़की की ग्रिल को कटर से काटकर चोर अंदर घुस गए। चोर कैश रूम की दराज में रखे बिक्री के करीब चार लाख रुपये, गिफ्ट में देने के लिए रखे 20 चांदी के सिक्के, पूजा स्थल पर रखे कुछ चांदी के सिक्के और करीब सात हजार रुपये की रेजगारी व अन्य सामान ले गए। सुबह जब वह एजेंसी पर पहुंचे तब घटना की जानकारी हुई। थाने पर सूचना देने के काफी देर बाद पुलिस मौके पर पहुंची। जिसके बाद फोरेंसिक टीम और डॉग स्क्वॉड बुलाया गया। चोर तार कटर और रिंच मौके पर छोड़ गए। चोर टूटे हुए सीसीटीवी कैमरे अपने साथ ले गए। तहरीर मिलने के बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

एनईआर की पूजा स्पेशल देगी यात्रियों को राहत

बरेली, अमृत विचारः छठ पर यात्रियों की भारी भीड़ को देखते हुए रेल प्रशासन ने लुधियाना से कटिहार के बीच गोरखपुर मार्ग से एक स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है। यह ट्रेन बरेली से होकर भी गुजरेगी।

पूर्वोत्तर रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी पंकज कुमार सिंह ने बताया कि 04660 लुधियाना-कटिहार पूजा स्पेशल ट्रेन 23 अक्टूबर को लुधियाना से शाम 4:50 बजे प्रस्थान करेगी।

यह ट्रेन अंबाला कैंट, सहारनपुर, मुरादाबाद, बरेली, शाहजहांपुर, सीतापुर, गोंडा और गोरखपुर होते हुए 25 अक्टूबर की सुबह कटिहार पहुंचेगी। वहीं वापसी में 04659 कटिहार-लुधियाना पूजा स्पेशल 25 अक्टूबर को सुबह 6:30 बजे चलेगी और दूसरे दिन शाम 6:30 बजे लुधियाना पहुंचेगी।

शतरंज में एक स्वर्ण और तीन रजत पदक जीते

बरेली, अमृत विचारः अलीगढ़ में हुई प्रदेशीय विद्यालयीय शतरंज प्रतियोगिता में मंडल के खिलाड़ियों ने विभिन्न वर्गों में स्वर्ण और रजत पदक जीतकर मंडल का नाम रोशन किया।

प्रतियोगिता में अंडर-14 बालक वर्ग में टीम ने स्वर्ण पदक अपने नाम किया। विजेता खिलाड़ियों में बरेली के कामेंद्र सागर, आरुष शर्मा, आद्विक भट्टाचार्य, शाहजहांपुर के अनंत शर्मा, पीलीभीत के अमित गंगवार शामिल रहे। बालिका अंडर-14 वर्ग में मंडल की छात्राओं ने बेहतरीन खेल दिखाया। बरेली की शशिपाल, पलक और पीलीभीत की पलक व अदिति ने रजत पदक हासिल किया। अंडर-17 बालिका वर्ग में बरेली की अनुष्का वर्मा, प्रियांशी, शाहजहांपुर की कंचन मौर्य, पीलीभीत की इस्तिका खानम और अक्षिता पटेल ने रजत पदक हासिल किया। वहीं अंडर-19 बालिका वर्ग में छात्राओं ने अपना दबदबा बनाए रखा। अमनप्रीत कौर, दिव्या यादव, नंदिनी और पीलीभीत की समीक्षा गुप्ता व नेहा गंगवार ने रजत पदक जीतकर परचम बुलंद किया।

7 नवंबर से होगी स्टेट ताइक्वांडो चैंपियनशिप

बरेली, अमृत विचार : उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन की ओर से जिले में स्टेट ताइक्वांडो चैंपियनशिप का आयोजन 7 से 9 नवंबर तक किया जाएगा। इसमें 40 जिलों से करीब 600 खिलाड़ी अपने कौशल और ताकत का प्रदर्शन करेंगे। प्रतियोगिता सेक्रेड हार्ट्स स्कूल में आयोजित की जाएगी। प्रतियोगिता में विभिन्न आयु वर्गों के मुकाबले होंगे। इसमें सब जूनियर, कैडेट, में, जूनियर और सीनियर वर्ग में आठ भार वर्ग निर्धारित किए गए हैं।

डॉ. रवीश अग्रवाल बने आईएमए यूपी के अध्यक्ष

बरेली, अमृत विचारः आईएमए के पूर्व अध्यक्ष और आईएमए यूपी के पूर्व उपाध्यक्ष एवं वर्तमान एडिटर जनरल डॉ. रवीश अग्रवाल को आईएमए यूपी 2026-2027 का अध्यक्ष चुना गया है। डॉ. रवीश अग्रवाल ने बताया कि आईएमए के प्रदेश कार्यालय से सोमवार को परिणाम घोषित कर दीपावली का उपहार दिया गया। उन्होंने कहा कि बरेली से 13 वर्ष के बाद दोबारा प्रदेश अध्यक्ष चुना गया है, इससे पहले डॉ. रवि मेहरा प्रदेश अध्यक्ष बने थे। डॉ. रवीश अग्रवाल को नई जिम्मेदारी मिलने पर आईएमए बरेली के सदस्यों में खुशी की लहर है। उनके घर पर चिकित्सकों और समाज के विभिन्न वर्ग के लोगों ने पहुंचकर बधाई दी। चिकित्सकों ने कहा कि यह उपलब्धि न केवल डॉ. रवीश अग्रवाल के लिए बल्कि पूरे बरेली के लिए सम्मान की बात है।

बरेली में अभिनेता असरानी को मिली थी मानद उपाधि

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- इन्वर्टिस विश्वविद्यालय के 11वें दीक्षांत समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में पहुंचे थे

अमृत विचार : फिल्म जगत के प्रसिद्ध अभिनेता गोवर्धन असरानी के निधन की खबर से देशभर में शोक की लहर है। उनकी अदाकारी ने न केवल बॉलीवुड बल्कि दर्शकों के दिलों पर भी अमिट छाप छोड़ी। गोवर्धन असरानी का बरेली से भी जुड़ाव रहा, जिसे वे हमेशा स्नेह और गर्व के साथ याद करते थे। 9 मई 2025 को इन्वर्टिस विश्वविद्यालय के 11वें दीक्षा समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया था। इस दौरान उन्हें डॉक्टरेट ऑफ आर्ट्स की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया था।

उपाधि ग्रहण करते समय उन्होंने भावुक होकर कहा था कि मेरे पिता ने कभी नहीं सोचा होगा कि उनके बेटे के नाम के आगे डॉक्टर लिखा जाएगा। उन्होंने कहा था कि यह सम्मान केवल उनका नहीं बल्कि पूरी फिल्म इंडस्ट्री का है। कार्यक्रम के मंच पर उन्होंने बरेलीवासियों के स्नेह के प्रति आभार जताते हुए कहा था कि मैं मुंबई जाकर सबको कहूंगा, अगर सम्मान पाना है तो बरेली आओ। असरानी ने अपने चिर-परिचित अंदाज में कहा था कि "हम कलाकारों के लिए दर्शकों की तालियां और सीटी ही ऑक्सीजन हैं। उनके इन शब्दों ने समारोह में उपस्थित सभी लोगों को भावुक कर दिया था। आज जब शोले के मशहूर जेलर असरानी हमारे बीच नहीं हैं, तब बरेलीवासी भी उन्हें याद कर भावुक हैं। शहर के कई फिल्म प्रेमियों ने उनके योगदान को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि बरेली को लेकर उनका लगाव हमेशा याद किया जाएगा।

आधा किमी का काटना पड़ रहा चक्कर

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- धूल-मिट्टी भी कर रही परेशान, सर्विस रोड पर फैली बजरी पर हादसे का बना रहता डर
- एनएचएआई मुरादाबाद डिवीजन पिछले छह माह से दो लेन के पुल का करा रहा निर्माण

अमृत विचार : बड़ा बाईपास पर जिले के सबसे बड़े ब्लैक स्पॉट नवदिया झादा पर फ्लाईओवर निर्माण का कार्य तेजी से चल रहा है। करीब एक किलोमीटर से अधिक लंबे पुल के निर्माण के लिए बीसलपुर रोड से बरेली की तरफ आने वाले ट्रैफिक को डायवर्ट किया गया है, इस वजह से करीब आधा किलोमीटर राहगीरों को अधिक दूरी तय कर दिक्कतें उठानी पड़ रही हैं। सबसे ज्यादा दिक्कत साइकिल सवार और पैदल जाने वाले लोगों को हो रही है। इस चौराहे पर पुल के दोनों हिस्से बन चुके हैं। इस कारण इनके नीचे से निकलने की किसी को अनुमति नहीं है। ऐसे में डायवर्ट किए ट्रैफिक से निकल कर लोग अपने गंतव्य स्थान के लिए आना-जाना कर रहे हैं। सबसे बड़ी दिक्कत धूल मिट्टी से हो रही है, गाड़ियों के बड़ी संख्या में आने जाने से सर्विस रोड पर दिन में खूब धूल उड़ती है, बजरी पर दोपहिया वाहनों के फिसलने का डर बना रहता है, लोग किसी तरह आना-जाना करने को मजबूर हैं।

दरअसल, पिछले छह माह से पुल का निर्माण कार्य चल रहा है। बड़ा बाईपास पर पुल भी दो लेन का बनाया जा रहा है ताकि बीसलपुर की तरफ से बरेली आने और बरेली की तरफ से ट्रैफिक बिना किसी रुकावट के आना-जाना कर सके। इसके साथ ही हादसे की गुंजाइश भी समाप्त हो जाए। इस जगह पर पूर्व में बड़े बड़े हादसे हुए हैं। लगातार बढ़ते हादसों पर प्रशासन ने एनएचएआई के साथ मिलकर पुल बनवाने के लिए शासन से मंजूरी ली। इसके बाद जनपद के बड़ा बाईपास पर सबसे बड़े ब्लैक स्पॉट नवदिया झादा पर फ्लाईओवर निर्माण की कार्रवाई शुरू कराई। एनएचएआई का मुरादाबाद डिवीजन फ्लाईओवर का निर्माण करा रहा है। यह पुल दिल्ली-लखनऊ नेशनल हाईवे को लिंक करने के लिए रजऊ परसपुर और परसाखेड़ा के बीच स्थित बड़ा बाईपास पर बन रहा है।

बड़ा बाईपास पर ही बीसलपुर-बरेली रोड क्रॉस करती है। यहां हादसों में दर्जनों लोग जान गंवा चुके हैं। इधर अमृत विचार की टीम ने मंगलवार को पुल के कार्य की स्थिति का जायजा लिया इस दौरान लोगों की समस्याएं भी सामने आईं। लोग आधा किलोमीटर बरेली और बीसलपुर रोड की तरफ आना-जाना कर रहे हैं। इसके साथ ही उन्हें धूल-मिट्टी के बीच से गुजरना पड़ रहा है।

चक्की के पट्टे की चपेट में आकर युवक की जान गई

लोगों से पूछताछ करते इंस्पेक्टर। ● अमृत विचार

संवाददाता मसवासी

अमृत विचारः नगर निवासी चक्की स्वामी की पट्टा चढ़ाते समय पट्टे की चपेट में आने से मौत हो गई।

नगर निवासी नन्ने(45) पुत्र सफदर पिकअप चलाता था। कुछ ही दिन पहले नन्ने ने मझरा खुशहालपुर मार्ग पर चक्की लगाई थी। जिस पर वह आटा व धान के सेलर पर कुटाई करता था। मंगलवार को वह धान की कुटाई करने के लिए चक्की का पटा चढ़ा रहा कि अचानक पट्टे में उसका पैर आ गया। पट्टे में फंसने के बाद इंजन ने कई राउंड लगा दिए। जिससे मौके पर ही नन्ने की मौत हो गई। परिवार में चीख पुकार मच गई। मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। किसी तरह पट्टे में नन्ने को बाहर निकाला। सूचना मिलते ही कोतवाली प्रभारी प्रदीप मलिक भी मौके पर पहुंचे। परिवार ने कार्रवाई से इंकार कर दिया। चक्की स्वामी की लड़की की एक माह बाद शादी है।

आतिशबाजी छोड़ने में झुलसे लोग

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचारः लाख समझाने के बावजूद आतिशबाजी छोड़ने में लापरवाही बरती गई और लोग रॉकेट, पटाखे और फुलझड़ियां से झुलस गए। किसी की आंख तो किसी की नाक पर रॉकेट और पटाखों ने जख्म कर दिए। केडी डालमियां नेत्र चिकित्सालय में घायलों का इलाज हो रहा है। आंखें जख्मी होने से परिजनों के हाथ-पांव फूले हुए हैं और ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि जख्मियों की आंखें ठीक हो जाएं।

अमृत विचार ने रविवार को दीपावली पर आतिशबाजी के दौरान बरतें सावधानी शीर्षक से खबर प्रकाशित की थी और दो नेत्र विशेषज्ञों डॉ. किशारी लाल और डॉ. विक्रम द्वारा दी गई सलाह को भी प्रकाशित किया था। इसके बावजूद लोगों ने आंख के बारूद से झुलसने के बाद उसे रगड़ लिया और जख्म को गहरा कर लिया। आतिशबाजी छोड़ते समय झुलसने वालों की लंबी सूची है। आंख के झुलसने के बाद आए मरीजों का इलाज कर रहे नेत्र विशेषज्ञ डॉ. विक्रम बताते हैं कि लोगों ने आतिशबाजी छोड़ते समय लापरवाही बरती जिसके कारण उनकी आंखों में बारूद पहुंच गया। यदि आंख में बारूद पहुंचने के बाद ठंडे पानी से धो दिया जाता तब इतनी स्थिति खराब नहीं होती। लेकिन, मरीजों ने आंखों को रगड़ लिया है जिसके कारण आंख के भीतर जख्म हो गए हैं। गदियाखेड़ा का गोविंद बताता है कि वह रॉकेट छोड़ रहा था और एक रॉकेट में ऐसा लगा की उसमें आग नहीं लगी है। जैसे ही वह राकेट में दोबारा आग लगाने गया रॉकेट एक दम से जल उठा और उसका बारूद उसकी आंख में चला गया। उसकी आंख जख्मी हो गई।

घायल गोविंद।

घायल यशपाल।

घायल अजय।

घायल जितेंद्र।

"जिला अस्पताल में आतिशबाजी से झुलसने वालों के लिए बर्न वार्ड के अलावा चार अन्य वार्डों को झुलसे लोगों के लिए तैयार कराया गया था। लेकिन, जिला अस्पताल में झुलसने वाला कोई मरीज नहीं पहुंचा है।

– डॉ. बीसी सक्सेना, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक जिला अस्पताल

अमृत विचार

बुधवार, 22 अक्टूबर 2025

सबसे महान जीत, प्रेम की होती है। यह हमेशा के लिए दिल जीत लेती है।
–सम्राट अशोक

आत्मनिर्भर होती रक्षा

देश ने 2014 के बाद से रक्षा निर्यात में तीस गुना वृद्धि हासिल की है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह दावा राजनीतिक वक्तव्य नहीं, आंकड़ों से समर्थित तथ्य है। रक्षा मंत्रालय के आंकड़े कहते हैं, 2014 में भारत का रक्षा निर्यात मात्र 686 करोड़ रुपये का था, आज यह बढ़कर 21,000 करोड़ रुपये से ज्यादा है। भारत जैसे देश के लिए, जो विश्व के सबसे बड़े हथियार आयातकों में है, यह वृद्धि आत्मनिर्भरता की दिशा में एक ऐतिहासिक बदलाव है। हमारे शिप याड्र्स ने बीते दशक में 40 से ज्यादा स्वदेशी युद्धपोत और पनडुब्बियां नौसेना को दी हैं। देश लंबे समय तक अमेरिका, रूस और फ्रांस से भारी मात्रा में हथियार आयात करता रहा है। अब हालात बदलने लगे हैं और ऐसे में उसका हथियारों का निर्यातक के रूप में उभरना वैश्विक रक्षा बाजार में युगांतकारी है। यह प्रगति व्यावसायिक उपलब्धि के साथ भारतीय सेना, वैज्ञानिकों और निजी रक्षा उद्योग के आत्मविश्वास को नई ऊंचाई देते हुए देश की सामरिक स्वायत्तता और 'मेक इन इंडिया' के विजन को भी मजबूती प्रदान करती है।

वर्तमान में रक्षा निर्यात के क्षेत्र में अमेरिका, रूस, फ्रांस, चीन और जर्मनी शीर्ष पांच देश हैं। इन देशों की विश्व रक्षा निर्यात में संयुक्त हिस्सेदारी 75 फीसद से अधिक है। अकेले अमेरिका का योगदान ही 40 प्रतिशत है। भारत अभी भी इस सूची में वैश्विक रक्षा निर्यात में लगभग 0.3 फीसदी का हिस्सा लेकर शीर्ष 25 देशों में 22वें स्थान के आसपास है, हालांकि यह हिस्सा बहुत छोटा है, किंतु हमारी उछाल बताती है कि आने वाले दशक में शीर्ष 10 में शामिल होंगे। इस तेज वृद्धि के पीछे सरकार की नीतिगत भूमिका भी काबिले तारीफ है। 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के अंतर्गत रक्षा उत्पादन के लिए एफडीआई सीमा बढ़ाई गई, रक्षा क्षेत्र के 500 से अधिक आइटमों पर आयात प्रतिबंध लगाए गए और निजी क्षेत्र के लिए अनुसंधान एवं विकास की नई राह खोली गई। इन कदमों से भारत में रक्षा स्टार्टअप्स की संख्या 500 से अधिक हो चुकी है। ये स्टार्टअप्स ड्रोन टेक्नोलॉजी, साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सैटेलाइट सिस्टम जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में नवाचार कर रहे हैं। आगे बढ़ने के लिए भारत को रक्षा अनुसंधान में निवेश और निजी क्षेत्र के सहयोग को और बढ़ाना होगा। रक्षा निर्यात को गति देने के लिए सरकार को निर्यात लाइसेंसिंग प्रक्रिया सरल करनी होगी, वैश्विक रक्षा प्रदर्शनियों में भारतीय कंपनियों की सक्रिय उपस्थिति सुनिश्चित करनी होगी और निर्यात वित्तपोषण की स्थायी व्यवस्था करनी होगी। इससे इस दिशा में और प्रगति होगी।

सच तो यह है कि भारत का यह सफर केवल संख्याओं का नहीं बल्कि स्वाभिमान का है। जब भारत अपनी सेना के लिए बने हथियारों को अन्य देशों की सेनाओं में सेवा करते देखेगा, जब हमारी सेना अपने बनाए हरबे-हथियारों से लड़ेगी तो यह न केवल आत्मनिर्भरता की विजय होगी बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत के तकनीकी और सामरिक सामर्थ्य की गूंज भी। रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की उपलब्धि। 'वोकल फॉर लोकल' का भी सशक्त प्रदर्शन होगा।

विक्रांत पर पीएम: मनोबल बढ़ाने वाला कदम

अमरपाल सिंह वर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बार पणजी में भारत के पहले स्वदेश निर्मित विमान वाहक पोत आइएनएस विक्रांत पर नौसैनिकों के साथ दीपावली का त्योहार मनाया। पीएम बनने के बाद मोदी ने हर साल सैनिकों के साथ दिवाली मनाने की जो परंपरा शुरू की, उन्होंने उसका इस बार भी निर्वाह किया। यह परंपरा अब एक भावनात्मक और राजनीतिक रूप में प्रतीक बन चुकी है। यह अब सिर्फ दीयों की रोशनी में सैनिकों के साथ मिठाई बांटने का दृश्य नहीं है, बल्कि उस गहरी राष्ट्रीय भावना का प्रदर्शन है, जिसमें 'सरकार और सैनिक' के बीच की दूरी मिटाने की कोशिश नजर आती है।

देश की राजनीति में त्योहारों का इस्तेमाल हमेशा जनसंपर्क के अवसर के रूप में होता आया है, पर मोदी ने इसे नया आयाम दिया है। उन्होंने सत्ता के केंद्र दिल्ली की जगमगाहट छोड़कर वह रास्ता चुना, जो सीमाओं की सर्द हवाओं, पहाड़ी चौकियों और रेतीले रेगिस्तान में घरों से दूर बैठे सैनिकों के पास पहुंचता है। वर्ष 2014 में पीएम बनने के बाद मोदी हर साल किसी न किसी सीमा पर जाते हैं। अब तक वह जम्मू-कश्मीर, गुजरात, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में जवानों के साथ दीपावली मना चुके हैं। हर बार इससे यह संदेश गया है कि राष्ट्र की सुरक्षा में लगे जवानों को राष्ट्र का अंग-संग रख रहा है।

मोदी के पणजी दौरे से देश भर में हमारी सेनाओं की भी आत्मनिर्भरता की खूब चर्चा है। जैसा कि मोदी ने कहा है, पिछले दशक में भारत की सेनाओं ने आत्मनिर्भर बनने की दिशा में बड़ी प्रगति की है। हजारों रक्षा उपकरण अब देश में ही निर्मित हो रहे हैं। पिछले 11 वर्षों में भारत का रक्षा उत्पादन तीन गुना बढ़कर 1.5 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। बीते दस वर्षों में रक्षा निर्यात 30 गुना बढ़ा है।

राजनीतिक आलोचक मोदी के हर दिवाली पर जवानों के बीच जाने को 'राजनीतिक इवेंट' का हिस्सा बताते हैं, पर मोदी के साथ आने वाले जवानों की तस्वीरों से पता चलता है मोदी ने किस कदर सेना के मनोबल को बढ़ाने का काम किया है। जब मोदी दीपावली मनाने जाते हैं, तो जवानों के लिए यह केवल प्रधानमंत्री की यात्रा नहीं होती, बल्कि उन्हें यह अहसास होता है कि जैसे देश के नागरिकों की ओर से उन्हें सामूहिक सम्मान दिया जा रहा है। मोदी का सीमा पर दीपावली मनाना न केवल जनता के बीच उन्हें सरोकारी नेता के रूप में प्रस्तुत करता है, बल्कि इससे वह भावनात्मक कड़ी भी मजबूत होती है, जो आम देशवासियों को सेना के प्रति गर्व से भरती है।

हर दीपावली पर जब मोदी सैनिकों के साथ दीपक जलाते हैं, तो मीडिया में छाई इस मौके की तस्वीरें देशभक्ति की प्रतीक बन जाती हैं। ऐसा करके मोदी यह संदेश भी दे जाते हैं कि देश की रक्षा और सीमाओं की सजगता पर सरकार का सर्वोपरि ध्यान है। मोदी द्वारा शुरू की गई यह परंपरा राष्ट्रवाद को एक नए रूप में प्रस्तुत करती है। मोदी के पीएम बनने से पहले सैनिकों का जिक्र परेड या शहीदी दिवस पर होता था, वहीं इसके बाद त्योहारों में भी उनका उल्लेख एक नई शुरुआत है, जो आम लोगों को सीमा प्रहरियों के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ता है।

अब त्योहारों में सैनिकों की उपस्थिति एक सामान्य परंपरा बन गई है। यह बदलाव इस बात का परिचायक है कि राष्ट्रवाद अब केवल नारों या झंडों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह संवेदना और सहभागिता का हिस्सा बन गया है। मोदी की जवानों के साथ हर वर्ष की दिवाली राष्ट्रवाद की नई परंपरा बनकर उभरी है। जब कोई प्रधानमंत्री जवानों के बीच बैठकर कहता है कि आप सब मेरे परिवार का हिस्सा हैं, तो ये शब्द आत्मीयता का भाव जगाते हैं। मोदी का हर दीपावली पर सैनिकों के पास जाना बहुत कुछ कहता है। सीमाओं पर दिया जलाना केवल अंधकार को मिटाने का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह उस भय और अनदेखेपन को दूर करने का भी संकेत है, जो दशकों से सीमा चौकियों को देश के सामाजिक मानस से अलग रख हुए था। अब दूरदराज सीमाओं पर बैठे सैनिक हमारे दीपोत्सव की जगमग में बराबर की भागीदारी करते नजर आते हैं। यह केवल एक व्यक्ति की शैली नहीं है, बल्कि आने वाले समय में यह सत्ता की संवेदनशीलता की स्थायी परंपरा बन कर उभरेगी। मोदी हमेशा ऐसा कुछ रचते हैं, जिसकी सत्ता के शीर्ष स्तर से कभी अनदेखी नहीं की जा सकेगी। मोदी की हर शुरुआत चिरस्थाई बन रही है। कोई हैरानी नहीं होगी, यदि भविष्य के प्रधानमंत्रियों को भी देश इन तमाम परंपराओं को निभाते देखे।

किसी भी प्रधानमंत्री का सैनिकों के बीच जा कर त्योहार मनाना उनका मनोबल बढ़ाने वाला है। सैनिकों का मनोबल केवल हथियारों से नहीं बल्कि समाज और सरकार के व्यवहार से बनता है। प्रधानमंत्री का हर साल जवानों के बीच पहुंचना यह संदेश देता है कि देश उन्हें हमेशा याद रखता है। इससे सैनिक महसूस करते हैं कि सरहद पर उनकी ड्यूटी केवल आदेश का पालन ही नहीं, बल्कि सम्मान का भी प्रतीक है।

सीमा पर दिवाली मनाना केवल एक राजनीतिक क्रियाकलाप नहीं है बल्कि यह सत्ता और सैनिकों, नेता और नागरिकों, शहरों और सीमा चौकियों के बीच एक भावनात्मक पुल है। मोदी की यह परंपरा उस दीपक की तरह है, जो न केवल अंधेरे को मिटाता है, बल्कि यह संदेश भी देती है कि देश का असली उजाला वहीं से आता है जहां वर्दी में हमारे सीमा प्रहरी निगेहबानी की लौ जलाए खड़े हैं। जब सरहद पर दिया जलता है तो राजनीति, राष्ट्र और मानवता एक साथ दिवाली मनाते प्रतीत होते हैं। यह दिया भले ही सरहद पर प्रज्ज्वलित होता है, पर उसकी रोशनी से समूचा देश जगमगाता है।

पीएम मोदी का जवानों संग दिवाली मनाना उस गहरी राष्ट्रीय भावना का प्रदर्शन है, जिसमें 'सरकार और सैनिक' के बीच की दूरी मिटाने की कोशिश नजर आती है।

सोशल फोरम

रेयान ने छोटी उम्र में देखा बड़ा सपना

वह लड़का, जिसने डेढ़ मिलियन अफ्रीकियों की प्यास बुझाई, इसका नाम RYAN है, और वह मई 1991 में कनाडा में पैदा हुआ था। जब वह सिर्फ छह साल का था, उसके शिक्षक ने कक्षा में बताया कि अफ्रीका के बच्चे किस परेशानी में रहते हैं। वह इस बात से बहुत प्रभावित हुआ कि कुछ बच्चे प्यास से मर जाते हैं, जबकि वह खुद बस नल खोलकर साफ पानी पी सकता था। रायन ने अपने शिक्षक से पूछा कि अफ्रीका तक पानी पहुंचाने में कितना खर्च आएगा। शिक्षक ने बताया कि एक संस्था है जिसका नाम 'वॉटर कैन' (WaterCan) है, जो लगभग 70 डॉलर में एक कुआं बनवा देती है।

शोएब गाजी
ब्लॉगर

घर पहुंचकर रायन ने अपनी मां SUSEN से कहा कि उसे अफ्रीकी बच्चों के लिए कुआं खरीदने के लिए 70 डॉलर चाहिए। उसकी मां ने कहा कि उसे यह पैसा खुद मेहनत से कमाना होगा और उसे कुछ छोटे-मोटे काम बताए, ताकि वह हर हफ्ते कुछ डॉलर कमा सके। आखिरकार उसने 70 डॉलर बचा लिए और वॉटर कैन संस्था के पास गया।

वहां उसे बताया गया कि एक असली कुएं की खुदाई की लागत 2,000 डॉलर है। उसकी माँ ने साफ कहा कि वह इतना पैसा नहीं दे सकती, लेकिन रायन ने हार नहीं मानी। वह अपने मोहल्ले में काम करता रहा, अपने भाइयों, पड़ोसियों और दोस्तों को साथ जोड़ा, ताकि आवश्यक फंड जुटाया जा सके।

आखिरकार जनवरी 1999 में उत्तरी युगांडा के एक गांव में कुएं की खुदाई की गई। कुआं बनने के बाद, रायन के स्कूल ने भी मदद शुरू की। साल 2000 में, वे उस गांव पहुंचे, जहां सैकड़ों लोग उनका स्वागत करने आए। उन्होंने रायन का नाम लेकर नारे लगाए।

रायन ने हैरानी से पूछा, "उन्हें मेरा नाम भी पता है?"

गाइड ने मुस्कराते हुए कहा, "100 किलोमीटर के दायरे में हर कोई जानता है।"

आज रायन 34 साल का है। वह अपनी फाउंडेशन चलाता है और अब तक अफ्रीका में 400 से ज़्यादा कुएं बनवा चुका है। वह वहां शिक्षा को बढ़ावा देने और लोगों को कुओं की देखभाल और पानी प्रबंधन सिखाने का भी काम करता है। जब हम बहुत सी बेकार चीजों में उलझे रहते हैं, तो याद रखना चाहिए कि एक सच्चे हीरो को सम्मान देना ही सबसे बड़ी बात है। **-फेसबुक वाल से**

सामयिकी

एक जंग हो गांव के अंधेरे के खिलाफ

गांवों में अंधेरा सिर्फ रात का नहीं है, यह जीवन की हर दिशा में फैला हुआ है। बच्चों की पढ़ाई, महिलाओं का काम, किसानों की मेहनत, यहां तक कि लोगों की सेहत तक पर इस कटौती का असर दिखता है। गांवों में शाम होते ही सन्नाटा उतर आता है, सिर्फ इसलिए नहीं कि दिन ढल रहा है, बल्कि इसलिए भी कि बिजली कब जाएगी, इसका कोई भरोसा नहीं होता। अचानक बुझ जाने वाले बल्ब और बंद होते पंखे लोगों के रोजमर्रा का हिस्सा बन चुके हैं। यहां अंधेरा सिर्फ रात का नहीं है, यह जीवन की हर दिशा में फैला हुआ है। बच्चों की पढ़ाई, महिलाओं का काम, किसानों की मेहनत, यहां तक कि लोगों की सेहत तक इस कटौती का असर दिखता है। ग्रामीणों के लिए बिजली एक अधिकार नहीं, बल्कि एक इंतजार बन गई है। एक ऐसी रोशनी, जिसका आना-जाना उनकी सांसों की लय तय करता है।

अनिता
एक्टिविस्ट

बिजली कटौती का असर सबसे गहराई से महिलाओं और किशोरियों पर पड़ता है। घर के भीतर का सारा बोझ उन्हीं के कंधों पर होता है। जब रात में बिजली चली जाती है, तो वे रसोई में अंधेरे में खाना बनाने, मिट्टी के तेल या मोबाइल की रोशनी में पानी भरने और बच्चों को सुलाने का संघर्ष करती हैं। गर्मियों में जब हवाएं झुलसा देने वाली होती हैं, तब बंद पंखों और बुझी लाइटों के बीच बच्चों का रोना, बुजुर्गों की बेचैनी और घर की घुटन बढ़ जाती है। किशोरियां, जो दिन में स्कूल से लौटकर शाम को पढ़ाई करना चाहती हैं, उन्हें टॉर्च या मोमबत्ती की हल्की लौ में आंखें चौंधियाते हुए किताबों पर झुकना पड़ता है। कई बार यह भी देखा गया है कि अंधेरे के कारण घर से बाहर निकलना उनके लिए असुरक्षित हो जाता है, जिससे उनकी आजादी और सीमित हो जाती है।

इस कटौती का सबसे बड़ा झटका किसानों को लगता है। खेतों में सिंचाई करने वाली मोटर अक्सर बिजली के अभाव में बंद रहती है। कई बार किसान रात के अंधेरे में तब तक खेतों में जागते हैं, जब तक बिजली न आ जाए। फसलें सूख जाती हैं, क्योंकि तय समय पर पानी नहीं मिल पाता। खासकर गर्मियों और सूखे के मौसम में बिजली कटौती खेती की लागत और चिंता दोनों बढ़ा देती है। खेतों में सौर पंप और बैटरी सिस्टम कुछ राहत देते हैं, लेकिन हर किसान इनकी लागत नहीं उठा सकता।स्वास्थ्य केंद्रों में भी यह समस्या कम नहीं है। कई बार टीकाकरण या दवाओं को ठंडा रखने के लिए जरूरी फ्रिज या उपकरण काम नहीं कर पाते। रात में मरीजों के इलाज के दौरान अंधेरा फैल जाने पर नर्स और स्वास्थ्यकर्मी टॉर्च या मोबाइल की रोशनी का सहारा लेते हैं। यह स्थिति उस मानवीय असमानता को उजागर करती है, जिसमें बुनियादी सुविधा के अभाव से ग्रामीणों का स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन-गुणवत्ता प्रभावित होती है।

राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की स्थिति पर नजर डालें तो, 2024 के एक अध्ययन में बताया गया है कि राज्य के लगभग 30 प्रतिशत ग्रामीण घरों को प्रतिदिन 12 घंटे से कम बिजली मिलती है। कई क्षेत्रों में शिकायत के बाद भी बिजली बहाल होने में छह घंटे से ज्यादा समय लगता है। बिजली की गुणवत्ता भी चिंता का विषय है। इसमें वोल्टेज में बार-बार उतार-चढ़ाव के कारण उपकरण खराब हो जाते हैं, हालांकि राज्य सरकार के प्रयासों से राज्य के लगभग सभी गांवों में बिजली का कनेक्शन पहुंच चुका है, लेकिन निरंतर आपूर्ति अभी भी चुनौती है। यह अंतर बिजली पहुंच और बिजली उपलब्धता के बीच की खाई को उजागर करता है। बिजली कटौती का असर लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। किशोरियां बार-बार कहती हैं कि अंधेरे में पढ़ाई करना आंखों और मन दोनों को थका देता है।

प्रसंगवश

हंसी खत्म हो सकती है असरानी नहीं

हरीश उप्रेती करन
रंगकर्मी

सिनेमा के विशाल परदे पर कुछ चेहरे ऐसे होते हैं, जो सिर्फ अभिनय नहीं करते, बल्कि दर्शकों के मन में एक भाव बनकर बस जाते हैं। वे पीढ़ियां पार करते हुए भी अपनी सहजता, सरलता और संवेदना से अमिट छाप छोड़ते हैं। ऐसे ही कलाकार थे- गोवर्धन असरानी, जिन्हें पूरा देश बस 'असरानी' के नाम से जानता और प्यार करता है। वे हंसी के कलाकार थे, मगर उनकी हंसी के पीछे एक गहरी मानवीयता, एक करुण संवेदना और जीवन को देखने का गंभीर दृष्टिकोण छिपा था। उन्होंने साबित किया कि हास्य केवल हंसाने का साधन नहीं होता, बल्कि समाज के आईने में सच्चाई दिखाने का सबसे प्रभावी माध्यम भी हो सकता है।

मुंबई में जूहू बीच पर समुद्र किनारे सूरज की किरणों के बीच, कई कलाकार और फिल्म जगत के लोग अपने दिन की शुरुआत योग और ध्यान से करते थे। मैं भी वहां जाया करता था। अक्सर, वहीं उसी रेत पर असरानी भी आते थे। वे सुबह-सुबह ध्यान मुद्रा में बैठ जाते, चेहरे पर अद्भुत शांति लिए हुए। जूहू के उसी समुद्र तट पर, एक भिखारी भी था, जो भीषण गर्मी में भी कंबल ओढ़कर एक नारियल के पेड़ के नीचे सोया रहता था। असरानी की एक आदत ने हमें अंदर तक छू लिया। वे जब भी शनिवार या रविवार को ध्यान-योग के बाद लौटते, तो उस भिखारी को जगाकर 100 रुपये का नोट थमा देते। न कोई दिखावा, न कैमरा, न कोई हल्ला... बस चुपचाप दया का एक कर्म।

असरानी ने सिनेमा में वह किया, जो बहुत कम अभिनेता कर पाए। 'शोले' में उनका मशहूर डायलॉग, "हम अंग्रेजों के जमाने के जेलर हैं...।" आज भी दर्शकों की जुबान पर है, लेकिन उनके किरदार सिर्फ हंसाते नहीं थे, वे समाज के भीतर छिपी विडंबनाओं को उजागर करते थे। 'चुपके चुपके', 'अमर प्रेम', 'बावर्ची', 'कटी पतंग', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'चला मुरारी हीरो बनने' जैसी फिल्मों में उन्होंने हर बार अपनी विविधता और संवेदनशीलता का प्रमाण दिया। उनकी कॉमेडी में कभी फूहड़पन नहीं था। वह जीवन का सीधा और सच्चा प्रतिबिंब थी।

समय बीतता जाएगा, नई फिल्में बनेंगी, नए हास्य कलाकार आएंगे, पर दूसरा असरानी न था, न होगा। वे सिर्फ हंसी के उस्ताद नहीं, बल्कि जीवन के दार्शनिक थे। वे यह सिखा गए कि हंसी, करुणा और विनम्रता- ये तीनों ही इंसानियत की सबसे बड़ी ताकत हैं। आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं, तो सिनेमा ने सिर्फ एक कलाकार नहीं, बल्कि एक युग खो दिया है। उनकी याद में समर्पित यह पंक्ति शायद उनकी आत्मा को सबसे अधिक सही श्रद्धांजलि होगी, 'हँसी खत्म हो सकती है, असरानी नहीं, क्योंकि उनका असर हर मुस्कान में जीवित है।'

आमने-सामने

लखनऊ को स्मार्ट सिटी कहा जाता है, लेकिन सड़कों पर जाम और कचरा अब भी आम है। मैं इस (अयोध्या दीपोत्सव) पर कोई राय नहीं देना चाहता, लेकिन हमें दीयों और मोमबत्तियों पर इतना खर्च क्यों करना पड़ता है। दुनिया के कई देशों में क्रिसमस पर शहर महीनों तक जगमगाते रहते हैं।
–अखिलेश यादव
सपा प्रमुख

अयोध्या में दीपोत्सव को लेकर सपा प्रमुख का बयान उनकी विकृत मानसिकता और देश के बहुसंख्यकों का अपमान करने के तरीके का प्रतीक हैं। अखिलेश यादव कहते हैं कि उजाले के बाद अंधेरा अच्छा नहीं होता, जबकि असली अंधेरा उनकी सोच में है।
–भूपेंद्र चौधरी
अध्यक्ष, भाजपा उप्र

गुमशुदा की तलाश में 'आधार' बनेगा आधार

आलोक तिवारी
स्वतंत्र पत्रकार

देश में हर साल लाखों लोग लापता हो जाते हैं और उनके परिवारों को अपनों की तलाश में भटकना पड़ता है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों के अनुसार, भारत में 2023 तक चार लाख 84 हजार 584 लापता व्यक्तियों के मामले विभिन्न राज्यों में दर्ज हो चुके हैं। इनमें से बच्चों के अपहरण एवं लापता मामलों की संख्या 79 हजार 884 है। निश्चित रूप से यह संख्या और बढ़ी होगी! वस्तुतः यह वे मामले हैं, जो दर्ज किए गए हैं। ऐसे कितने मामलों में तो पारिवारिक प्रतिष्ठा एवं अन्य कारणों से रिपोर्ट ही दर्ज नहीं कराई जाती है। कर्नाटक हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति सूरज गोविंदराज का महत्वपूर्ण फैसला उम्मीद की किरण बनकर उभरा है।

इस फैसले में कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि लापता व्यक्तियों की जांच में आधार कार्ड के उपयोग की लोकेशन और समय की जानकारी UIDAI (यूनिक आइडेंटिफिकेशन अथॉरिटी ऑफ इंडिया) पुलिस एवं जांच एजेंसियों के साथ साझा कर सकता है, बशर्ते हाईकोर्ट से अनुमति ली जाए। यह फैसला न केवल प्राइवेसी के अधिकार का सम्मान करता है, बल्कि जीवन रक्षा के मौलिक अधिकार को प्राथमिकता देता है।

यह मामला हुबली-धारवाड़ के निवासी श्री कृष्णमूर्ति से जुड़ा है, जिनका बेटा विजय कृष्णमूर्ति 2019 से लापता है। परिवार और पुलिस की तमाम कोशिशों के बावजूद कोई सुराग नहीं मिला, लेकिन 2023 में पिता को पता चला कि उनके बेटे के आधार कार्ड का उपयोग और प्रमाणीकरण (ऑथेंटिकेशन) कहीं हुआ है। इससे उम्मीद जगी कि शायद बेटा जीवित है या कोई उसका दुरुपयोग कर रहा है। पिता ने यह जानकारी पुलिस को दी और UIDAI से आधार उपयोग का विवरण मांगने का अनुरोध किया।

पुलिस ने UIDAI से संपर्क किया, लेकिन UIDAI ने सूचना देने से इनकार कर दिया। उनका तर्क था कि यह जानकारी व्यक्ति की निजता (राइट टू प्राइवेसी) के अंतर्गत आती है और सुप्रीम कोर्ट के 2017 के पुट्टस्वामी फैसले में निजता को मौलिक अधिकार माना गया है। UIDAI ने आधार अधिनियम 2016 की धारा 29 का हवाला दिया, जो आधार डेटा साझा करने पर प्रतिबंध लगाती है। निराश पिता ने कर्नाटक हाईकोर्ट में याचिका दायर की, जहां न्यायमूर्ति सूरज गोविंदराज ने मामले की सुनवाई की।

कोर्ट ने 23 सितंबर 2025 को दिए अपने आदेश में आधार अधिनियम की गहराई से व्याख्या की। कोर्ट ने माना कि आधार का उद्देश्य नागरिकों की पहचान सुनिश्चित करना और पारदर्शी सेवाएं प्रदान करना है, लेकिन इसका दुरुपयोग रोकने के लिए बायोमेट्रिक डेटा (जैसे फिंगरप्रिंट, आईरिस स्कैन) और व्यक्तिगत जानकारी साझा नहीं की जा सकती, हालांकि कोर्ट ने स्पष्ट किया कि धारा 29 का प्रतिबंध 'निरपेक्ष' (एब्सोल्यूट) नहीं है। आधार अधिनियम की धारा 33 के तहत, यदि जांच एजेंसी को आधार उपयोग की जानकारी जीवन रक्षा या लापता व्यक्ति की तलाश के लिए जरूरी लगे, तो हाईकोर्ट अनुमति देकर UIDAI को ऐसी सूचना साझा करने का आदेश दे सकता है।

कोर्ट ने UIDAI को निर्देश दिया कि वे पुलिस को केवल आधार कार्ड के उपयोग की लोकेशन और समय की जानकारी दें, न कि बायोमेट्रिक या अन्य संवेदनशील डेटा। इससे पुलिस आधार का उपयोग किए गए स्थान पर जाकर अपनी जांच आगे बढ़ा सकेगी, न्यायमूर्ति गोविंदराज ने कहा, "जब किसी व्यक्ति की जान दांव पर हो, तो प्राइवेसी का अधिकार जीवन के अधिकार के सामने झुक सकता है।" यह फैसला पुट्टस्वामी जजमेंट की भावना को बनाए रखते हुए एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाता है। जहां प्राइवेसी मौलिक है, लेकिन अपवादों में सार्वजनिक हित को प्राथमिकता दी जा सकती है। यह फैसला एक मील का पत्थर है, क्योंकि यह लापता व्यक्तियों की तलाश में डिजिटल टूल्स का उपयोग खोलता है। भारत में हर साल लाखों लोग लापता होते हैं। एनसीआरबी के अनुसार, 2023 में ही पांच लाख के लगभग मामले थे और 2025 में यह संख्या बढ़ रही है। ऐसे में आधार डेटा से पुलिस को मदद मिल सकती है।

यहां एक महत्वपूर्ण सवाल उठता है, क्या हर आम नागरिक, खासकर गरीब परिवार, हाईकोर्ट में याचिका दायर कर सकता है? कानूनी प्रक्रिया महंगी और जटिल है, जो कई परिवारों की पहुंच से बाहर है। मेरे विचार से, सरकार को इस दिशा में सुधार करने चाहिए। UIDAI और सरकार एक सामान्य दिशा-निर्देश (जनरल ऑर्डर) जारी कर सकते हैं, जिससे लापता या फरार व्यक्तियों के मामलों में पुलिस और जांच एजेंसियों को सीधे आधार उपयोग की जानकारी मिल सके। हर बार हाईकोर्ट जाने की जरूरत न हो।

यह घटना हमें सिखाती है कि आधार कार्ड की सुरक्षा और अपडेट कितनी महत्वपूर्ण है। परिवारों को चाहिए कि अपने बच्चों के आधार में अपना मोबाइल नंबर दर्ज करवाना सुनिश्चित करें, तथा उस मोबाइल नंबर को हमेशा सक्रिय रखें साथ ही UIDAI आन लाइन पोर्टल (uidai.gov.in) से समय-समय पर उस आधार कार्ड के उपयोग की जानकारी चेक करते रहें और यदि कोई दुरुपयोग लगे, तो तुरंत शिकायत दर्ज करें।

कर्नाटक हाईकोर्ट ने गुमशुदा लोगों के मामले में ऐतिहासिक फैसला दिया है। उसने लापता व्यक्तियों की तलाश में UIDAI को आधार उपयोग की जानकारी देने के निर्देश दिए हैं।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

ताने-बाने में बसी कला और कौशल

सांस्कृतिक रूप से समृद्ध जनपद अमरोहा उत्तर प्रदेश का एक ऐसा नगर है, जो भौगोलिक नक्शे पर भले ही बहुत बड़ा नहीं है, परंतु इसकी स्मृतियों, साहित्यिक व सांस्कृतिक धरोहरों की गहराइयां इतनी विराट हैं कि वहां से निकले लोग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के साहित्य, सिनेमा और भावनात्मक चेतना में अपना चिरस्थायी स्थान रखते हैं। यहां की मिट्टी में शब्द, राग और रूहानियत का गहरा रंग घुला है। अमरोहा में जन्मे लेखक, फिल्म निर्देशक कमाल अमरोही और उनकी शरीके हयात 'ट्रेजेडी क्वीन' अभिनेत्री मीना कुमारी से पूरा संसार परिचित है। उर्दू अदब में सबसे चर्चित और पसंद किए जाने वाली एक शख्सियत जॉन एलिया का जन्मस्थान भी अमरोहा है। उनके कलाम से नई पीढ़ी आज भी उतना ही प्रभावित है, जितना उनके दौर में लोग उन्हें पसंद करते थे।

डॉ. पारुल तोमर
नई दिल्ली

अमरोहा की गलियां उर्दू तहजीब का खजाना हैं, जहां अब भी पुरानी हवेलियों, इत्र, कागज और किताबों की दुकानों से अदब की खुशबू आती है। इसी अमरोहा जनपद के नौगावां सादात क्षेत्र के एक छोटे से गांव मखदूमपुर के हथकरघों में बुना हर धागा जैसे अपनी एक अलग यात्रा पर निकल पड़ा है। इसकी संकरी गलियों में सुबह की किरणें जैसे ही उतरती हैं, हथकरघों की खट-खट वातावरण में गूंजने लगती है। यह आवाज सिर्फ कपड़ा बुनने की नहीं, बल्कि सदियों से चली आ रही एक सांस्कृतिक धड़कन की आवाज है। यहां के बुनकर, जिनकी उंगलियां धागों को मानो सांस लेने की लय देती हैं। ये कपास, रेशम और जरी के तानों-बानों में पूरे अमरोहा की पहचान बुनते हैं। बुनकरों के हाथों में बारीकी और डिजाइन का अद्भुत संगम है। ये रंग-बिरंगे गलीचे, चादर आदि को इस तरह कुशलता से बुनते हैं, जैसे कोई चित्रकार अपने कैनवास पर रंग भर रहा हो। फूल-पत्तियों के पैटर्न, ज्यामितीय आकृतियां और पारंपरिक नक्शे इनको अद्वितीय पहचान देते हैं, जो कभी गांव की चौपाल और घर आंगन में बिछी चारपाई का हिस्सा बनते हैं, तो कभी हजारों मील दूर विदेश के किसी आलीशान ड्राइंग रूम के फर्श की शान बढ़ाते हैं। आज देश-विदेश में अमरोहवी गलीचे, चादरें, दोहरें, कुशन आदि घर-घर की पसंद बन चुके हैं।

7 अगस्त 1905 को जब स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत हुई, तब देशवासियों ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर हथकरघा उद्योग को पुनः जीवन देना शुरू किया। यह एक सांस्कृतिक और आर्थिक विद्रोह था, जिसमें करघे पर बनी खादी सिर्फ कपड़ा नहीं, बल्कि आत्मबल का प्रतीक बन गई थी। हथकरघा उद्योग महिलाओं के लिए भी आत्मनिर्भरता का माध्यम बनकर उभरा है। गांवों की असंख्य महिलाएं, जो कभी घर की देहरी तक सीमित थीं, आज हथकरघे के माध्यम से आर्थिक स्वतंत्रता की ओर बढ़ रही हैं। वे घर पर रहकर ही अपनी कला से रोजगार कमा रही हैं, बच्चों को पढ़ा रही हैं, परिवार चला रही हैं।

संस्कृति व परंपरा

हथकरघा समय, मेहनत, कौशल, संस्कृति और परंपरा का यह जीवंत दस्तावेज है, जिसमें गांव-गांव की सांसें, रंग और लय बसी हुई है। लकड़ी के चौखटे पर बैठा बुनकर जब पैडल दबाता है और शटल को बारी-बारी से इधर-उधर घुमाता है, तो उसके हाथों की गति में केवल कपड़ा नहीं, बल्कि पीढ़ियों का अनुभव और स्मृति गुंथने लगती है। एक-एक धागा जैसे किसी पुरानी कहानी का अक्षर होता है और कपड़ा उसका पूरा कथानक। आज भी गांव के मिट्टी के आंगन में रखा हथकरघा अक्सर घर का केंद्र होता है। बच्चे उसके आसपास खेलते हैं, महिलाएं धागे की पूनियां बनातीं। करघे की खट-खट आवाज की मधुर धुन अपनी ओर खींचती है। यह धुन, केवल कपड़ा नहीं, बल्कि घर का चूल्हा-चौका, बच्चों की पढ़ाई और भावी जीवन का सपना भी बुन रही होती है। यह केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान का प्रतीक भी है। बुनकर जानता है कि उसके धागों से बना कपड़ा न केवल तन को ढकेगा, बल्कि परंपरा, मेहनत और स्थानीय पहचान को भी दुनिया तक पहुंचाएगा। हर डिजाइन, हर पैटर्न किसी खास क्षेत्र का परिचय पत्र है। चाहे वह कश्मीर की पश्मीना हो, बनारस की जरी या आंध्र की इक्कत। हथकरघे के धागों की तरह जीवन भी तभी सुंदर बनता है, जब उसे धैर्य और प्रेम से बुना जाता है। वरना उलझे धागों की तरह उलझनें ही रह जाती हैं। यह केवल कपड़े का ताना-बाना नहीं, बल्कि मानवता के बुनियादी मूल्यों का भी करघा है, जो हमें जोड़ता है, संवारता है और हमें हमारी जड़ों से बांधता है।

आज मशीनों की तेज रफ्तार और बाजार की आर्टिफिशियल चमक-धमक के आगे यह धीमा, मेहनत-भरा शिल्प दम तोड़ रहा है। जिस कपड़े में कभी किसान का श्रमजल, बुनकर के हाथों की महक और रंगरेज की आत्मा बसती थी, उसकी जगह अब सस्ते मशीन-निर्मित सिंथेटिक कपड़ों ने बाजार पर कब्जा कर लिया है। कच्चा माल महंगा और बिक्री के रास्ते सीमित हैं, लेकिन परिवर्तन की आहट सुनाई दे रही है। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, सरकारी योजनाओं और डिजाइन में आधुनिकता के प्रयोग से ये बुनकर वैश्विक बाजार में अपनी जगह बना रहे हैं। गलीचे, बैडशीट आदि के निर्यात ने मखदूमपुर को मानचित्र पर चमका दिया है, जो गांव कभी सिर्फ स्थानीय बाजार तक सीमित था, आज उसकी पहचान अंतर्राष्ट्रीय मंच पर है।

भले ही अमरोहा का हथकरघा विश्व में अपना रंग बिखेर रहा है, लेकिन यदि हमने इस उद्योग को बचाने की कोशिश नहीं की तो केवल करघे का पहिया ही नहीं रुकेगा, बल्कि रुक जाएगी वह सांस्कृतिक धारा, जो हमारी मिट्टी की महक को दुनिया तक पहुंचाती रही है। हथकरघे का संरक्षण असल में केवल कारीगरों की आजीविका का प्रश्न नहीं, बल्कि अपनी विरासत और अपनी जड़ों को बचाने का संकल्प है।

आर्ट गैलरी

अमृता शेरगिल की पेंटिंग 'सुमैर'

इस पेंटिंग को अमृता शेरगिल ने 1936 में बनाया था। इसका शीर्षक है, सुमैर। 'सुमैर' उनकी कलात्मक परिपक्वता का एक शानदार उदाहरण है। यह पेंटिंग उनकी चचेरी बहन सुमैर का एक संवेदनशील और मनमोहक पोर्ट्रेट है। इस कृति में अमृता ने यूरोपीय पोस्ट-इंप्रेशनिस्ट तकनीकों को भारतीय सौंदर्य शास्त्र के साथ मिलाया है।

सुमैर को एक हरे रंग की साड़ी में दर्शाया गया है, जिसकी जीवंतता पृष्ठभूमि के लाल और भूरे रंग के साथ एक प्रभावशाली विरोधाभास पैदा करती है। उनके चेहरे पर चिंतनशील और उदासी के भाव हैं, जो उनकी आंतरिक भावनाओं को बड़ी संजीदगी से व्यक्त करते हैं।

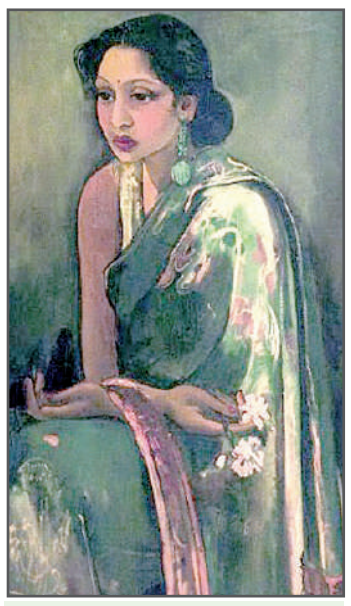

अमृता के बारे में

अमृता शेरगिल भारतीय उमराव सिंह और हंगेरियन मां एनटॉयनेट शेरगिल की बेटी थीं। वो 30 जनवरी 1913 को हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में पैदा हुईं। उनके पिता संस्कृत और फारसी के विद्वान और मां ओपेरा गायिका थीं। कला के प्रति अमृता के रुझान को देखते हुए उनके माता-पिता उन्हें पेरिस ले गए। वहां उन्होंने पेंटिंग की औपचारिक शिक्षा ली। 1934 में पेरिस से भारत लौटने के बाद, अमृता शेरगिल ने अपनी कला को भारतीय वास्तविकता के करीब लाने का प्रयास किया। 'सुमैर' उसी दौर का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

-फीचर डेस्क

'लोके उपभोग्यं नाट्यं भवतु।' अर्थात नाटक संसार के लिए आनंद का साधन बने। संसार के किसी भी हिस्से में, किसी भी काल में जब नाट्य विधा का आरंभ हुआ होगा, तो उसका मूल उद्देश्य क्या रहा होगा? क्या नाटक का मूल उद्देश्य केवल संदेश देना रहा होगा या किसी विचारधारा को प्रस्तुत करना? रंगमंच का मूल तो अपने दर्शक की आत्मा से जुड़कर रसों की निष्पत्ति करना है, उसके भीतर के वे सारे भाव, जो समाज द्वारा प्रदूषित कर दिए गए हैं, उनकी शुद्धि करना है।

लव तोमर
रंगकर्मी

रंगमंच का शाश्वत उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य से जोड़ना

हाल के वर्षों में नाटक लोगों की राजनीतिक पसंद-नापसंद और उनके निजी एजेंडों पर अधिक निर्भर हो गया है। यह पूरे देश के नाटकों में अनुभव किया जा सकता है। चिंता की बात यह है कि दर्शकों की घटती संख्या पर न तो कोई ध्यान दे रहा है, न ही उसके समाधान पर विचार कर रहा है। नाटक का मूल उद्देश्य केवल राजनीतिक टिप्पणी या सामाजिक संदेश देना मात्र नहीं है। यदि यह साथ में हो पाए तो बहुत अच्छा, लेकिन मूल तो अपने दर्शक के भीतर छिपे भावों को उत्पन्न करना और उसकी आत्मा को स्पर्श करना है।

भारतमुनि का कहना है, "नाट्यं भिन्नरूपं लोकवृत्तानुकीर्तनम्।"अर्थात नाटक मनुष्य के जीवन का अनुकरण है। वहीं अरस्तू का कहना है, नाटक किसी क्रिया का अनुकरण है, जिसका उद्देश्य करुणा और भय के माध्यम से आत्मशुद्धि करना है। दो महान व्यक्ति, जो समय और संस्कृति में पूरी तरह अलग हैं, दोनों एक ही बात कह रहे हैं, "पहले भाव को छुओ, विचार अपने आप जन्म लेंगे।" आजकल नाटकों में हम देखते हैं कि अभिनेता अपने नाटक के लेखक या निर्देशक के निजी विचारों, उनकी राजनीतिक पसंद-नापसंद को अलग-अलग तरीकों से अभिव्यक्त कर रहे होते हैं। इस प्रकार भाव पर विचार हावी हो जाता है।

कैसे खो रहा है आधुनिक रंगमंच रस

प्रासंगिकता की दौड़ में रंगमंच ने अनुभूति को पीछे छोड़ दिया है। आज अनेक नाटक जीवन को दिखाते नहीं, बल्कि समझाते हैं। वे अनुभव की जगह विचार प्रस्तुत करते हैं।

चार कारण जिनसे रस मिटता है –

- थीसिस-ड्रामा- जहां नाटक पहले से ही निष्कर्ष लेकर चलता है।
- उपदेशात्मक लहजा- जहां पात्र मनुष्य नहीं, प्रवक्ता बन जाते हैं।
- विचार-प्रधान लेखन- जहां क्रिया के स्थान पर कथन होता है।
- एक-रस शैली- जहां न लय है, न मौन, न विरोधाभास- केवल सूचना।

दर्शक नाटक से जानकर लौटते हैं, जीकर नहीं और बिना अनुभूति का नाटक, नाटक नहीं- प्रचार है। हमें अपनी कहानियों को कहने की कला के अतीत की ओर लौटना होगा। देखना होगा कि किस तरह कालिदास और शेक्सपियर जैसे महान रचनाकारों ने श्रृंगार, करुण, भय, वीर आदि रसों को साधा या ग्रीक त्रासदियों में कैसे नैतिकता नाटक के अंत में स्वत: प्रकट हो जाती है। या फिर आधुनिक नाटककारों- मोहन राकेश, गिरीश कर्नाड और विजय तेंदुलकर ने अपने पात्रों के जटिल जीवन के माध्यम से भाव उत्पन्न किए, जिन्हें दर्शक अनुभव करता है। यदि कोई संदेश होता है, तो वह स्वत: प्रकट हो जाता है। संदेश को रस के माध्यम से आना चाहिए, न कि रस के स्थान पर। थिएटर का उद्देश्य सही या गलत का निष्कर्ष निकालना नहीं, बल्कि भाव उत्पन्न करना है। भाव के उत्पन्न होने पर दर्शक स्वयं अपने नैतिक निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होगा। रंगमंच का शाश्वत उद्देश्य है, मनुष्य को मनुष्य से जोड़ना। साझा अनुभव, साझा सांस और साझा हृदय।

बाजार	सेंसेक्स ↑	निफ्टी ↑
बंद हुआ	84,426 .34	25,868 .60
बढ़त	62 .97	25 .45
प्रतिशत में	0 .07	0 .10

सोना 1,28,000 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,50,000 प्रति किलो

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 22 अक्टूबर 2025

www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

रुपये में उतार-चढ़ाव रोकने को आरबीआई ने 7.7 अरब डॉलर बेचे

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने विनिमय दर में उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने और अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले रुपये के मूल्य में गिरावट को रोकने के लिए अगस्त में 7.7 अरब डॉलर बेचे। आरबीआई के नवीनतम बुलेटिन में प्रकाशित अमेरिकी डॉलर की बिक्री/खरीद के आंकड़ों के अनुसार, अगस्त में केंद्रीय बैंक की अमेरिकी डॉलर की शुद्ध बिक्री 7.69 अरब अमेरिकी डॉलर रही जो पिछले महीने की तुलना में लगभग तीन गुना है। केंद्रीय बैंक ने जुलाई और अगस्त में अमेरिकी डॉलर नहीं खरीदे। आरबीआई का घोषित रुख यह है कि वह रुपये-डॉलर विनिमय दर के किसी स्तर या दायरे को लक्षित नहीं करता बल्कि विदेशी मुद्रा बाजार में केवल तभी हस्तक्षेप करता है जब अत्यधिक अस्थिरता हो। अगस्त में डॉलर के मुकाबले रुपये में बड़ी गिरावट आई थी।

कोयला आयात घटकर 2.05 करोड़ टन

नई दिल्ली। कोयला आयात अगस्त में सालाना आधार पर मामूली 0.6% घटकर 2.058 करोड़ टन रह गया। कोयला आयात अगस्त 2024 में 2.07 करोड़ टन था। ई-कॉमर्स समाधान प्रदाता एमजंक्शन सर्विसेज के अनुसार, 2025-26 की अप्रैल-अगस्त अवधि में कोयला आयात सालाना आधार पर 12.118 करोड़ टन से घटकर 11.807 करोड़ टन रह गया। अगस्त के कुल आयात में गैर-कोकिंग कोयले की मात्रा 1.155 करोड़ टन और कोकिंग कोयले की 48.2 लाख टन रही। वित्त वर्ष 2025-26 में अप्रैल-अगस्त के दौरान गैर-कोकिंग कोयले का आयात 7.217 करोड़ टन और कोकिंग कोयले का आयात 2.704 करोड़ टन रहा।

मुंबई शहरी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरने को तैयार

मुंबई। मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण (एमएमआरडीए) के अधिकारियों ने कहा कि मुंबई महानगरीय क्षेत्र 2047 तक दुनिया की अग्रणी शहरी अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभरने को तैयार है। उस समय तक एमएमआर का जीडीपी 1,200-1,500 अरब डॉलर और जनसंख्या 3.6 से 3.8 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है।

दिवाली पर 6.05 लाख करोड़ की हुई बिक्री

जीएसटी दरों में कटौती और मजबूत उपभोक्ता विश्वास से इस साल हुई रिकॉर्ड बिक्री

- कनफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने जारी किया आंकड़ा

नई दिल्ली, एजेंसी

इस साल दिवाली के मौके पर रिकॉर्ड 6.05 लाख करोड़ रुपये की बिक्री हुई है, जिसमें से 5.40 लाख करोड़ रुपये उत्पादों की बिक्री जबकि 65,000 करोड़ रुपये सेवाओं से आए। व्यापारियों के संगठन कनफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने कहा कि हाल ही में माल एवं सेवा कर (जीएसटी) दरों में की गई कटौती और मजबूत उपभोक्ता विश्वास के कारण इस साल दिवाली पर रिकॉर्ड बिक्री दर्ज की गई है।

कैट ने यह आंकड़ा देशभर के 60 प्रमुख वितरण केंद्रों में किए गए सर्वेक्षण के आधार पर जारी किया। इनमें राज्यों की राजधानियां और दूसरी एवं तीसरी श्रेणी के शहर शामिल हैं। संगठन के मुताबिक, पिछले साल दिवाली पर बिक्री 4.25 लाख करोड़ रही थी। मुख्यधारा की खुदरा बिक्री, खासकर गैर-कॉरपोरेट और पारंपरिक बाजारों का कुल व्यापार में 85% योगदान रहा। यह ऑनलाइन खरीदारी के दौर में छोटे व्यापारियों और भौतिक बाजारों की मजबूत वापसी को दर्शाता है।

क्षेत्रवार बिक्री के मामले में राशन सामग्री और रोजमर्रा के सामान 12, सोना एवं आभूषण 10, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं बिजली उपकरण 8, टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद 7, रेडिमेड कपड़े 7, उपहार 7 , घरेलू सजावट 5% रहे। इसके अलावा फर्निशिंग एवं फर्नीचर 5, मिठाई और नमकीन 5, कपड़ा एवं वस्त्र चार प्रतिशत, पूजा सामग्री 3 और फल एवं सूखे मेवे 3% भी शामिल हैं।

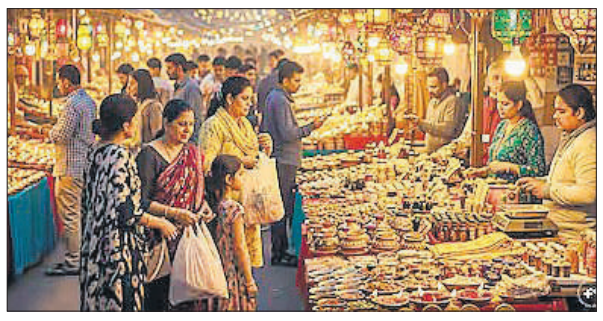

बिक्री का आंकड़ा

श्रेणी	आंकड़ा	विवरण
इस साल की बिक्री	6.05 लाख करोड़	दिवाली पर बिक्री
उत्पादों की बिक्री	5.40 लाख करोड़	उत्पादों से योगदान
सेवाओं से बिक्री	65,000 करोड़ रुपये	सेवाओं से योगदान
गत वर्ष की बिक्री	4.25 लाख करोड़	2024 दिवाली पर बिक्री

व्यापारियों ने जीएसटी दरों में की गई कटौती को उच्च बिक्री का बताया मुख्य कारण

कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष बी सी भरतिया ने कहा कि सेवाओं के क्षेत्र ने पैकेजिंग, आतिथ्य, कैब सेवाएं, यात्रा, कार्यक्रम आयोजन, टेंट एवं सजावट, मानव संसाधन और आपूर्ति से 65,000 करोड़ रुपये का योगदान दिया। सर्वे में शामिल 72 प्रतिशत व्यापारियों ने दैनिक उपयोग की वस्तुओं, जूते, परिधान, कन्फेक्शनरी, घरेलू साजसज्जा और टिकाऊ उपभोक्ता उत्पादों पर माल एवं सेवा कर (जीएसटी) की दरों में कटौती को उच्च बिक्री का मुख्य कारण बताया। रिपोर्ट कहती है कि स्थिर मूल्य ने उपभोक्ताओं की संतुष्टि बढ़ाई और उत्सव के दौरान खर्च को प्रोत्साहित किया। दिवाली पर कारोबारी गतिविधियां बढ़ने से 50 लाख अस्थायी रोजगार सृजित हुए, जिसमें ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों ने कुल व्यापार का 28 प्रतिशत हिस्सा लिया।

ई-कॉमर्स की बिक्री 24% बढ़ी, क्विक कॉमर्स का जलवा

नई दिल्ली। दिवाली त्योहारी सत्र भारत के ई-कॉमर्स क्षेत्र के लिए शानदार रहा, जिसमें मात्रा के लिहाज से बिक्री सालाना 24% बढ़ी और सकल व्यापारिक मूल्य (जीएमवी) में 23% की वृद्धि हुई। ई-कॉमर्स क्षेत्र के मंच यूनिकॉमर्स ने यह जानकारी दी। इस दौरान क्विक कॉमर्स एप का वृद्धि में सबसे अधिक योगदान रहा, जिन्होंने ऑर्डर की मात्रा में सालाना आधार पर 120% की वृद्धि दर्ज की। इसके बाद ब्रांड वेबसाइट ने 33% की वृद्धि दर्ज की। मार्केटप्लेस प्रमुख चैनल बने रहे, जिनकी कुल खरीदारी में 38% हिस्सेदारी रही और उनका ऑर्डर मात्रा के लिहाज से 8% बढ़ा। यूनिकॉमर्स ने कहा कि ये जानकारियां 2024 और 2025 में 25 दिन तक चलने वाले त्योहारी सत्र के दौरान उसके प्रमुख मंच यूनीवेयर के माध्यम से हुए 15 करोड़ से अधिक लेनदेन पर आधारित हैं।

मुहूर्त सत्र में सेंसेक्स, निफ्टी मामूली बढ़त के साथ बंद

मुंबई, एजेंसी

- नए संवत 2082 की शुरुआत पर विशेष मुहूर्त सत्र का बाजार ने किया आयोजन

वैश्विक बाजारों में सकारात्मक रुख के बीच मंगलवार को एक घंटे के विशेष मुहूर्त कारोबार के दौरान सेंसेक्स और निफ्टी मामूली बढ़त के साथ बंद हुए। इससे नए संवत 2082 की शुरुआत सकारात्मक रही। बीएसई सेंसेक्स 62.97 अंक चढ़कर 84,426.34 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान यह 84,665.44 अंक के उच्च और 84,286.40 अंक के निचले स्तर तक आया। एनएसई निफ्टी 25.45 अंक की बढ़त के साथ 25,868.60 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी के 25 शेयर गिरावट के साथ जबकि 24 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए। एक शेयर अपरिवर्तित रहा।

बीएसई-एनएसई ने नए संवत 2082 की शुरुआत और निवेशकों के लिए नई लेखा पुस्तकों के उद्घाटन पर मंगलवार को पौने दो से पौने तीन तक विशेष मुहूर्त कारोबार सत्र आयोजित किया। सेंसेक्स में शामिल 30 कंपनियों में से बजाज फिनसर्व के शेयर में सबसे अधिक 1.42% की वृद्धि हुई। इसके बाद एक्सिस बैंक में 0.80, इन्फोसिस में 0.72, महिंद्रा एंड महिंद्रा में 0.60, टाटा मोटर्स में 0.55, बजाज फाइनेंस में 0.53 और टाटा स्टील में 0.52% की तेजी दर्ज की गई। वहीं, कोटक महिंद्रा बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, एचसीएल टेक्नोलॉजीज, भारती एयरटेल, मारुति सुजुकी इंडिया, ट्रेंट लिमिटेड और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज के शेयरों में गिरावट दर्ज की गई। व्यापक बाजारों में भी बढ़त दर्ज की गई।

बीएसई मिडकैप 106.95 अंक की बढ़त के साथ 46,787.20 अंक और स्मॉलकैप 486.81 अंक की चढ़कर 53,842.85 अंक पर बंद हुआ। क्षेत्रीय सूचकांकों में, औद्योगिक क्षेत्र 0.53, दूरसंचार 0.51, जिंस 0.47, पूंजीगत वस्तुओं 0.40, सेवाओं में 0.38 और धातु 0.37% बढ़ा।

बुनियादी उद्योगों का उत्पादन 3% पर

नई दिल्ली, एजेंसी

देश के आठ प्रमुख बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर सितंबर, 2025 में मासिक आधार पर घटकर 3 प्रतिशत पर आ गई। मंगलवार को जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर सालाना आधार पर सुधरी है लेकिन मासिक आधार पर इसमें सुस्ती दर्ज की गई है।

अगस्त में इन प्रमुख उद्योगों का उत्पादन 6.5% बढ़ा था, जबकि पिछले साल सितंबर में यह वृद्धि 2.4% दर्ज की गई थी। सितंबर में इन बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर तीन माह में सबसे कम रही। इसके पीछे कोयला, कच्चा तेल, रिफाइनरी उत्पादन एवं प्राकृतिक गैस के उत्पादन में आई नरमी की अहम भूमिका रही। उर्वरक और सीमेंट उत्पादन की वृद्धि दर सितंबर, 2025 में धीमी होकर क्रमशः 1.6 प्रतिशत और 5.3 प्रतिशत रह गई जबकि सितंबर, 2024 में यह क्रमशः 1.9 प्रतिशत और 7.6 प्रतिशत थी। हालांकि, इस्पात और बिजली उत्पादन में सालाना आधार पर क्रमशः 14.1 प्रतिशत और 2.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) के दौरान आठ बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर गिरकर 2.9 प्रतिशत पर आ गई। पिछली वर्ष की समान अवधि में यह 4.3 प्रतिशत थी। बुनियादी उद्योगों की वृद्धि दर का देश के औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) पर प्रभाव पड़ता है। दरअसल आईआईपी में शामिल वस्तुओं के भारांक में इन प्रमुख उद्योगों का योगदान 40.27 प्रतिशत है।

अमेरिकी पारगमन शुल्क से भारत होगा प्रभावित

नई दिल्ली, एजेंसी

अमेरिका द्वारा लगाए 40% पारगमन शुल्क से भारत और आसियान क्षेत्र की कंपनियों के लिए अनुपालन से जुड़ी बड़ी दिक्कतें पैदा होने और मशीनरी, बिजली उपकरण एवं सेमीकंडक्टर क्षेत्रों पर इसका खास असर पड़ने की आशंका है। रेटिंग एजेंसी मूडीज ने एक रिपोर्ट में यह आशंका जताई है।

राष्ट्रपति ट्रंप ने 31 जुलाई को उन वस्तुओं पर 40% शुल्क लगाने की घोषणा की थी जिन्हें शुल्क से बचने के लिए तीसरे देश के रास्ते भेजा गया हो। यह व्यापक देश-स्तरीय शुल्कों के अतिरिक्त होगा। मूडीज ने मंगलवार को 'एशिया-प्रशांत क्षेत्र में व्यापार' पर केंद्रित अपनी रिपोर्ट में कहा कि यह स्पष्ट नहीं है कि ट्रंप प्रशासन 'पारगमन' को किस तरह परिभाषित करेगा। लेकिन इस कदम के निशाने पर चीन में उत्पादित ऐसी वस्तुएं हैं जो तीसरे देशों के जरिये अमेरिका भेजी जाती हैं। पारगमन शुल्क से जुड़ी अस्पष्टता आसियान देशों की अर्थव्यवस्थाओं के लिए जोखिम पैदा करती है। यदि अमेरिका इस परिभाषा को सीमित रखता है और केवल चीन से आयातित, प्रसंस्कृत या दोबारा लेबल लगाकर भेजी वस्तुओं को शामिल करता है तो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं पर इसका असर सीमित रहेगा। वहीं, यदि अमेरिका व्यापक व्याख्या अपनाता है और उन वस्तुओं को शामिल करता है जिनमें चीनी सामग्री का अंश है, तो इससे एशिया-प्रशांत आपूर्ति श्रृंखला को गंभीर आर्थिक नुकसान हो सकता है।

- 40% शुल्क से आसियान क्षेत्र की कंपनियों को होगी बड़ी दिक्कतें होंगी
- मूडीज ने एशिया-प्रशांत क्षेत्र में व्यापार पर केंद्रित अपनी रिपोर्ट की प्रस्तुत

मूडीज ने कहा कि यह शुल्क आसियान के निजी क्षेत्र के लिए बड़ी अनुपालन चुनौतियां खड़ी करेगा। निर्यातकों को शुल्क से बचने के लिए उत्पादों का महत्वपूर्ण रूपांतरण साबित करने में अतिरिक्त सतर्कता और प्रमाणन शर्तों का सामना करना पड़ेगा। पारगमन जोखिमों का सबसे अधिक सामना मशीनरी, बिजली उपकरण, उपभोक्ता ऑप्टिकल उत्पादों और सेमीकंडक्टर क्षेत्रों को करना पड़ सकता है।

राष्ट्रीय

सेना-पुलिस का एक ही मिशन, राष्ट्र की रक्षा

रक्षा मंत्री राजनाथ ने कहा - समाज में नए प्रकार के अपराध, आतंकवाद और वैचारिक युद्ध उभर रहे हैं

- पुलिस स्मृति दिवस पर राष्ट्रीय पुलिस स्मारक पर केंद्रीय मंत्री ने पुष्पांजलि अर्पित की

नई दिल्ली, एजेंसी

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को कहा कि एक ओर जहां सीमाओं पर अस्थिरता है, वहीं समाज में नए प्रकार के अपराध, आतंकवाद और वैचारिक युद्ध उभर रहे हैं। पुलिस स्मृति दिवस पर राष्ट्रीय पुलिस स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए सिंह ने यह भी कहा कि सेना और पुलिस अलग-अलग मोर्चों पर कार्य करते हैं लेकिन उनका मिशन एक ही है - राष्ट्र की रक्षा करना।

उन्होंने कहा कि 2047 तक विकसित भारत के लिए राष्ट्र की बाह्य और आंतरिक सुरक्षा में संतुलन बनाना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

नई दिल्ली में राष्ट्रीय पुलिस स्मारक पर पुलिस स्मृति दिवस पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह।

इस कार्यक्रम के तहत केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) और दिल्ली पुलिस की संयुक्त परेड आयोजित की गई। वर्तमान चुनौतियों पर रक्षा मंत्री ने कहा कि अपराध अधिक संगठित, अदृश्य और जटिल हो गया है तथा इसका उद्देश्य समाज में अराजकता पैदा करना, विश्वास को कमजोर करना तथा राष्ट्र की स्थिरता को चुनौती देना है। सिंह ने अपराध रोकने की अपनी आधिकारिक जिम्मेदारी निभाने के साथ-साथ समाज में विश्वास बनाए रखने के नैतिक कर्तव्य को पूरा करने के लिए पुलिस की सराहना की। उन्होंने कहा कि अगर आज लोग चैन की नींद सो पा रहे हैं, तो इसका कारण हमारे सतर्क सशस्त्र बलों और पुलिस पर भरोसा है। यही भरोसा हमारे देश की स्थिरता की नींव है। नक्सली समस्या पर सिंह ने कहा कि पुलिस, सीआरपीएफ, बीएसएफ और स्थानीय प्रशासन के ठोस और संगठित प्रयासों से यह सुनिश्चित हुआ कि समस्या बढ़े नहीं और वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों के लोगों ने राहत की सांस ली। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि अगले वर्ष मार्च तक नक्सल समस्या समाप्त हो जाएगी। सुरक्षा बलों के अथक प्रयासों के कारण यह समस्या अब इतिहास बनने की कगार पर है। कई शीर्ष नक्सलियों का सफाया हो गया है। जो पहले हथियार उठाते थे, वे अब आत्मसमर्पण कर रहे हैं और विकास की मुख्यधारा में शामिल हो रहे हैं। वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित जिलों की संख्या में भारी कमी आई है। जो इलाके कभी लाल गलियारे के नाम से जाने जाते थे, वे अब विकास के गलियारों में तब्दील हो गए हैं। सिंह ने कहा कि लंबे समय तक एक राष्ट्र के रूप में हमने पुलिस के योगदान को पूरी तरह से मान्यता नहीं दी। हालांकि, प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सरकार ने हमारे पुलिस बलों की स्मृतियों को सम्मानित करने के लिए 2018 में राष्ट्रीय पुलिस स्मारक की स्थापना की। पुलिस को अत्याधुनिक हथियार और बेहतर सुविधाएं प्रदान की गई हैं। अब उनके पास निगरानी प्रणाली, ड्रोन, फॉरेंसिक प्रयोगशालाएं और डिजिटल पुलिसिंग जैसे आधुनिक साधन हैं। स्मृति दिवस हर साल सीआरपीएफ के उन 10 जवानों की याद में मनाया जाता है, जो 1959 में इसी दिन लद्दाख के हॉट स्प्रिंग क्षेत्र में चीनी सैनिकों द्वारा घात लगाकर किए गए हमले में मारे गए थे।

कांस्टेबल हत्याकांड के आरोपी की मौत पर डीजीपी को नोटिस

हैदराबाद। निजामाबाद जिले में कांस्टेबल की चाकू मारकर हत्या किए जाने के बाद पुलिस की गोलीबारी में हुई आरोपी की मौत पर तेलंगाना राज्य मानवाधिकार आयोग (एचआरसी) ने मंगलवार को पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) को नोटिस जारी किया है। आयोग ने आरोपी की मौत से जुड़े हालात पर विस्तृत तथ्यात्मक रिपोर्ट तलब की है। आयोग ने उन खबरों का संज्ञान लिया जिनमें कहा गया था कि शेख रियाज (24) को सोमवार को पुलिस ने उस समय गोली मार दी जब उसने एक सरकारी अस्पताल में एक पुलिसकर्मी से कथित तौर पर पिस्तौल छीनकर उस पर हमला करने की कोशिश की थी। वाहन चोरी के एक मामले में शामिल शेख रियाज ने दोपहिया वाहन पर उसे ले जाते समय कांस्टेबल प्रमोद (उम्र लगभग 40-45 वर्ष) के सीने पर चाकू से हमला किया था।

बंगाल : महिला चिकित्सक का हाथ मरोड़ा और मारे थप्पड़ दुष्कर्म करने की दी धमकी

कोलकाता, एजेंसी

- चिकित्सक की शिकायत पर यातायात होमगार्ड और उसका पड़ोसी गिरफ्तार

पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले में शरत चंद्र चट्टोपाध्याय मेडिकल कॉलेज अस्पताल में एक जूनियर महिला डॉक्टर को एक यातायात होमगार्ड और उसके पड़ोसी ने कथित तौर पर दुष्कर्म की धमकी दी। एक वरिष्ठ अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि कथित घटना सोमवार को उलूबेरिया में स्थित एक अस्पताल में घटी। इसके बाद पीड़ित डॉक्टर ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। अधिकारी ने बताया कि खरिया मायनापुर की एक गर्भवती महिला को सोमवार शाम को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। नियमित जांच के दौरान जूनियर डॉक्टर रोगी की जटिल स्थिति के कारण उसकी पूरी तरह जांच नहीं कर पाई। उन्होंने कहा कि शुरुआती जांच में पता चला कि परीक्षण के बाद महिला रोगी के रिश्तेदार होमगार्ड और दो अन्य ने उसकी हालत के बारे में पूछा और उनमें कहासुनी हो गई। अधिकारी के मुताबिक, डॉक्टर को कथित तौर पर थप्पड़ मारा गया, उसकी बांह मरोड़ी गई और गाली-गलौज भी की गई। आरोपियों ने महिला चिकित्सक को दुष्कर्म करने की धमकी भी दी। हमने दो लोगों को गिरफ्तार किया है और जांच की जा रही है।

विदेशी आतंकियों को मार गिराने का कर रहे प्रयास : आईजीपी

जम्मू, एजेंसी

जम्मू संभाग में हर दिन 100 से अधिक आतंकवाद विरोधी अभियान चलाने का दावा करते हुए एक शीर्ष पुलिस अधिकारी ने मंगलवार को कहा कि घने जंगलों में विदेशी आतंकवादियों की मौजूदगी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है और उन्हें मार गिराने के प्रयास जारी है।

जम्मू क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक (आईजीपी) भीम सेन टूटी ने कहा कि आतंकवादी और अपराधी सुरक्षा तंत्र को तोड़ने के प्रयास में ड्रोन जैसी तकनीक का उपयोग कर रहे हैं, लेकिन आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने के लिए सुरक्षा एजेंसियां उनसे दो कदम आगे हैं। टूटी ने प्राणों की आहुति देने वाले बहादुर कर्मियों को पुलिस स्मृति दिवस पर जम्मू रेलवे स्टेशन के पास पुलिस शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि दी। जम्मू पुलिस प्रमुख ने कहा कि दो साल से विदेशी आतंकवादी (जम्मू में) एक बड़ी चुनौती रहे हैं। लेकिन हम अपने आतंकवाद-रोधी अभियान और सीमा सुरक्षा तंत्र को मजबूत कर रहे हैं। जल्द हम विदेशी आतंकियों को मार गिराने में सक्षम होंगे। जम्मू क्षेत्र में हर दिन 100 से अधिक आतंकवाद-रोधी अभियान चलाए जाते हैं।

- प्रतिदिन चल रहे 100 से अधिक आतंकवाद विरोधी अभियान

तमिलनाडु में बारिश 8 जिलों में रेड अलर्ट स्टालिन ने की समीक्षा

चेन्नई। तमिलनाडु में क्षेत्रीय मौसम कार्यालय ने मंगलवार को कई जिलों में भारी बारिश की चेतावनी जारी की। वहीं मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने अधिकारियों के साथ स्थिति की समीक्षा की और एहतियाती उपाय करने के निर्देश दिये।

स्टालिन ने उन जिलों में निगरानी अधिकारी के रूप में आईएएस अधिकारियों को तैनात करने का निर्देश भी दिया, जहां भारी बारिश की चेतावनी है। क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र ने कहा कि बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना दबाव निम्न क्षेत्र में तब्दील हो ग या है। खाड़ी के ऊपर वायु चक्रवाती परिसंचरण के प्रभाव से आज सुबह 5:30 बजे दक्षिण-पश्चिम भाग में निम्न दबाव का क्षेत्र बना। यह सुबह 8:30 बजे उसी क्षेत्र में एक सुस्पष्ट निम्न दबाव का क्षेत्र बन गया।

बेटे की मौत के बाद पूर्व डीजीपी और उनकी पत्नी पर मुकदमा

चंडीगढ़, एजेंसी

- हरियाणा पुलिस ने दर्ज की चार आरोपियों के खिलाफ हत्या व साजिश की प्राथमिकी

हरियाणा पुलिस ने पंजाब के पूर्व पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) मोहम्मद मुस्तफा के बेटे की मौत के सिलसिले में उनके और उनकी पत्नी रजिया सुल्ताना सहित चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। मुस्तफा की पत्नी रजिया पंजाब की पूर्व मंत्री हैं।

चारों व्यक्तियों के खिलाफ हत्या और आपराधिक साजिश के आरोपों में प्राथमिकी दर्ज की गयी है। मुस्तफा और पंजाब की पूर्व मंत्री सुल्ताना के 35 वर्षीय बेटे अकील अख्तर की गुरुवार को हरियाणा के पंचकूला में मौत हो गई थी। शमशुद्दीन नाम के व्यक्ति द्वारा दर्ज कराई प्राथमिकी के अनुसार, अख्तर की मौत संदिग्ध परिस्थितियों में हुई। पंचकूला पुलिस ने बताया कि मुस्तफा, सुल्ताना और अख्तर की बहन पर मुकदमा दर्ज हुआ है। पंचकूला की पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) सृष्टि गुप्ता के अनुसार, 16 अक्टूबर को पंचकूला के सेक्टर-4, एमडीसी निवासी अख्तर अपने घर पर मृत पाए गए। परिजनों ने पुलिस को सूचना दी और उनका बयान दर्ज किया गया। शुरुआत में साजिश का संदेह नहीं था और पोस्टमार्टम के बाद शव अंतिम संस्कार के लिए परिवार को सौंप दिया गया। हरियाणा पुलिस के अनुसार डीसीपी ने कहा कि इसके बाद कुछ सोशल मीडिया पोस्ट और वीडियो सामने आए, जो अख्तर ने मौत से पहले बनाए थे। इनमें अख्तर ने विवाद और जान को खतरे की आशंकाओं का आरोप लगाया था।

लालू पर नीतीश ने साधा निशाना, कहा- सत्ता में रहते महिलाओं के लिए कुछ नहीं किया

मुजफ्फरपुर (बिहार), एजेंसी

- मुजफ्फरपुर की चुनावी सभा में राजद पर किया हमला

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंगलवार को राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के प्रमुख लालू प्रसाद पर तीखा हमला बोला और कहा कि उन्होंने सत्ता में रहते महिलाओं के लिए कुछ नहीं किया तथा चारा घोटाले में आरोप पत्र दाखिल होने के बाद पद छोड़ने की नौबत आई तो पत्नी राबड़ी देवी को ही मुख्यमंत्री बना दिया।

जनता दल (यूनाइटेड) के अध्यक्ष कुमार ने मुजफ्फरपुर जिले के मीनापुर विधानसभा क्षेत्र में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की पहली चुनावी सभा में राजद अध्यक्ष को निशाने पर लिया। उन्होंने कहा कि राजद के साथ दो बार हुए गठबंधन के अनुभव से वह निराश हो गए और अब राजग के साथ स्थायी रूप से बने रहने का संकल्प लिया है। महिला सशक्तीकरण पर कुमार ने कहा कि उनकी सरकार ने बड़े पैमाने पर स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) बनाए हैं और हाल ही में शुरू की मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत 1 करोड़ से अधिक लाभार्थियों के खातों में प्रत्येक को 10,000 की राशि भेजी गई है। उन्होंने लालू प्रसाद का नाम लिए बगैर कहा कि जो लोग पहले सत्ता में थे, क्या उन्होंने महिलाओं के लिए कुछ किया? उन्हें इसकी कोई परवाह नहीं थी।

महिला प्रत्याशी को पहना दी माला

पटना/मुजफ्फरपुर। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने चुनावी सभा के दौरान महिला उम्मीदवार को माला पहनाने पर जोर देकर और रोकने की कोशिश करने वाले करीबी सहयोगी को डांटकर अपने स्वास्थ्य को लेकर नई अटकलों को जन्म दे दिया। कुमार ने चुनाव अभियान की शुरुआत मुजफ्फरपुर जिले के मीनापुर विधानसभा क्षेत्र से की। इस दौरान वह जद(यू) प्रत्याशी अजय कुशवाहा का नाम गलत लेने और औराई सीट से भाजपा उम्मीदवार रमा निषाद के नाम के आगे श्री जोड़ देने पर भी चर्चा में रहे।

वर्ल्ड ब्रीफ

चेक गणराज्य की राजधानी प्राग में ई स्कूटरों पर प्रतिबंध

प्राग। चेक गणराज्य की राजधानी प्राग अगले साल इलेक्ट्रिक स्कूटरों पर प्रतिबंध लगाएगा, जिससे यह पर्यटकों के अनुकूल परिवहन वाला नवीनतम यूरोपीय शहर बन जाएगा। नगर पार्षदों ने सोमवार को एक नया उपाय अपनाया जो साझा परिवहन नियमों में बदलाव करेगा और यह तय करेगा कि चेक गणराज्य की राजधानी में पैडल और इलेक्ट्रिक दोनों तरह की साइकिलें पार्क की जा सकती हैं। साझा ई-स्कूटरों को नियमों से हटा दिया गया है, जिससे जनवरी 2026 से इन तक पहुंच समाप्त हो जाएगी। राष्ट्रीय पाइरेट पार्टी के अध्यक्ष और शहरी परिवहन के प्रभारी उप महापौर जेडेनेक हीब ने सोशल मीडिया पर कहा कि इलेक्ट्रिक स्कूटरों के अंत को मंजूरी मिल गई है।

लीबिया : नकदी की कमी को लेकर केंद्रीय बैंक के गवर्नर तलब

त्रिपोली। लीबियाई प्रतिनिधि सभा ने नकदी की कमी से जूझ रहे लीबिया को उबारने के लिए केंद्रीय बैंक के गवर्नर को तलब करने का फैसला लिया है। संसद ने सर्वसम्मति से केंद्रीय बैंक के गवर्नर नागी इस्सा, उनके डिप्टी गवर्नर और निदेशक मंडल को बैंक की नीतियों और नकदी की कमी पर चर्चा करने के लिए अगले सत्र में शामिल होने के लिए बुलाने का फैसला किया। सत्र की कोई तारीख अभी तय नहीं की गई है। प्रथम उपसभापति फावजी अल-नुवैरी की अध्यक्षता में हुई बैठक में केंद्रीय बैंक की नवीनतम रिपोर्ट की समीक्षा की गई। संसद का यह फैसला त्रिपोली स्थित बैंक की आलोचना के बीच आया है, जिसमें यह दावा भी शामिल है कि मौजूदा नकदी संकट में बैंक की अहम भूमिका है।

युद्धविराम होने के बाद आंशिक रूप से फिर खोला गया चमन बॉर्डर

कराची। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच संघर्ष विराम के बाद दोनों देशों के बीच स्थित चमन बॉर्डर आंशिक रूप से फिर से खुल गया है। सीमा पर कई दिनों तक हुई हिंसक झड़पों में दोनों पक्षों के कई लोग मारे गए थे। कई अफगान परिवारों ने सोमवार को बलूचिस्तान प्रांत में दक्षिण-पश्चिमी सीमा पार करना शुरू कर दिया जबकि अफगानिस्तान जाने वाले कई कंटेनर वाहनों की आवाजाही भी हुई। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच संघर्ष शुरू होने पर चमन बॉर्डर सील कर दिया गया था जिससे कराची बंदरगाह से माल ले जा रहे लगभग 400 कंटेनर वाहन सीमा पर फंस गए थे। खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में स्पिन बोल्डक बॉर्डर पर भी ऐसी ही स्थिति देखी गई जहां पाकिस्तान आने वाले कंटेनर वाहन फंस गए थे।

एच1बी वीजा : स्टेटस बदलवाने या प्रवास अवधि बढ़वाने पर शुल्क नहीं

न्यूयॉर्क, एजेंसी

- **अमेरिकी नागरिकता एवं आव्रजन सेवा ने जारी किए दिशा-निर्देश**

अमेरिका में एच-1बी वीजा आवेदनों पर ट्रंप प्रशासन की ओर से लगाया गया एक लाख अमेरिकी डॉलर का शुल्क ऐसे आवेदकों पर लागू नहीं होगा, जो अपने स्टेटस में बदलाव कराना चाहते हैं या फिर प्रवास की अवधि बढ़वाना चाहते हैं।

अमेरिकी नागरिकता एवं आव्रजन सेवा (यूएससीआईएस) की ओर से सोमवार को जारी दिशानिर्देशों में कुछ गैर-आप्रवासी कामगारों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने के राष्ट्रपति ट्रंप के 19 सितंबर के आदेश में दी गई छूट को स्पष्ट किया गया है। इसके तहत नए एच1-बी वीजा के लिए शुल्क बढ़कर 1,00,000 अमेरिकी डॉलर हो जाएगा। यूएससीआईएस ने कहा, यह आदेश पहले जारी किए गए और वर्तमान में मान्य एच-1बी वीजा, या 21 सितंबर, 2025 को रात 12:01 बजे से पहले जमा किए गए किसी भी आवेदन पर लागू नहीं होगा। इस आदेश में किसी मौजूदा एच1-बी धारक के अमेरिका में आने-जाने पर रोक नहीं है। यह आदेश 21 सितंबर 2025 को रात 12:01 बजे या उसके बाद किए गए स्टेटस बदलने या प्रवास की अवधि बढ़वाने के आवेदन पर भी लागू नहीं होगा यूएससीआईएस ने स्पष्ट किया कि यह शुल्क स्टेटस में परिवर्तन के मामलों पर लागू नहीं होता है, जहां व्यक्ति देश छोड़े बिना ही श्रेणी बदल लेता है।

58 साल के खूनी इतिहास के बाद

खात्मे की ओर नक्सलवाद

नक्सलवाद की शुरुआत 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी गांव में किसान विद्रोह के रूप में हुई थी। यह शुरुआत चारु मजूमदार और कानू सान्याल जैसे नेताओं ने की थी, जो जमींदारों के उत्पीड़न और भूमि सुधारों की कमी से पैदा हुई आर्थिक व सामाजिक असमानता के खिलाफ आवाज बुलंद कर रहे थे। यह आंदोलन माओत्से तुंग की विचारधारा से प्रेरित था, इसी कारण इसे नक्सली-माओवादी विद्रोह के रूप में जाना जाता है। समय के साथ यह आंदोलन कई समूहों में विभाजित हो गया, इसका मुख्य लक्ष्य सशस्त्र विद्रोह के माध्यम से एक साम्यवादी राज्य स्थापित करना था। करीब 58 साल रक्तपात की बेशुमार घटनाओं के बाद अब यह हिंसक आंदोलन अपने ढलान पर है। सरकार का दावा है कि 2026 तक देश में नक्सलवाद पूरी तरह समाप्त हो जाएगा।

ऐसे हुई थी शुरुआत

- साठ के दशक में भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक भूमि व्यवस्था जारी थी। अधिकांश जमीन कुछ जमींदारों के पास थी, जो भूमिहीन किसानों का शोषण करते थे।
- भुखमरी से जूझ रहे किसानों ने एक जमींदार के अनाज भंडार पर छापा मारा, जिस पर पुलिस के साथ उनकी हिंसक झड़प हुई, इसमें कई किसान मारे गए थे।
- इस घटना के बाद 1967 में पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के नक्सलबाड़ी, खारीबाड़ी और फांसीदेवा क्षेत्रों में नक्सलवाद आंदोलन की शुरुआत हुई थी।
- भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी नेता चारू मजूमदार, कानू सान्याल, जंगल संथाल के नेतृत्व में किसानों ने जमींदारों के खिलाफ विद्रोह शुरू कर दिया।

नक्सलवाद का फैलाव

- 1970 के दशक में यह आंदोलन पश्चिम बंगाल से निकलकर आंध्र प्रदेश, बिहार, ओडिशा और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों के ग्रामीण और आदिवासी इलाकों में फैल गया।
- इन क्षेत्रों में गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक-आर्थिक असमानता और बुनियादी सुविधाओं की कमी जैसी भीषण समस्याओं ने नक्सलवाद को पनपने में काफी मदद की।
- सरकार ने 1971-72 में नक्सली गतिविधियों को दबाने के लिए ऑपरेशन स्टीपलचेज के नाम से बड़ा सैन्य अभियान चलाया लेकिन नक्सलवाद का खात्मा नहीं कर सका।

प्रमुख घटनाएं

- वर्ष 2007 में छत्तीसगढ़ के बस्तर में 300 विद्रोहियों ने 55 पुलिसकर्मियों को मार डाला था।
- वर्ष 2010 में कोलकाता से मुंबई जा रही एक ट्रेन में 150 से ज्यादा यात्रियों की हत्या कर दी गई थी।
- 2011 में पश्चिम बंगाल के सिल्दा कैंप पर हमले में 24 जवान और दंतेवाड़ा में 76 जवान शहीद हुए।

आंदोलन का चरम

- 1980 से 2010 के दशक तक यह आंदोलन आंध्र प्रदेश के तिरुपति से नेपाल तक फैलकर 200 से अधिक जिलों में सक्रिय हो गया।
- इस बीच पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, महाराष्ट्र, केरल, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना में सर्वाधिक हिंसक घटनाएं हुईं।

इन कारणों से बढ़ा

- स्वतंत्रता बाद भी बड़े पैमाने पर भूमि कुछ लोगों के हाथ में होना, भूमिहीनों की बड़ी संख्या।
- सरकार की ग्रामीण भारत में कृषि को संगठित करने में विफलता, गरीबी और बेरोजगारी बढ़ी।
- प्राकृतिक संसाधनों पर दबंगों के कब्जे, अपने हक छीन लेने से आदिवासियों में असंतोष।
- सरकार की आर्थिक नीतियों से पैदा असमानता गरीबी ने लोगों को आंदोलन की ओर धकेला।

क्षीण होने की शुरुआत

- वर्ष 2014 के बाद से सरकार की नीतियों और सुरक्षा अभियानों के कारण कमी आई है।
- नक्सल प्रभावित क्षेत्र 18,000 वर्ग किमी से घटाकर 11 जिलों तक सीमित कर दिया गया।

रूस-यूक्रेन युद्धविराम के लिए ट्रंप के प्रस्ताव से यूरोपीय देश सहमत नहीं

आठ देशों के नेताओं ने यूक्रेन की जमीन पर रूस के कब्जे का किया विरोध

कीव, एजेंसी

यूक्रेन के राष्ट्रपति और यूरोपीय संघ के नेताओं ने मंगलवार को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पर युद्ध को समाप्त करने के कूटनीतिक प्रयासों में देरी करने का आरोप लगाया और ऐसे किसी भी कदम का विरोध किया जिसमें शांति के बदले कीव को रूसी सुरक्षा बलों द्वारा कब्जा की गई भूमि को सौंपने की बात हो। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप हाल ही में कई मौकों पर यह सुझाव दे चुके हैं।

यूरोप के आठ नेताओं और यूरोपीय संघ के वरिष्ठ अधिकारियों ने एक संयुक्त बयान में कहा कि वे कीव को युद्ध जीतने में मदद करने के लिए रूस के अरबों यूरो की विदेश में जब्त संपत्तियों का उपयोग करने की योजना पर आगे बढ़ने का विचार बना रहे हैं। हालांकि, इस तरह के कदम की वैधता और परिणामों को लेकर कुछ आशंकाएं हैं। बयान में यूक्रेन में ट्रंप के शांति प्रयासों के प्रति समर्थन व्यक्त किया गया। ट्रंप आने वाले सप्ताह में हंगरी के बुडापेस्ट में पुतिन से मिलने वाले हैं। बयान में यह भी बताया गया कि सभी नेता इस सिद्धांत के प्रति प्रतिबद्ध हैं कि अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को बलपूर्वक नहीं बदला जाना चाहिए।

ट्रंप ने अपने रुख से पलटते हुए पिछले महीने कहा था कि यूक्रेन को जमीन छोड़नी होगी। इससे पहले उन्होंने कहा था कि यूक्रेन वह सारा इलाका वापस जीत सकता है, जो उसने रूस के हाथों गंवाया है। पिछले सप्ताह पुतिन के साथ फोन पर बातचीत और उसके बाद शुक्रवार को यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के साथ बैठक के बाद ट्रंप ने अपना रुख फिर से बदल दिया और कीव व मॉस्को से युद्ध को जहां हैं, वहीं रोकने का आह्वान किया। रूस और यूक्रेन के बीच तीन साल से ज्यादा युद्ध जारी है। ट्रंप ने सोमवार को कहा कि उन्हें लगता है कि यूक्रेन अंततः रूस को हरा सकता है, लेकिन अब उन्हें इस बात पर संदेह है कि ऐसा होगा।

यूक्रेन और यूरोपीय नेता ट्रंप को अपने पक्ष में रखने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। बयान के मुताबिक, हम राष्ट्रपति ट्रंप के इस रुख का पुरजोर समर्थन करते हैं कि युद्ध तुरंत समाप्त किया जाना चाहिए और मौजूदा संपर्क रेखा ही बातचीत का शुरुआती बिंदु होनी चाहिए। हम सभी देख सकते हैं कि पुतिन हिंसा और विनाश को चुन रहे हैं।

ठंड में यूक्रेन में पैदा हो सकता है भीषण बिजली संकट

शोस्त्का। यूक्रेन पर रूस के युद्ध का असर आम लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी पर पड़ रहा है। दरअसल, रूस ने यूक्रेन के ऊर्जा संस्थानों पर अपने हमले का अभियान तेज कर दिया है। खासकर पूर्व में सीमा के निकटवर्ती क्षेत्रों में जेनरेटर के चलने और अंधकार और पानी की कमी के मौसम की शुरुआत हो चुकी है। रूस की ओर से सैकड़ों ड्रोन दागे जाने के कारण ये हमले और भी ज्यादा प्रभावी हो गए हैं और हवाई सुरक्षा को भारी नुकसान पहुंचाते हैं, खासकर उन इलाकों में जहां सुरक्षा कमजोर है। इसके नतीजे पहले से ही रोजमर्रा की जिंदगी को बदल रहे हैं, खासकर उन लोगों के लिए जिनका जीवन बिजली पर निर्भर है।

रुबियो-लावरोव वार्ता के बाद ट्रंप-पुतिन शिखर सम्मेलन टला

वाशिंगटन। यूक्रेन में युद्ध के समाधान के लिए ट्रंप की पुतिन के साथ बैठक की योजना टाल दी गई है। बुडापेस्ट में होने वाली बैठक की घोषणा पिछले हफ्ते की गई थी, हालांकि इसकी तारीख तय नहीं हुई थी। एक अधिकारी के मुताबिक यह निर्णय अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो और रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव के बीच हुई बातचीत के बाद लिया गया।

रूसी खुफिया प्रमुख का नाटो पर युद्ध की तैयारी का आरोप

व्लादिवोस्तोक। रूसी विदेश खुफिया सेवा के निदेशक सर्गेई नारिश्किन ने कहा है कि नाटो रूस के साथ युद्ध के लिए तेजी से संसाधनों को जुटा रहा है। वह उज्बेकिस्तान के समरकंद में आयोजित स्वतंत्र राज्यों की एक बैठक में बोल रहे थे। नारिश्किन का बयान खुफिया सेवा की वेबसाइट पर सोमवार को प्रकाशित किया गया। उन्होंने कहा, हम निश्चित रूप से नाटो के यूरोपीय सदस्यों को रूस के साथ युद्ध की तैयारी करते देख रहे हैं। इसके लिए नियुक्त नाटो सहयोगी प्रतिक्रिया बल को सभी आवश्यक संसाधन शीघ्रता से उपलब्ध कराने का कार्य निर्धारित किया गया है। नारिश्किन ने कहा कि यूरोपीय देश अपने रक्षा उद्योगों के विस्तार के साथ नियमित अभ्यास कर रहे हैं और रूसी खतरे के प्रचार को बढ़ा रहे हैं। यूरोपीय नाटो सदस्यों के पास महाद्वीप की सुरक्षा के लिए दीर्घकालिक योजनाएं नहीं हैं। उन्होंने फ्रांस और जर्मनी पर रूसोफोबिया को बढ़ावा देने का आरोप लगाया।

नया गठबंधन अब भी संसद के दोनों सदनों में बहुमत से कम है और किसी भी विधेयक को पारित करने के लिए अन्य विपक्षी दलों का समर्थन लेना होगा, जो उनकी सरकार को अस्थिर और अल्पकालिक बना सकता है।

साने ताकाइची बनीं जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री

- **एलडीपी की हार के बाद तीन माह से छाया गतिरोध हुआ खत्म**

टोक्यो। जापान की संसद ने मंगलवार को अति रूढ़िवादी साने ताकाइची को देश की पहली महिला प्रधानमंत्री के रूप में चुना। इस घटनाक्रम से एक दिन पहले 64 वर्षीय ताकाइची की संघर्षरत 'लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी' ने एक नए सहयोगी दल के साथ गठबंधन समझौता किया, जिससे उनके सत्तारूढ़ गठबंधन के और अधिक दक्षिणपंथी होने की उम्मीद है।

ताकाइची ने शिगेरु इशिबा का स्थान लिया, जिससे जुलाई में लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) की करारी चुनावी हार के बाद तीन महीने से जारी राजनीतिक गतिरोध खत्म हो गया। प्रधानमंत्री के रूप में केवल एक वर्ष तक सेवा देने वाले इशिबा ने मंगलवार को मंत्रिमंडल सहित इस्तीफा दे दिया, जिससे ताकाइची के सत्ता में आने का मार्ग प्रशस्त हुआ। निचले सदन में हुए मतदान में ताकाइची को 237 वोट मिले, जो बहुमत से चार अधिक हैं जबकि 'कॉन्स्टीट्यूशनल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ जापान' के प्रमुख योशिको नोडा को 149 वोट मिले। परिणाम घोषित होने पर ताकाइची खड़ी हुईं और उन्होंने झुककर सभी का अभिवादन किया। एलडीपी का ओसाका स्थित दक्षिणपंथी जापान इनोवेशन पार्टी (इशिन नो काई) के साथ गठबंधन ने ताकाइची की जीत सुनिश्चित की, क्योंकि विपक्ष एकजुट नहीं था।

निकोलस सारकोजी 5 साल की सजा काटने जेल पहुंचे

पेरिस। पूर्व राष्ट्रपति निकोलस सारकोजी अपने 2007 के चुनाव अभियान के लिए आपराधिक षडयंत्र के तहत लीबिया से धन प्राप्त करने के जुर्म में पांच वर्ष की सजा काटने मंगलवार को पेरिस की जेल में पहुंच गए। वह आधुनिक फ्रांस के पहले पूर्व राष्ट्रपति हैं जिन्हें जेल भेजा गया है।

सारकोजी पत्नी कार्ला ब्रूनी का हाथ थामे हुए घर से निकले और ला सांते जेल पहुंचने के लिए कार में बैठे। जेल जाते समय सारकोजी ने कहा, एक निर्दोष को जेल में डाला जा रहा है। पिछले महीने अदालत ने उन्हें दोषी ठहराया था। सारकोजी ने अपील लंबित रहने के दौरान जेल भेजने के जज के निर्णय को चुनौती दी है। राष्ट्रपति आवास एलिसी पैलेस से ला सांते जेल तक के अब तक के उनके सफर ने पूरे फ्रांस को झकझोर दिया है। जेल में दाखिल होने से पहले सारकोजी पत्नी के साथ बच्चों और नाती-पोतों से मिलने घर के बाहर निकले। उन्होंने बाहर समर्थकों की भीड़ की ओर हाथ हिलाया और कार में बैठ गए। सैकड़ों समर्थकों ने तालियां बजाईं और 'निकोलस, निकोलस' के नारे लगाए।

पेरिस की अदालत ने आदेश दिया है कि सारकोजी अपील सुने जाने की प्रतीक्षा किए बिना सजा शुरू करें क्योंकि अपराध से सार्वजनिक व्यवस्था में गंभीर व्यवधान उत्पन्न हुआ था। अदालत के आदेश के अनुसार, 70 वर्षीय सारकोजी जेल में दाखिल होने के बाद ही अपनी रिहाई के लिए अपीलीय अदालत में आवेदन कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण खनिज : अमेरिका ने ऑस्ट्रेलिया के साथ किया 8.5 अरब डॉलर का सौदा

वाशिंगटन, एजेंसी

- **ट्रंप ने चीन पर कसा तंज, कहा- एक साल बाद बेकार हो जाएंगे आपके महत्वपूर्ण खनिज**

अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया ने चीन के एकाधिकार को तोड़ने के लिए सोमवार को महत्वपूर्ण खनिजों पर समझौता किया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज़ ने व्हाइट हाउस में समझौते पर हस्ताक्षर किए और इसे सहयोगियों के बीच 8.5 अरब डॉलर (7.3 अरब यूरो) का सौदा बताया।

ट्रंप ने चीन के एकाधिकारवादी मानसिकता पर तंज कसते हुये कहा, लगभग एक साल बाद हमारे पास इतने महत्वपूर्ण खनिज और दुर्लभ मृदा खनिज होंगे कि आपको समझ नहीं आएगा कि उनका क्या करें। उनकी कीमत दो डॉलर होगी। वहीं अल्बानीज ने संतुलित रुख अपनाते हुए कहा कि यह समझौता अमेरिका-ऑस्ट्रेलिया संबंधों को अगले स्तर पर ले जाएगा।

इस महीने के शुरू में बीजिंग ने घोषणा की थी कि विदेशी कंपनियों को चीन से आने वाले या चीनी तकनीक से उत्पादित दुर्लभ मृदा पदार्थों की थोड़ी सी भी मात्रा के निर्यात के लिए चीनी सरकार से अनुमति लेनी होगी। ट्रंप प्रशासन का कहना है कि इससे चीन को वैश्विक अर्थव्यवस्था पर व्यापक शक्ति प्राप्त हो जाएगी। इस समझौते को ऑस्ट्रेलिया-अमेरिका द्वारा महत्वपूर्ण खनिजों के बाजार में चीनी प्रभुत्व का मुकाबला करने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है।

अंधकार पर प्रकाश की जीत का शाश्वत उदाहरण है दिवाली: ट्रंप

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दिवाली पर शुभकामनाएं देते हुए इस त्योहार को अंधेरे पर प्रकाश की जीत का शाश्वत उदाहरण बताया।

ट्रंप ने सोमवार को एक बयान में कहा, आज मैं रोशनी के पर्व दिवाली मना रहे हर अमेरिकी को शुभकामनाएं देता हूं। उन्होंने कहा, कई अमेरिकियों के लिए दिवाली, अंधेरे पर प्रकाश की जीत का शाश्वत उदाहरण है। यह जश्न मनाने, उम्मीद से ताकत हासिल करने और नई चीजों को पूरे जोश से अपनाने और परिवारों व दोस्तों को एक साथ लाने का भी समय है। उन्होंने कहा, लाखों नागरिक दीये जलाते हैं और हम इस शाश्वत सत्य में आनंदित होते हैं कि अच्छाई की हमेशा बुराई पर विजय होती है। दिवाली मनाने वाले प्रत्येक अमेरिकी के लिए, ईश्वर करे कि यह त्योहार समृद्धि, आशा और शांति लाए। विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने भी लोगों को दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

युद्धविराम पर मंडराते खतरे के बीच इजराइल पहुंचे वेंस

तेल अवीव, एजेंसी

- **नेतन्याहू से करेंगे मुलाकात, मृत बंधकों के परिवारों से भी मिलेंगे**

अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस मंगलवार को इजराइल पहुंचे, ताकि कमजोर होते युद्धविराम समझौते को मजबूती दी जा सके। पिछले कुछ दिनों में हिंसा बढ़ने के बाद लागू युद्धविराम और दीर्घकालिक शांति योजना पर सवाल उठने के बाद यह यात्रा महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

इसी बीच, इज़राइल ने मंगलवार को कहा कि उसने एक बंधक के शव की पहचान की है जिसे फिलिस्तीनी चरमपंथियों ने रात में छोड़ा था। दूसरी ओर चरमपंथी समूह हमास के प्रमुख वार्ताकार ने कहा है कि समूह इजराइल के साथ संघर्ष विराम समझौते को बरकरार रखने पर कायम है। व्हाइट हाउस के दो शीर्ष दूतों के बाद पहुंचे वेंस बृहस्पतिवार तक यहीं रहेंगे। उनके साथ उनकी पत्नी ऊषा वेंस भी हैं।

वह इजराइली राष्ट्रपति बेंजामिन नेतन्याहू से मुलाकात करेंगे। वह यरुशलम में एक संवाददाता सम्मेलन करेंगे और उनके उन बंधकों के परिवारों से भी मिलने की संभावना है, जिनके शव अब भी गाजा में हैं। साथ ही पिछले महीने चरमपंथियों द्वारा रिहा किए गए बंधकों से भी मुलाकात कर सकते हैं। इजराइल ने पुष्टि की कि हमास ने ताल हैमी (42) के शव को लौटाया है, जो सात अक्टूबर 2023 को हमास के हमले में मारे गए थे। हैमी का किब्बुत्ज़ निर यित्ज़हाक से अपहरण किया गया था और उनके चार बच्चे हैं, जिनमें एक का जन्म हमले के बाद हुआ। इजराइल समझौते के तहत 15 शेष बंधकों के शव सौंपे जाने की प्रतीक्षा कर रहा है।

हमास के शांत रहने तक सैन्य कार्रवाई नहीं: इजराइल

यरूशलम। इजराइल ने हमास को चेतावनी देते हुए कहा कि जब तक वह शांति समझौते का पालन करता रहेगा तब तक इजराइली सैन्य बल कोई कार्रवाई नहीं करेगा। इजराइल की यह चेतावनी हमास की ओर से सभी मृत बंधकों के अवशेष लौटाने में देरी के बाद आई है। इजराइली प्रधानमंत्री कार्यालय के एक अधिकारी ने कहा, हमास खेल खेल रहा है, वे और शवों को लौटा सकते हैं, लेकिन हम देख रहे हैं कि वे लौटाने में देरी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर हमास शवों को लौटाने में किसी तरह की देरी करता है तो इजराइल जरूर कोई कदम उठायेगा।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 22 अक्टूबर, बुधवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-कार्तिक, पक्ष-शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा 20.16 तक तत्पश्चात द्वितीया।

आज का पंचांग

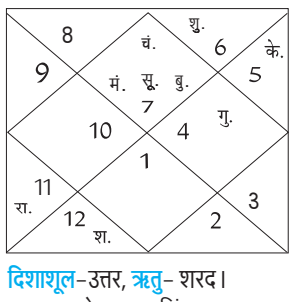

दिशाशूल-उत्तर, **ऋतु**- शरद।
चन्द्रबल- मेष, वृषभ, सिंह, तुला, धनु, मकर।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद।
नक्षत्र- स्वाती 23 अक्टूबर 01.52 तक तत्पश्चात विशाखा।

मेष — आज व्यवसाय में बदलाव करने की योजना बना सकते हैं। जीवनसाथी को पर्याप्त समय दें। रिलेशनशिप को लेकर समस्या दूर होगी। मित्रों के साथ किसी खास विषय पर चर्चा का आनंद लेंगे। परिजनों का पूरा समर्थन मिलेगा।

वृष — आज आप आराम करने का विचार बनाएंगे। रचनात्मक अभिरुचियों में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में बॉस आपकी प्रशंसा करेंगे। मनचाहा काम मिलने से मन प्रसन्न रहेगा। विद्यार्थियों को कड़ी मेहनत का सार्थक परिणाम मिलेगा।

मिथुन — आज अधूरे पड़े कार्यों को पूरा करने का अवसर मिलेगा। पेट में जलन की परेशानी हो सकती है। दूसरों से अधिक अपेक्षा न करें। मन में अज्ञात भय परेशान कर सकता है। समय का दुरुपयोग करने के कारण अधिकारी आपसे नाराज हो सकते हैं।

कर्क — आज अपने शौक को पूरा करने में तत्पर रहेंगे। प्रेमीजन के प्रति अविश्वास न रखें। आपके व्यक्तित्व में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं। पाचन संबंधी समस्या परेशान कर सकती है। विद्यार्थियों को पढ़ाई में काफी मेहनत करनी पड़ सकती है।

सिंह — आज आपकी नेतृत्व योग्यता की प्रशंसा होगी। कारोबारी यात्रा होने के योग बन रहे हैं। अध्यात्मिक विचारों के प्रभाव में रहेंगे। भाई-बहनों के साथ संबंध मधुर होंगे। अपनी प्रतिभा को दिखाने का मौका मिलेगा।

कन्या — आज घर के नवीनीकरण पर धन खर्च कर सकते हैं। मानसिक तनाव में कमी आएगी। किसी जरूरी काम को निपटाने का दबाव रहेगा। करियर में उच्च पद प्राप्त होगा। कला जगत से जुड़े लोगों की प्रशंसा होगी।

तुला — आज महत्वपूर्ण विषयों को लेकर कन्फ्यूजन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परेशानियों का हल ढूंढने में लगे रहेंगे। रियल एस्टेट से जुड़े कारोबारियों की आय में वृद्धि होगी। नव विवाहित लोग कहीं घूमने की योजना बना सकते हैं।

वृश्चिक — आज आपको बुरे सपने परेशान कर सकते हैं। आपको अति स्पष्टवादी बयान देने से बचना चाहिए। परिवार का वातावरण अत्यंत सहयोगात्मक रहेगा। आप दिखावे में अत्यधिक धन खर्च कर सकते हैं। बजट का ध्यान रखकर ही कोई काम करें।

धनु — आज आप अनुशासन को अत्यधिक महत्व देंगे। संतान की उन्नति से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। प्रेमी जन से अपने मन के मनोभावों को व्यक्त कर सकते हैं। दांपत्य संबंधों में मधुरता बनाए रखें। बड़े भाई-बहनों का सहयोग प्राप्त होगा।

मकर — आज पूरा दिन स्वयं को तरोताजा महसूस करेंगे। सकारात्मक रवैया अपनाने के कारण आपके सभी काम समय पर हो जाएंगे। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिल सकती है। कार्यक्षेत्र में अधिकारियों के साथ आपका तालमेल शानदार रहेगा।

कुंभ — आज कानूनी मामले उलझने के योग बन रहे हैं। किसी से शत्रुता मोल न लें। विदेश यात्रा के दौरान कठिनाइयां आएंगी। रिश्तेदारों की बातें आपको बुरी लग सकती हैं। बिना जांच-परख के किसी अजनबी से मित्रता न करें।

मीन — आज मन की चंचलता पर नियंत्रण रखें। अपने स्वास्थ्य को लेकर लापरवाही न करें। सहकर्मियों के साथ आपको अपने संबंध खराब नहीं करना चाहिए। दांपत्य जीवन में कुछ विघ्नता रहेगी। प्रियजनों का व्यवहार आपको दु:ख पहुंचा सकता है।

सुडोकू -137

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

		9	5	4				
2	3				9			
4				6				
8			9					
	7						5	
			1		7			
	1			9		6		4
	9		4					8
5				3	2	7		

सुडोकू - 136 का हल

4	5	8	3	1	6	2	9	7
9	3	1	5	7	2	6	8	4
6	7	2	4	9	8	1	5	3
7	2	9	8	6	3	5	4	1
1	8	5	2	4	9	7	3	6
3	6	4	7	5	1	8	2	9
2	9	3	1	8	7	4	6	5
8	4	7	6	3	5	9	1	2
5	1	6	9	2	4	3	7	8

जिस तरह से हमने बल्लेबाजी की, मैं उससे खुश नहीं हूं क्योंकि हमने अच्छी शुरुआत की थी लेकिन हम इसे जारी नहीं रख सके। एक कप्तान के रूप में मैं हमारे खेलने के तरीके से खुश नहीं हूं। हमारी टीम वास्तव में बहुत अच्छी है पर हम अपनी क्षमता के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर पाए।
-अटापट्टू, श्रीलंका की कप्तान

स्टेडियम

बरेली, बुधवार 22 अक्टूबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

रिजवान की जगह शाहीन कप्तान

लाहौर : पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने अगले महीने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ होने वाली एकदिवसीय सीरीज से पहले बाएं हाथ के तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी को अपनी वनडे टीम का कप्तान नियुक्त किया है, जो मुहम्मद रिजवान की जगह लेंगे। पीसीबी ने सोमवार को कहा कि शाहीन चार से आठ नवंबर तक फैसलाबाद में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ होने वाली तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज में पाकिस्तान की टीम का नेतृत्व करेंगे।

मुक्केबाजी टीम बहरीन रवाना

नई दिल्ली : भारत की 23 सदस्यीय मुक्केबाजी टीम 23 अक्टूबर से शुरू होने वाले तीसरे एशियाई युवा खेलों में भाग लेने के लिए मनामा, बहरीन के लिए रवाना हो गई है। टीम में ध्रुव खरब, उधम सिंह राघव, खुशी चंद, अहाना शर्मा और चंद्रिका भोरशी पुजारी जैसे मुक्केबाज शामिल हैं जिन्होंने हाल में भारत की तरफ से अच्छा प्रदर्शन किया था। टीम में कई ऐसे मुक्केबाज भी शामिल हैं जिन्होंने जुलाई 2025 में एशियाई अंडर-17 चैंपियनशिप में प्रभावशाली प्रदर्शन किया था, जहां भारत ने 43 पदक जीते थे और कुल मिलाकर दूसरा स्थान हासिल किया था।

भारतीय एथलेटिक्स टीम रांची पहुंची

रांची : भारतीय एथलेटिक्स दल का पहला जत्था 24 से 26 अक्टूबर तक मोरहाबादी स्थित प्रतिष्ठित बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम में होने वाली दक्षिण एशियाई सैफ सीनियर चैंपियनशिप में भाग लेने के लिए मंगलवार को यहां पहुंच गया। धावक प्रणव गुरव, उत्तम पाटिल और अर्नव टाकलकर अपने कोच के साथ सबसे पहले पहुंचे, जिससे तीन दिवसीय महाद्वीपीय प्रतियोगिता में भारतीय अभियान की तैयारी की शुरुआत हुई। भारत का 92 सदस्यीय दल इस प्रतियोगिता में भाग लेगा। वक प्रणव ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा व्यवस्था बहुत अच्छी है। मैं यहां अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए उत्साहित हूं।

ऑस्ट्रेलियाई कप्तान हीली हुईं बाहर

इंदौर : आस्ट्रेलिया की कप्तान एलिसा हीली पिंडली की चोट के कारण बुधवार को इंग्लैंड के खिलाफ होने वाले महिला विश्व कप मैच में नहीं खेल पाएंगी। उनकी अनुपस्थिति में ताहलिया मैकग्रा कप्तानी करेंगी। पिछले दो मैचों में शतक लगाने वाली ऑस्ट्रेलियाई कप्तान को शनिवार को अभ्यास सत्र के दौरान चोट लगी। आस्ट्रेलिया की मुख्य कोच शेली निश्चेके ने मंगलवार को मैच की पूर्व संध्या पर संवाददाताओं से कहा हां, यह निश्चित रूप से दुर्भाग्यपूर्ण है कि उसकी पिंडली में हल्का खिंचाव है।

लक्ष्य फ्रेंच ओपन में हारकर बाहर

पेरिस : भारत के लक्ष्य सेन मंगलवार को यहां पुरुष एकल के पहले दौर में आयरलैंड के एनहात एनगुएन के खिलाफ सीधे गेम में हारकर फ्रेंच ओपन सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट से बाहर हो गए। लक्ष्य शुरुआत से ही लय में नहीं दिखे और उन्हें दुनिया के 29वें नंबर के खिलाड़ी एनगुएन के खिलाफ 7-21, 16-21 से हार का सामना करना पड़ा। लक्ष्य ने पिछले हफ्ते डेनमार्क ओपन के पहले दौर में तीन गेम में एनगुएन को हराया था लेकिन पेरिस में उनका प्रदर्शन अनियमित रहा।

पंत फिट, दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ करेंगे कप्तानी

नई दिल्ली, एजेंसी

विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत को इंग्लैंड दौरे के दौरान पैर में लगी चोट से पूरी तरह उबरने के बाद मंगलवार को दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ लाल गेंद की श्रृंखला के लिए भारत ए टीम का कप्तान नियुक्त किया गया।

पंत को जुलाई में मैनचेस्टर में चौथे टेस्ट में बल्लेबाजी करते समय पैर में चोट लग गई थी और इसके बाद वह एशिया कप और हाल ही में वेस्टइंडीज के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की घरेलू श्रृंखला में नहीं खेल पाए थे। क्रिस वोक्स की गेंद उनके दाहिने पैर के अंगूठे पर लगी, लेकिन इसके बावजूद वह बल्लेबाजी करने के लिए उतरे और उन्होंने अर्धशतक बनाया।

चयनकर्ताओं ने उन्हें 30 अक्टूबर से बेंगलुरु में होने वाले दोनों मैचों के लिए भारत ए टीम में शामिल किया है। इससे पंत को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 14 नवंबर से कोलकाता में शुरू होने वाली दो टेस्ट मैच की श्रृंखला के लिए तैयारी करने का मौका मिलेगा। साई सुदर्शन को इन दो चार दिवसीय मैचों के लिए उप कप्तान नियुक्त किया गया है। उनके अलावा केएल राहुल, देवदत्त पडिक्कल, विकेटकीपर ध्रुव जुरेल और तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा को भी टीम में शामिल किया गया है। यह सभी खिलाड़ी वेस्टइंडीज के खिलाफ खेली गई श्रृंखला में भारतीय टीम का हिस्सा थे। प्रसिद्ध, सिराज, आकाश दीप और जुरेल छह से नौ नवंबर तक होने वाले दूसरे मैच में खेलेंगे। पहले मैच के लिए एन जगदीसन टीम में दूसरे विकेटकीपर होंगे। घरेलू खिलाड़ियों में यह देखना दिलचस्प होगा कि तेज गेंदबाज गुरनूर बरार और खलील अहमद कैसा प्रदर्शन करते हैं।

पहले चार दिवसीय मैच के लिए भारत ए टीम : ऋषभ पंत (कप्तान, विकेटकीपर), आयुष म्हात्रे, एन जगदीसन (विकेटकीपर), साई सुदर्शन (उपकप्तान), देवदत्त पडिक्कल, रजत पाटीदार, हर्ष दुबे, तनुष कोटियन, मानव सुथार, अंशुल कंबोज, यश ठाकुर, आयुष बडोनी, सारांश जैन।

दूसरे चार दिवसीय मैच के लिए भारत ए टीम : ऋषभ पंत (कप्तान, विकेटकीपर), केएल राहुल, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), साई सुदर्शन (उपकप्तान), देवदत्त पडिक्कल, रुतुराज गायकवाड़, हर्ष दुबे, तनुष कोटियन, मानव सुथार, खलील अहमद, गुरनूर बराड़, अभिमन्यु ईश्वरन, प्रसिद्ध कृष्णा, मोहम्मद सिराज, आकाश दीप।

दक्षिण अफ्रीका की ए टीम की कप्तानी बल्लेबाज मार्केस एकरमैन करेंगे, जबकि सीनियर टीम के कप्तान तेम्बा बावुमा भी इसमें शामिल होंगे, जो पिंडली की चोट से उबरने के बाद वापसी कर रहे हैं। द. अफ्रीका ए टीम 13 से 19 नवंबर तक राजकोट में भारत ए के खिलाफ तीन एकदिवसीय मैच भी खेलेगी।

मंधाना शीर्ष स्थान पर बरकरार, दीप्ति गेंदबाजों की सूची में तीसरे स्थान पर

दुबई, एजेंसी

भारतीय उप कप्तान स्मृति मंधाना आईसीसी की मंगलवार को जारी नवीनतम महिला एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर बनी हुई हैं। उन्होंने इंग्लैंड की कप्तान नेट स्किवर ब्रंट पर 83 अंक की बढ़त बना ली है। गेंदबाजी रैंकिंग में भारतीय ऑफ स्पिनर दीप्ति शर्मा तीसरे स्थान पर हैं जबकि इंग्लैंड की बाएं हाथ की स्पिनर सोफी एकलेस्टोन शीर्ष पर हैं। स्मृति ने मौजूदा विश्व कप में लगातार अर्धशतक बनाए हैं। उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ इंदौर में पिछले मैच में भारत की करीबी हार के दौरान 88 रन की पारी खेली थी। स्मृति ने हाल ही में शानदार प्रदर्शन किया है। इस बाएं हाथ की बल्लेबाज को विश्व कप से पहले ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला में शानदार प्रदर्शन के लिए सितंबर 2025 के लिए आईसीसी की महीने की सर्वश्रेष्ठ महिला क्रिकेटर चुना गया था। ऑस्ट्रेलियाई कप्तान एलिसा हीली विश्व कप में लगातार शतकों के दम पर एक स्थान के फायदे से तीसरे स्थान पर हैं।

कोहली की वापसी को पटरी से उतारने की ऑस्ट्रेलियाई योजना

शॉर्ट ने कहा-ऑफ स्टंप के बाहर विराट की कमजोरी का फायदा उठाएंगे तेज गेंदबाज

एडीलेड, एजेंसी

ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज हाल ही में मिली सफलता की लय को बरकरार रखते हुए भारतीय दिग्गज विराट कोहली की वापसी को उनके सबसे शानदार मैदान पर बिगाड़ने की कोशिश करेंगे। कोहली गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे वनडे में एडिलेड ओवल में आखिरी बार मैदान पर उतरेंगे। इस महान भारतीय खिलाड़ी ने एडिलेड ओवल में सभी प्रारूपों में पाँच शतक लगाए हैं - जो उनके करियर में दुनिया के किसी भी मैदान से ज़्यादा है। कोहली ने एडिलेड में चार अर्धशतक भी लगाए हैं, जहां उनका औसत 65 का है। पर यह भारतीय धुरंधर यह जानते हुए एडिलेड लौट रहा है कि ऑस्ट्रेलिया पिछले रविवार को पर्थ में हुए सीरीज के पहले मैच की तरह ही उन पर दबाव बनाए रखेगा, जहां वह शून्य पर गली में कैच आउट हो गए थे। इस आउट ने ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों द्वारा ऑफ स्टंप से बाहर की गेंद पर ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति को जारी रखा।

ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज मैथ्यू शॉर्ट का मानना है कि उनकी टीम के तेज गेंदबाज बृहस्पतिवार को यहां दूसरे एकदिवसीय मैच में विराट कोहली की ऑफ स्टंप के बाहर की गेंदों के खिलाफ हाल की कमजोरी का फायदा उठाना जारी रखेंगे। पर्थ में सीरीज के पहले मैच में शून्य पर आउट हुए कोहली एडीलेड ओवल में वापसी करने के लिए बेताब होंगे जो विदेशी सरजमीं पर उनका सबसे सफल मैदान हैं। इस मैदान पर उन्होंने पांच अंतरराष्ट्रीय शतक लगाए हैं और सभी प्रारूपों में 65 की औसत से रन बनाए हैं।

शॉर्ट ने संवाददाताओं से कहा मैं तेज गेंदबाजों की बैठक में नहीं था लेकिन ऐसा लगता है कि वह (कोहली) हाल ही में इसी तरह आउट हो रहे हैं। उन्होंने कहा हॉफ (जोश हेजलवुड) और स्टार्सी (मिचेल स्टार्क) जैसे कुछ खिलाड़ियों ने उनके खिलाफ काफी गेंदबाजी की है और वे जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं। शॉर्ट ने कहा, पर्थ में उन्होंने परिस्थितियों को अपना काम करने दिया। विकेट पर थोड़ी स्विंग और थोड़ी सी उछाल थी इसलिए मुझे यकीन है कि वे फिर से ऐसा ही करेंगे। भारत को पहले एकदिवसीय में ऑप्टस स्टेडियम में 42,423 दर्शकों की मौजूदगी में भारी समर्थन मिला था जिनमें से अधिकांश सात महीने से अधिक समय के बाद रोहित शर्मा और कोहली की टीम में वापसी देखने आए थे। खेल के अन्य प्रारूपों से संन्यास लेने के बाद ये दोनों पूर्व कप्तान नौ मार्च को चैंपियंस ट्रॉफी जीतने के बाद पहली बार राष्ट्रीय टीम में लौटे हैं। दोनों ने सिर्फ एकदिवसीय मुकाबले खेलने का फैसला किया है।

ऑस्ट्रेलिया सीरीज से पता चलेगा कि रोहित व कोहली विश्व कप तक खेल सकते हैं या नहीं: पोंटिंग

दुबई : आस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग का मानना है कि विराट कोहली व रोहित शर्मा का ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मौजूदा वनडे श्रृंखला में प्रदर्शन यह निर्धारित करेगा कि यह स्टार भारतीय जोड़ी 2027 विश्व कप तक खेल सकती है या नहीं। अब केवल वनडे प्रारूप में खेलने वाले कोहली और रोहित मार्च के बाद जब अपना पहला अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने के लिए उतरे तो उनकी शुरुआत अच्छी नहीं रही और वे पर्थ की उछाल भरी पिच पर ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाजों के सामने ज़्यादा देर तक नहीं टिक पाए। भारत यह मैच सात विकेट से हार गया था। तीन मैचों की श्रृंखला का दूसरा एकदिवसीय मैच गुरुवार को एडिलेड में होगा, जहां की परिस्थितियां पर्थ की तुलना में भारतीय बल्लेबाजों के लिए अधिक अनुकूल होंगी। पोंटिंग ने पूर्व भारतीय मुख्य कोच रवि शास्त्री के साथ आईसीसी रिव्यू पर बात करते हुए कहा कि इस दिग्गज जोड़ी को केवल 2027 वनडे विश्व कप के बारे में सोचने के बजाय अपने लिए अल्पकालिक लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए।

- बृहस्पतिवार को होगा दूसरा एकदिवसीय मैच

मैं मानसिक रूप से अब जल्दी थक जाता हूं : स्मिथ

सिडनी : टेस्ट क्रिकेट पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित करने से स्टीव स्मिथ पूरे सत्र में तरोताजा बने रहे हैं जबकि कुछ वर्ष पहले वह तीनों प्रारूपों में समान जुनून से खेलने के बाद पूरी तरह से थक जाते थे।

एकदिवसीय प्रारूप से संन्यास ले चुके स्मिथ ने तरोताजा होने के लिए ब्रेक लिया था और अब वह 21 नवंबर से पर्थ में शुरू होने वाले पहले एशेज टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया की कप्तानी करेंगे जबकि नियमित कप्तान पैट कमिंस अब भी पीठ के निचले हिस्से की चोट से उबर रहे हैं। यह 36 वर्षीय बल्लेबाज अब ऑस्ट्रेलियाई सर्दियों के दौरान न्यूयॉर्क में रहता है और अगस्त के बाद से उन्होंने बल्ला नहीं उठाया है।

स्मिथ ने अपने पहले ट्रेनिंग सत्र के बाद यहां संवाददाताओं से कहा मैं मानसिक रूप से पहले से कहीं अधिक जल्दी थक जाता हूं। उन्होंने कहा दस साल पहले मुझे वापसी करके हर संभव मैच खेलना बहुत पसंद था। अब जसहिर है कि टेस्ट क्रिकेट मेरे लिए बड़ी प्राथमिकता बन गया है। स्मिथ ने कहा मुझे पता है कि जब मैं शुरुआत में बहुत अधिक खेलता हूं तो तो गर्मियों के अंत तक मैं मानसिक रूप से काफी थक जाता हूं और शायद पहले जैसा प्रदर्शन नहीं कर पाता। अपनी ऊर्जा बचाने और प्रारूपों को प्राथमिकता देने का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

दक्षिण अफ्रीका ने पाकिस्तान को रौंदा

कोलंबो, एजेंसी

अंक तालिका

देश	मैच	जीत	हार	अनिर्णीत	अंक	रन रेट
द.अफ्रीका	6	5	1	0	10	0.276
ऑस्ट्रेलिया	5	4	0	1	9	1.818
इंग्लैंड	5	4	0	1	9	1.490
भारत	5	2	3	0	4	0.526
न्यूजीलैंड	5	1	2	2	4	-0.245
श्रीलंका	5	0	3	2	2	-1.564
बांग्लादेश	5	1	4	0	2	-0.676
पाकिस्तान	6	0	4	2	2	-2.651

कप्तान लॉरा वोलवार्ट की अगुआई में बल्लेबाजों के उम्दा प्रदर्शन के बाद गेंदबाजों ने भी प्रभावी प्रदर्शन किया जिससे दक्षिण अफ्रीका वर्षा से प्रभावित महिला एकदिवसीय विश्व कप मैच में पाकिस्तान को मंगलवार को यहां डकवर्थ-लुईस पद्धति के तहत 150 रन से रौंदकर अंक तालिका के शीर्ष पर पहुंच गया। दक्षिण अफ्रीका ने इसके साथ ही विश्व कप में पहली बार लगातार पांच जीत दर्ज की।

इस जीत से दक्षिण अफ्रीका के छह मैच में पांच जीत से 10 अंक हो गए हैं और टीम अंक तालिका के शीर्ष पर है। टूर्नामेंट में पहली जीत का इंतजार कर रहा पाकिस्तान दो अंक के साथ अंतिम स्थान पर है। दक्षिण अफ्रीका की टीम पहले ही सेमीफाइनल में जगह बना चुकी है जबकि पाकिस्तान टूर्नामेंट से बाहर हो चुका है।

सलामी बल्लेबाज लॉरा ने 82 गेंद में 10 चौकों और दो छक्कों से 90 रन की पारी खेलने के अलावा सुने लूस (61 रन, 59 गेंद, आठ चौके, दो छक्के) के साथ दूसरे विकेट के लिए 118 रन की साझेदारी करके टीम के 40 ओवर में नौ विकेट पर 312 रन रन के मजबूत स्कोर की नींव रखी। अनुभवी मारिजेन कैप (नाबाद 68, 43 गेंद, छह चौके, तीन छक्के) और नेदिन डि क्लर्क (41 रन, 16 गेंद, तीन चौके, चार छक्के) ने अंतिम ओवरों में ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए टीम का स्कोर 300 रन के पार पहुंचाया। पाकिस्तान की ओर से नाशरा संधू ने 45 जबकि सादिया इकबाल ने 63 रन देकर तीन विकेट चटकाए। पाकिस्तान को मैच में बारिश के कई बार खलल डालने के बाद अंततः 20 ओवर 234 रन का लक्ष्य मिला लेकिन टीम ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाए और अंततः सात विकेट पर 83 रन ही बना सकी। दक्षिण अफ्रीका की ओर से कैप ने गेंदबाजी में भी कमाल दिखाते हुए 20 रन देकर तीन विकेट चटकाए। कैप ने सलामी बल्लेबाज ओमैमा सोहेल (06), सिदरा अमीन (13) और आलिया रियाज (03) को पवेलियन भेजा।

- डकवर्थ-लुईस पद्धति के तहत 150 रनों से हराया

दक्षिण अफ्रीका की मरीजान काप ने शुरुआत में तीन विकेट लेकर पाकिस्तान लय बिगाड़ दी। एजेंसी

एशिया कप ट्रॉफी प्रकरण | एशियाई क्रिकेट परिषद के पाकिस्तानी प्रमुख मोहसिन नकवी मानने को तैयार नहीं

बीसीसीआई को श्रीलंका और अफगानिस्तान का समर्थन

नई दिल्ली, एजेंसी

एशिया कप ट्रॉफी को लेकर गतिरोध बना हुआ है और बीसीसीआई को श्रीलंका तथा अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड का समर्थन मिलने के बावजूद एशिया क्रिकेट परिषद के पाकिस्तानी प्रमुख मोहसिन नकवी मानने को तैयार नहीं हैं।

ट्रॉफी अभी तक चैंपियन भारतीय टीम को मिली नहीं है। एसीसी के एक शीर्ष सूत्र ने पीटीआई को बताया कि नकवी ने कहा है कि बीसीसीआई का कोई प्रतिनिधि दुबई में एसीसी मुख्यालय से ट्रॉफी उनसे ले सकता है लेकिन भारतीय बोर्ड ने इससे इनकार किया। बीसीसीआई अगले महीने आईसीसी की बैठक में यह मसला उठायेगा।

एसीसी सूत्र ने कहा बीसीसीआई सचिव देवाजीत सैकिया, एसीसी में बीसीसीआई के प्रतिनिधि राजीव शुक्ला और श्रीलंका तथा अफगानिस्तान समेत अन्य सदस्य बोर्ड के प्रतिनिधियों ने पिछले सप्ताह एसीसी को पत्र लिखकर ट्रॉफी भारत को देने के लिये कहा। उन्होंने कहा लेकिन उनका जवाब था कि बीसीसीआई से किसी को दुबई आकर उनसे ट्रॉफी लेनी होगी। इसलिये मामले में गतिरोध बना हुआ है बीसीसीआई ने साफ तौर पर कहा है कि वह नकवी से ट्रॉफी नहीं लेंगे। अब इस पर फैसला आईसीसी की बैठक में होगा। आईसीसी के प्रमुख बीसीसीआई के पूर्व सचिव जय शाह हैं। ट्रॉफी एसीसी मुख्यालय पर है चूंकि भारतीय टीम ने 28 सितंबर को एशिया कप फाइनल के बाद इसे नकवी से लेने से इनकार कर दिया था जिसके बाद वह ट्रॉफी लेकर चले गए। नकवी पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के प्रमुख और अपने देश के गृहमंत्री भी हैं और भारत विरोधी रवैये के लिये जाने जाते हैं।

नकवी ने बीसीसीआई के पत्र का दिया जवाब

नकवी ने कहा-उन्हें पहले बताया नहीं गया था कि भारतीय खिलाड़ी उनसे ट्रॉफी लेने का बहिष्कार करने वाले हैं। पत्र में कहा गया जब समारोह होने वाला था और मंच पर सभी अतिथि पहुंच गए थे, तब बीसीसीआई के प्रतिनिधि ने बताया कि भारतीय टीम एशिया कप ट्रॉफी और पुरस्कार नहीं लेगी। इसमें कहा गया एसीसी अध्यक्ष ने तमाम अतिथियों के साथ करीब 40 मिनट तक इंतजार किया ताकि पुरस्कार वितरण समारोह की गरिमा बनी रहे और इस पर राजनीति का प्रभाव नहीं पड़े, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। पत्र में कहा गया एसीसी ट्रॉफी भारतीय क्रिकेट टीम की है और इसे तब तक यहां रखा जाएगा जब तक कि बीसीसीआई का कोई पदाधिकारी किसी भी उपलब्ध प्रतिभागी खिलाड़ी के साथ एसीसी अध्यक्ष से इसे प्राप्त नहीं कर लेता। इसमे आगे कहा गयाइस तरह से ट्रॉफी लेने को निश्चित रूप से बहुत धूमधाम और कवरेज के साथ किया जाएगा क्योंकि स्थापित प्रथाओं से अलग कुछ नहीं होना चाहिए और कोई मिसाल नहीं कायम की जानी चाहिए जो उस खेल की भावना को कमजोर करे जिसे हम सभी प्यार करते हैं। पहलगाम आतंकवादी हमले के पीड़ितों के प्रति एकजुटता दिखाते हुए भारतीय टीम ने पाकिस्तानी खिलाड़ियों से हाथ नहीं मिलाया था।

बादशाहत के लिए भिड़ेंगे ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड

इंदौर : गत चैंपियन ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड पहले ही महिला वनडे विश्व कप के सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर चुके हैं और ऐसे में बुधवार को यहां जब यह दोनों टीम शीर्ष स्थान के लिए होने वाले मुकाबले में आमने सामने होंगी तो उनका लक्ष्य एक दूसरे पर अपनी बादशाहत साबित करना और अपनी जीत की लय बरकरार रखना होगा।

दोनों टीमें अब तक अजेय रही हैं। इन दोनों टीम ने अभी तक चार मैच जीते हैं जबकि दोनों का एक-एक मैच बारिश की भेंट चढ़ गया था, पर ऑस्ट्रेलिया इंग्लैंड के 1.490 की तुलना में 1.818 के बेहतर नेट रन रेट के कारण शीर्ष पर है।

भारत और न्यूजीलैंड सेमीफाइनल के लिए अंतिम स्थान की दौड़ में

बेंगलुरु, एजेंसी :

ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका ने आईसीसी महिला विश्व कप 2025 के सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली है, और चौथे और अंतिम स्थान के लिए दौड़ अब भारत और न्यूजीलैंड के बीच सिमट गई है, क्योंकि दोनों टीमों के दो-दो लीग मैच बाकी हैं। ऑस्ट्रेलिया महिला टीम (9 अंक, नेट रन रेट 1.818), इंग्लैंड महिला टीम (9 अंक, नेट रन रेट 1.490) और दक्षिण अफ्रीका महिला टीम (8 अंक, नेट रन रेट -0.440) पहले ही नॉकआउट चरण में अपनी जगह पक्की कर चुके हैं। भारत, जो 4 अंकों और 0.526 के अच्छे नेट रन रेट के साथ तालिका में चौथे स्थान पर है, 23 अक्टूबर को न्यूजीलैंड और 26 अक्टूबर को बंगलादेश के खिलाफ अपने बाकी बचे मैच जीतने पर ही सेमीफाइनल में जगह बनाने की दौड़ में बना रहेगा। दो जीत से भारत के 8 अंक हो जायेंगे, जिससे सेमीफाइनल में उसकी जगह पक्की हो जाएगी। न्यूज़ीलैंड, जिसके भी 4 अंक हैं, लेकिन नेट रन रेट (-0.245) कम है, के लिए राह और भी कठिन है। उसे टूर्नामेंट में बने रहने के लिए भारत और इंग्लैंड दोनों को हराना होगा, और उसका क्वालीफिकेशन नेट रन रेट पर भी निर्भर हो सकता है। श्रीलंका कम नेट रन रेट के कारण लगभग बाहर हो चुकी है।